ॐ नमः शिवाय

अथ

शिव सपर्या सरणिः

अथवा

श्री विश्वनाथ उपासनाविधिः

(नानाविषयोपलंकृता च)

संकलनकर्त्ता

पं० श्री देवनारायण गौड़ 'दैवज्ञ'

३६/१६४, गयाप्रसाद लेन, चौक

कानपुर-२०८००१

संशोधक

पं० जागेश्वर प्रसाद गौड़

१५/१४०, सरसैय्याघाट

कानपुर

प्रकाशक

श्री प्रदोष मंडल

दैवज्ञ-मन्दिर, कानपुर-२०८००१

फोन नं० : ३१६१९२

॥ सामग्री रुद्राभिषेक की ॥

रोली
मोली (कलावा)
२५ पान
२५ सुपारी
लौंग, इलायची
धूपबत्ती
घी, रुई, दियासलाई
१ कलश ताँबे का
१ कटोरी ताँबे की
२ नारियल
१ गज लाल कपड़ा
१ गज सफेद कपड़ा
२ धोती
२ अँगोछे
१० जनेऊ
पुष्प, तुलसी, दूर्वा, धतूरा
आम के पत्ते, अर्क पुष्प (मदार के फूल)
शमीपत्र, बिल्वपत्र
बिल्व फल २, पुष्पमाला
कमल के फूल, कमलगट्टे
चंदन
केशर, कपूर
आधा किलो चावल
१० ग्राम तिल
१० ग्राम जौ
अबीर गुलाल
सिन्दूर
इत्र
गुलाब जल अथवा केवड़ा जल
गन्ने का रस
१ साड़ी, ब्लाउज जनानी
१ सुहाग पिटारी
पार्वती जी के आभूषण आदि
१। सेर दूध
१०० ग्राम दही
शक्कर, शहद
१० मिट्टी के प्याले (सकोरे)
भस्म, भाँग
रुद्राक्ष की माला
१। सेर मिठाई
ऋतु फल
सहस्रार्चन का सामान
(फल, पुष्प, बिल्वपत्र, मेवा, नकद सिक्के आदि कुछ भी हो सकता है।)
आसन बैठने के लिए
ब्राह्मण वरण की सामग्री
ब्राह्मण वरण के वस्त्र आदि

नोट : पार्थिवेश्वर पर अभिषेक करने के लिए मृत्तिका, २ पट्टे, १ चौकी, बाल्टी, लोटा, परात और जल की आवश्यकता होती है।

विषय-सूची

प्रस्तावना

ब्रह्म की सत्ता में विश्वास सनातनधर्म का मूल आधार है। हिन्दूधर्म के समस्त शास्त्र इसी आधार भूमि पर आधृत हैं। इस विश्वमें और मानव-जीवन में ऐसा कुछ भी नहीं जो ईश्वर की सत्ता, उसकी विभूति और उसके आनन्द से व्याप्त न हो। यद्यपि इसे आँखों से देखा नहीं जा सकता, किन्तु तपस्या से मन को पवित्र कर विमल बुद्धि से वह अवश्य देखा जा सकता है। इसी अद्वितीयसत्ता को 'ब्रह्म' कहा गया है। यही परमात्मा का अद्वैत तत्त्व है। यह अद्वैत तत्त्व विश्वगत व्यवहार के लिए तीन रूपों, में प्रकट हो रहा है। पुराणानुसार इन्हें 'त्रिदेव' और दर्शन की भाषा में सत्त्व, रज, तम तीन गुण कहते हैं। सृष्टि-सृजन-पालन और संहार की शक्ति रूप में ये हैं ब्रह्म-विष्णु और महेश । वेद इन्हें अव्यक्त अक्षर और क्षरपुरुष कहते हैं। यह त्रिकवाद सनातनधर्म और भारतीयतत्त्वज्ञान की दृढ़ नींव है। इस मान्यता से ही समस्त देवी-देवताओं का विकास हुआ है।

'एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति' 'यो देवानाम् नामधा एक एव'

आदि वचनों से यह ही प्रतिपादित किया गया है कि मूलभूत एक देव है। इसी तथ्य की और अधिक पुष्टि इन वाक्यों से होती है। यथा :

यं वैदिकाः मंत्रदृशाः पुराणाः इन्द्रं यमं मातरिश्वान्माहुः।।
वेदान्तिनोऽनिर्वचनीयमेकं यं ब्रह्मशब्देन विनिर्दिशन्ति।।

यह अद्वितीय प्रभु आकाश में महान भास्कर ज्योतिरूप सूर्य है, वह भगवान् का ज्योतिर्लिङ्ग रूप है। 'ब्रह्मसूर्यसमं ज्योतिः'। जिसे हम नन्दी कहते हैं वह आनन्द का प्रतीक है। नन्दी और आनन्द पर्याय हैं। आनन्द ब्रह्म का ही स्वरूप है। सब प्राणियों का काम्य और जीवनाधार है।

आनन्द का ही प्रभावशाली रूप काम है। काम ही वृष संज्ञक है। रेत वर्षण द्वारा प्रजा का उत्पादन एवं आनन्द की अनुभूति होती है। इसी वृष धर्म से सृष्टि की सत्ता है। वेद में सूर्य को वृष कहा गया है क्योंकि वह द्युलोक से अपनी रश्मियों का विकिरण करके प्रतिक्षण पृथ्वी को गर्भित करता रहता है। भगवान् शिव त्र्यम्बक हैं। तीन नेत्र या तीन मातायें हैं जिसकी। सूर्य-चन्द्र-अग्नि—परमेश्वर के तीन नेत्र माने गये हैं। पृथ्वी, अन्तरिक्ष, द्यौः, मन, प्राण, वाक् यही तीन मातायें हैं। जिनसे प्राण रूपी अग्नि का जन्म होता है। यह जो द्यावा-पृथिवी रूप विश्व है उसमें द्यौ लोक पिता और माता पृथिवी हैं। यही रोदसी ब्रह्माण्ड है। यह प्रत्येक प्राणी के केन्द्र में भी है और बाहर भी। यही रुद्र की सृष्टि है। इसकी विशेषता है द्वन्द्वज। इसलिए शिव अर्द्धनारीश्वर भी हैं।

ॐ नमः शिवाय

शिवोपासना

''जगतः पितरौवन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ''

शिव शब्द स्वयं कल्याणवाचक है। यह शिवशक्ति दोनों का उद्बोधक भी है। शिव उच्चारण मात्र से विश्व के उत्पादक-पालक एवं संहारक प्रकृतिपुरुषात्मक ब्रह्म का स्मरण हो जाता है। उनकी महिमा जानने के लिए प्रजापति ब्रह्मा एवं भगवान् विष्णु दोनों देवता ऊर्ध्वलोक एवं अधोलोक में गये तो उन्हें वहाँ ऊर्ध्वलोक से भी ऊपर शून्य का भेदन करते हुए लिङ्ग स्वरूप के दर्शन हुए साथ ही अधोलोक में जाने पर भी उसी शिवलिङ्ग के अनन्त स्वरूप के दर्शन हुए। वे दोनों शक्ति सत्ता सम्पन्न देवता भी उनका अंत न पा सके। अन्ततोगत्वा उसे अनन्त मान कर उसके सामने नतमस्तक हो गये। फिर हम संसारी जीवों की गति ही क्या हो सकती है।

'चकितमपिधत्ते श्रुतिरपि'

भगवान् शिव तो विश्वरूप हैं। उनका न कोई स्वरूप है न कोई चिह्न है। ऐसी अवस्था में उनका पूजन कहाँ और कैसे किया जाये? क्योंकि पृथ्वी-जल-वायु-तेज-आकाश-सूर्य-चन्द्रमा-आत्मा आदि सभी में शिवतत्त्व विद्यमान है। चिन्तन करने पर यह समझ में आता है कि सभी में एक गोलाकृति का गुण समान रूप से विद्यमान है। अतएव उसी आकृति को चिह्न मान कर उसे शिवलिंग कह कर उसकी उपासना आरंभ हो गयी। क्योंकि शिव ने सर्वप्रथम ब्रह्मा और विष्णु दोनों को इसी रूप में दर्शन कराया था। इसलिए संसार में लिङ्गोपासना सर्वोपरि है। लिङ्गोपासना के अनेकानेक भेद हैं। प्रत्येक पुराण में लिङ्गोपासना के विविध-विधान बताये हैं। चारों वेदों में यजुर्वेद यजन का प्रतीक है। इसी से प्रायः सभी वैदिक उपासनाएँ-सम्पन्न होती हैं। इस पुस्तक में वैदिक-विधान से शिवोपासना की विधि का सरल एवं सुगम रीति से प्रस्तुतीकरण किया गया है। वैदिक-विधान में प्रायः रुद्राष्टाध्यायी का ही प्रयोग प्रचलित है। इसका पाठ कई प्रकार से करते हुए भक्तजन शिवोपासना करते हैं। वे अवघड़ दानी महेश्वर एक ॐ के उच्चारण मात्र से ही प्रसन्न हो जाते हैं फिर वेद स्तुति करने वालों को क्या फल देंगे? सम्पूर्ण रुद्राष्टाध्यायी का एक आवृत्ति पाठ और अभिषेक करना—'रुद्राभिषेक' कहलाता है। इसी का नमकचमकात्मक प्रयोग रुद्राभिषेक कहलाता है। इसके संकेत अष्टम अध्याय में लगे हुए हैं। इसके एक अभिषेक को एक 'रुद्र' कहते हैं। ११ रुद्रों का एक लघुरुद्र होता है। ११ लघुरुद्रों का एक महारुद्र होता है। ११ महारुद्रों का एक

अतिरुद्र होता है। इसके साथ-साथ शतरुद्री से पूजन अभिषेकादि का शिवपुराण में बड़ा एवं कई बार अत्युत्तम माहात्म्य बताया गया है। इसमें भी मंत्रों का प्रयोग रुद्राष्टाध्यायी से ही किया गया है। कुल मन्त्र बाहर से लिये गये हैं। शतरुद्री सम्बन्धी वाक्य इस प्रकार मिलते हैं :

षष्ठुषष्ठि नीलसूक्तं च पुनर्षोडशमेव च ।।
एषते द्वे नमस्ते द्वे नतं विद् द्वयमेव च ।।
मीढुष्टमेति चत्वारि वय ँ चाष्टमेव च ।।
शतरुद्री समाख्याता सर्वपातकनाशिनी ।।

यों शतरुद्री का प्रयोग श्रेष्ठ होने पर भी रुद्राभिषेक में रुद्री का नमकचमकात्मक प्रयोग विशेषरूप से प्रचलित है। इसमें रुद्राष्टाध्यायी का पहले ७ अध्याय तक पाठ करके अष्टम अध्याय में क्रमशः ४, ४, ४, ३, ३, ३, २, १, १, २ मंत्रों पर विराम करते हुए पंचम अध्याय अर्थात् नीलसूक्त के ११ पाठ होते हैं। इस प्रकार एक रुद्राभिषेक करने से बालग्रह की शान्ति होती है। ३ रुद्रों से उपद्रव की शान्ति होती है। ५ से ग्रह-शान्ति होती है। ७ से भय निवारण होता है। ९ से शान्ति एवं वाजपेय फल की प्राप्ति होती है। ११ से राजा का वशीकरण होता है। १ लघु रुद्र से कामनापूर्ति, ३ लघुरुद्रों से शत्रुभय नाश, ५ लघुरुद्रों से शत्रु और स्त्री का वशीकरण, ७ से सुखप्राप्ति, ९ से कुलवृद्धि एवं समृद्धि की प्राप्ति होती है। १ महारुद्र से राजभय का निराकरण, शत्रु का उच्चाटन, दीर्घायु, यश-कीर्ति-चतुर्वर्ग प्राप्ति होती है। ३ महारुद्रों से दुष्कर कार्य भी सुख-साध्य हो जाता है। ५ महारुद्रों से राज्य-प्राप्ति के साधन होते हैं। ७ महारुद्रों से सप्तलोक साधन होता है। ९ महारुद्रों से मोक्षपद के मार्ग प्राप्त होते हैं। १ अतिरुद्र से देवत्त्व की प्राप्ति होती है। डाकिनी-शाकिनी-अभिचारभयादि का निवारण होता है। ३ अतिरुद्रों से संस्कारज भूतादि बाधायें दूर होती हैं। ५ अतिरुद्रों से ग्रहजन्य फल एवं व्याधि शान्त होती हैं। ७ अतिरुद्रों से कर्मज व्याधियाँ शान्त होती हैं। ९ अतिरुद्रों से सर्वार्थसिद्धि एवं ११ से असाध्य का भी साध्य साधन होता है।

शिवजी को अनन्त मानने से उनका पूजन विभिन्न वस्तुओं एवं नाना प्रकार के लिङ्गों पर भी होता है। चांदी के लिङ्ग पूजन करने से पितरों की मुक्ति होती है। स्वर्णलिङ्ग से वैभव एवं सत्यलोक की प्राप्ति होती है। ताम्र एवं पीतल के लिङ्ग से पुष्टि एवं कांस्यलिङ्ग से सुन्दर यश की प्राप्ति, लौहलिङ्ग से मारण सिद्धि होती है। स्तंभन के लिये हल्दी का लिङ्ग, आयु-आरोग्यता के लिये शीशे के लिङ्ग का पूजन शुभफलदायी होता है। रत्नलिङ्ग श्रीप्रद होता है। गोमय से निर्मित लिंग का स्वयं पूजन करने से अतुल ऐश्वर्य प्राप्त होता है, किन्तु दूसरे के लिए करने पर मारक होता है। इसी प्रकार से और भी अनेकानेक प्रकार के लिङ्गों का वर्णन मिलता है यथा गंधमय लिङ्ग, अन्नमय लिङ्ग, कस्तूरी-गोरोचन आदि के लिङ्गों का वर्णन भी मिलता है। इनका अर्चन विभिन्न कामनाओं के लिए किया जाता है। इस पर

भी पार्थिवेश्वर का पूजन सर्वोपरि एवं सुगम बताया गया है। इससे चतुर्वर्ग की प्रा
होती है। इसका विधान पुस्तक में दिया गया है।

शिवजी पर विभिन्न पदार्थोंसे धारा चढ़ाने से भी विभिन्न कामनायें सिद्ध हो
हैं। जैसे जलधारा से वृष्टि होती है। कुशोदक से व्याधि शान्ति होती है। दही
धारा से संतान एवं पशुवृद्धि होती है। इक्षुरस से लक्ष्मी प्राप्ति, मधु की धारा
कोष की प्राप्ति। घृत की धारा से ऐश्वर्य प्राप्ति होती है। केवल दूध की धारा
संतान प्राप्ति तथा तीर्थजलाभिषेक से मोक्ष की प्राप्ति होती है।

इस पुस्तक में दैवज्ञ पं० देवनारायणजी गौड़ ने जो विधान लिखा है
अत्यन्त सरल एवं सर्वगम्य है। आधुनिक देशकालादि परिस्थितियों के अनुसार इस
सरल हिन्दी में किये गये निर्देश अति उपयोगी सिद्ध होंगे। इससे शिववास-ज्ञा
पंचवक्त्र-पूजन, महामृत्युंजय जप-विधान, शिवसहस्रनामावलि आदि विविध विष
पण्डितवर्ग के लिये भी उपयोगी सिद्ध होंगे। यह संकलन सर्वथा प्रशंसनीय है।
पर आशुतोष भगवान शंकर जी कृपा करें कि भविष्य में और भी प्रकाशन सम्प
हो।

शुभेच्छु

ज्योतिर्विद् पं० रामकुमार गौड़

चतुर्भुज गली, नयागंज, कानपुर

॥ ॐ ॥

उपासना के आदि में शिववास ज्ञान

भगवान् शंकर एवं जगज्जननी का विवाह होने के बाद वे हिमांचल के यहाँ से विदा होकर कैलाश पर्वत पर पहुँचे। हिमाच्छादित पर्वतशृंगों की शोभा देखकर शिव-पार्वती आनंदित हो उठे। एकान्त की इच्छा से उन्होंने सारे ऊपरी पर्वतप्रदेश को खाली करने का आदेश कर दिया। सभी पर्वतवासी गणों को नीचे जाकर निवास करने को कहा। उसके बाद वे दोनों क्रीड़ारत हो गये। शिव-शिवा की अनन्त क्रीड़ा का आज तक अन्त किसने पाया है? दीर्घकाल तक-तारकासुर से पीड़ित देवता कुमारजन्म की कल्पना करते-करते अधीर हो उठे। सर्व सम्मति से अग्नि भगवान् से क्रीड़ागृह के भीतर की व्यवस्था जानने की प्रार्थना की। कामदहन के चरित्र को जानते हुए भी अग्निदेव भीतर जाने के लिए तैयार हो गये। क्योंकि संसार में परोपकार के समान दूसरा धर्म नहीं है। उस समय वे एक लोटन कबूतर का रूप धारण करके वहाँ जाने का विचार कर ही रहे थे कि उन्हें वीणा के स्वरों से मिश्रित नारद का गान सुनाई पड़ा। उतनी ही देर में वहाँ नारदजी आ गये। नारदजी ज्योतिषशास्त्र के प्रणेता आचार्यों में होने से भूत-भविष्य और वर्तमान तीनों कालों का ज्ञान रखते हैं। उन्हें देखकर देवताओं ने उनसे शिव-पार्वती की अवस्था के बारे में तथा अग्निदेव की यात्रा के सम्बन्ध में प्रश्न किया। उस समय उन्होंने इसी गणित के द्वारा उत्तर दिया कि इस समय शिव क्रीड़ा में हैं तथा इस समय उनके पास जाने वाले को कष्ट-पराजय, हानि आदि फल प्राप्त होंगे। आगे हुआ भी यही कि अग्निदेव उनके तेज को न सह सके और उस तेज को गंगाजी की धारा में छोड़ना पड़ा। उसी तेज से कुमार का जन्म हुआ। यहाँ वही नारद प्रणीत शिववास का गणित दे रहे हैं। इससे शिवभक्तों को विशेष रूप से शिवकृपा हो। शिवार्चन सम्बन्धी सभी अनुष्ठानों में इसका ज्ञान अत्यावश्यक है। अन्यथा साधक को शिववास के अनुरूप ही फल की प्राप्ति होती है। इसके साथ-साथ अन्य प्रकार की साधनायें आरंभ करने वालों की सुविधा एवं मनोवांछित फल-प्राप्ति हेतु 'प्रयोगादि आरंभ चक्र' भी दिया है।

शिववास कारिका

तिथिं च द्विगुणीं कृत्य बाणैः संयोजयेत्तदा॥
सप्तभिश्च हरेत्भागं शिववासं समुद्दिशेत्॥
एकेन वासः कैलासे द्वितीये गौरिसंन्निधौ॥
तृतीये वृषभारूढः सभायां च चतुष्टये॥
पंचमें भोजनेचैव क्रीड़ायां षण्मिते तथा॥

श्मशाने सप्तशेषे च शिववास इतीरितः।।
कैलासे लभते सौख्यं गौर्यां च सुखसम्पदा।।
वृषभेऽभीष्टसिद्धिः स्यात् सभा संतापकारिणी।।
भोजने च भवेत् पीड़ा क्रीडायां कष्टमेव च।।
श्मशाने मरणं ज्ञेयं फलमेव विचारयेत्।।

शुक्रपक्ष की प्रतिपदा से वर्तमान तिथि की संख्या को दुगना कर दे। यदि कृष्णपक्ष की तिथि हो तो उसमें १५ और जोड़ने के बाद दुगना करें। उस संख्या में ५ और जोड़कर ७ का भाग दे। शेष वाले अंक के अनुसार शिववासका ज्ञान प्राप्त करें।

१. भगवान् शंकर प्रसन्न मुद्रा में कैलाश पर्वत पर बैठे हैं तथा उस समय जो उनकी उपासना करते हैं उसे वे सम्पूर्ण सौख्य आदि प्रदान करते हैं। इस शिववास से भोग-मोक्ष दोनों की प्राप्ति होती है। यह शिववास शुभ है।

२. माँ गौरी के समीप बैठे हैं। माता पार्वती जगत् के दीन-हीन पुत्रों के दु:खों की चर्चा कर रही हैं। यह सुनकर उनका चित्त् करुणार्द्र हो रहा है। ऐसे समय में पूजन करने से अतुल सम्पत्ति शालीनता आदि की कृपा सहज में कर देते हैं। यह भी शुभ है।

३. भगवान् शंकर वृषभ की सवारी पर बैठे आनंदित हो रहे हैं। यत्र-तत्र-सर्वत्र भ्रमण करते हुए याचना करने वालों की समस्त कामनाओं की पूर्ति करते हैं। यह भी शुभ है।

४. इस समय शिवजी सभा में बैठे हैं तथा विविध विषयों पर सभासदों के साथ विचार विमर्श कर रहे हैं। ऐसी अवस्था में संतापदंायक होते हैं। यह शिववास अशुभ है।

५. इस समय भगवान् शंकर भोजन करते रहते हैं। भोजन में विघ्न होने से रुष्ट होते हैं। पूजन करने वाले को पीड़ा देते हैं। उस समय जो दुनिया के पाप दोष खा रहे होते हैं वे कि प्रसादरूप से दे देते हैं। यह शिववास अशुभ है।

६. इस समय शिव क्रीड़ारत हैं। इस समय विघ्न करने से पीड़ा, पराजय, हानि आदि फल प्राप्त होते हैं। यह शिववास भी अशुभ है।

७. इस समय भूतभावन श्मशान में वास कर रहे हैं। उस समय वे विनाशक शक्तियों से घिरे होते हैं। ऐसे समय जो उनके पास जाता है उसे वे मृत्युदायक होते हैं। यह शिववास भी अशुभ है।

इस प्रकार का ज्ञान करने के बाद जो शिवपूजन आरंभ किया जाता है वह शुभ फलदायक होता है। शिवार्चन में यह अत्यावश्यक अंग है।

कृष्णपक्ष में १-४-५-८, ११-१२-३० तथा शुक्लपक्ष में २-५ ६, ९, १२, १३ को इसके अनुसार शिववास बनता है।

किसी भी अन्य अनुष्ठानादि का आरंभ इस मुहूर्त से करने से वह शीघ्र औ अनुकूल फलदायक होता है। सुविधा के लिये यहाँ एक प्रयोगादि आरंभ चक्र भी दे रहे हैं। इनकी गणना सूर्य के नक्षत्र से वर्तमान नक्षत्र (चन्द्र) तक गिनकर फल जाने।

।। अथ प्रयोगादि आरंभ चक्रम् ।।

नक्षत्र	सूर्य के नक्षत्र से फल	संख्या
३	हानि	३
३	सिद्धि	६
३	मृत्यु	९
४	शत्रुभय	१३
४	कामनापूर्ति	१७
३	हानि	२०
३	कामना पूर्ति	२३
४	धनलाभ	२७

ॐ नमः शिवायः

ॐ

।। श्री गणेशाय नमः ।।

शिव सपर्या सरणि
एवं
विश्वनाथ उपासना-विधिः

।। ॐ नमः शिवाय ।।

विनायकं गुरुं भानुं ब्रह्मविष्णुमहेश्वरान् ।।
सरस्वतीं प्रणम्यादौ सर्वकार्यार्थ सिद्धये ।।१।।
भवानीशंकरौ वन्दे श्रद्धाविश्वास रूपिणौ
याभ्यां बिना न पश्यन्ति सिद्धाःस्वान्तस्थमीश्वरम् ।।२।।
विश्वेशं माधवं ढुण्ढिं दण्डपाणिं च भैरवम् ।
वन्दे काशी गुहां गंगा भवानीं मणिकर्णिकाम् ।।३।।

पूजन विधिः

भगवान् आशुतोष देवाधिदेव महादेवजी का पूजन समस्त चराचर सृष्टि के लिये परम कल्याण करने वाला होता है । इससे पुरुषार्थचतुष्टय की प्राप्ति होती है । आदिकाल से ही संसार में शिवोपासना के दो रूप चले आ रहे हैं । पहला रूप निराकार उपासना तथा दूसरा रूप साकार उपासना का है । यह दोनों विधियाँ एक ही तत्त्व की भिन्न-भिन्न उपासना विधियाँ हैं । निराकार उपासना लिङ्गपूजा तथा साकार उपासना विग्रह पूजा है । लिङ्गोपासना सर्वत्र प्रचलित है, विग्रहोपासना का भी अपना अलग स्थान है । इसमें भी आगे जाकर दो रूप हो जाते हैं । पहला वैदिक तथा दूसरा तांत्रिक है । इस पुस्तक

में वैदिक उपासना की सामान्य रूप से प्रचलित विधि का संकल
किया है । जिससे श्रद्धालु शिवोपासकों को पूजन करने में सरलत
एवं सुगमता हो तथा अवघड़ दानी भगवान् शंकर की भक्ति एवं कृप
उन्हें दोनों ही प्राप्त हो ।

आरंभ में 'देवो भूत्वा देवं यजेत्' के अनुसार साधक शौच-
स्नान-संध्योपासन आदि नित्यकर्मों से निवृत्त होकर मन-वाणी-बुद्धि
का संयम करके पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुख करके सुखासन
पर बैठे । इसके बाद सदा-शिव का ऐसा ध्यान करे कि, वे शिव
मेरे शरीर के भीतर और बाहर सर्वत्र व्याप्त हैं । मैं उनकी शरण
में जा रहा हूँ और वे अपनी कृपादृष्टि से मुझे कृतार्थ कर रहे हैं ।
इसके बाद शिखा बांधे तथा अनामिका अंगुली में सोना, चाँदी, ताबां,
पीतल, कांसा-कुशा आदि की पवित्री धारण करें और आगे लिखा
मंत्र पाठ करे ।

ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसवऽउत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः । तस्य ते पवित्रपते पवित्र पूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम् ॥

इसके बाद तीन आचमन करे —

'ॐ नारायणायनमः' 'ॐ केशवायनमः' 'ॐ माधवायनमः'

'ॐ हृषीकेशायनमः कह कर अंगुष्ठ मूल से ओठ पोंछे, इसके
बाद अपने ऊपर जल छिड़के :—

**ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थांगतोऽपि वा ॥
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तर शुचिः ॥**

इसके बाद हाथ में जल लेकर विनियोग छोड़े :—

ॐ पृथ्वीति मंत्रस्य मेरुपृष्ठऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मोदेवता आसने विनियोगः ।

फिर आगे लिखा मंत्र पढ़कर आसन पर जल छिड़के—

ॐ पृथ्वी त्वया धृता लोकाः देवि त्वं विष्णुनाधृता ॥
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरुचासनम् ॥

इसके बाद मस्तक पर भस्म का त्रिपुण्ड लगावे । बायें हाथ में भस्म रख कर जल से गीली करके बोले—

ॐ अग्निरिति भस्म, ॐ वायुरिति भस्म, ॐ जलमिति भस्म । ॐ स्थलमिति भस्म । ॐ व्योमिति भस्म । ॐ सर्व हवा इदं भस्म ।

इसके बाद भस्म मस्तक पर लगावे :—

ॐ त्र्यायुषं जमदग्ने	ललाट पर
ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषं	ग्रीवा पर
ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषम्	हृदय पर
ॐ तन्नोऽअस्तु त्र्यायुषम्	भुजाओं पर

इसके बाद रुद्राक्ष धारण करे । रुद्राक्ष की माला का पंचोपचार पूजन करके नीचे लिखे मंत्र से धारण करे ।

ॐ शिवोनामासि स्वधितिस्ते पिता-नमस्तेऽअस्तु मामाहिꣳ सीः । निर्वर्तय्या-म्यायुषेन्नाद्याय प्प्रजननाय रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्य्याय ॥

इसके बाद प्राणायाम तथा विष्णु भगवान् का स्मरण करे ।

ॐ शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशम् ॥
विश्वाधारं गगन सदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम् ॥
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यम् ॥
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ॥

इसके बाद बायें हाथ में चावल लेकर दाहिने हाथ से चारों तरफ छोड़े तथा कहे :—

ॐ अपःसर्पन्तु ते भूताः ये भूता भूमि संस्थिता।
ये भूता विघ्नकर्तारः ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥
अपक्रामन्तु भूतानां पिशाचाः सर्वतो दिशः।
सर्वेषामविरोधेन शान्तिकं तु करोम्यहम् ॥

इसके बाद हाथ में पुष्पाक्षत लेकर आनोभद्रा आदि शान्तिपाठ अथवा स्वस्तिन इन्द्रो आदि मंत्रों से स्वस्तिवाचन करे—

शान्तिपाठः

ॐ आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासोऽअपरीतासऽउद्भिदः ॥ देवा नो यथा सदमिद्वृधे असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवेदिवे ॥१॥ देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवाना ँ रातिरभिनो निवर्त्तताम् ॥ देवाना ँ सख्यमुपसेदिमा व्वयं देवा न आयुः प्रतिरन्तु

जीवसे ॥२॥ तान् पूर्व्वया निविदा हूमहे व्वयं भगं मित्रमदितिं दक्षमस्त्रिधम् ॥ अर्य्यमणं व्वरुण ꣳ सोममश्विना सरस्वती न ꣳ सुभगा मयस्करत् ॥३॥ तन्नो व्वातो मयोभुव्वातु भेषजं तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौ ꣳ ॥ तद्ग्रावाण ꣳ सोमसुतो मयो भुवस्तदश्विना शृणुतं धिष्ण्या युवम् ॥४॥ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं-धियं जिन्वमवसे हूमहे व्वयम् ॥ पूषानो यथाव्वेद सामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्ध ꣳ स्वस्तये ॥५॥ स्वस्ति नऽइन्द्रो व्वृद्धश्रवा ꣳ स्वस्ति न ꣳ पूषाव्विश्ववेदा ꣳ ॥ स्वस्ति नस्ताक्ष्योऽअरिष्टनेमि ꣳ स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥६॥ पृषदश्वा मरुत ꣳ पृश्निमातर ꣳ शुभंय्यावानो व्विदथेषु जग्मय ꣳ

अग्निर्जिह्वा मनव÷ सूरचक्षसो विश्वे नो देवाऽअवसा गमन्निह ॥७॥ भद्रं कर्णेभि ः शृणुयाम देवा÷ भद्रं पश्ये माक्षभिर्यजत्रा ः ॥ स्थिरै रङ्गैस्तुष्टुवा ꣬ संस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायु÷ ॥८॥ शतमिन्नु शरदोऽअन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसन्तनूनाम् पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मानो मद्ध्या रीरिषतायुर्गन्तो ः ॥९॥ अदितिर्द्यौ रदिति रन्तरिक्षमदि तिर्म्माता सपिता सपुत्र ? ॥ विश्वेदेवाऽअदिति ः पंचजनाऽअदिति ज्र्जातमदितिर्ज्ज-नित्वम् ॥१०॥ द्यौ ? शान्तिरन्तरिक्ष ꣬ शान्ति÷ पृथिवी शान्ति राप ः शान्ति-रोषधय÷ शान्ति÷ । वनस्पतय ः शान्तिर्विश्वेदेवा ? शान्तिर्ब्रह्म शान्ति ः सर्व ꣬ शान्ति ? शान्तिरेव शान्ति ?

सामा शान्तिरेधि ॥१२॥ यतो यत ᳬ समीहसे ततो नोऽअभयङ्कुरु ॥ शन्नः कुरु प्रजाभ्योऽभयन्न᳘ पशुभ्यः ॥१३॥

स्वस्तिवाचन

ओ३म् स्वस्तिनऽइन्द्रो वृद्धश्रवा ᳬ स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदा ᳬ स्वस्ति नस्ताक्ष्यर्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥१॥ ओ३म् पयः पृथिव्यां पयऽओषधीषुपयो दिव्यन्तरिक्षेपयोधाᳬ पयस्वतीᳬप्रदिशः सन्तु मह्यम् ॥२॥ ओ३म् विष्णो रराटमसि विष्णो ᳬ श्नप्त्रेस्थो विष्णो ᳬ स्यूरसिविष्णोर्ध्रुवोऽसि । वैष्णवमसि विष्णवेत्वा ॥३॥ ओ३म् अग्निर्देवता व्वातोदेवता सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता व्वसवोदेवता रुद्रा देवता दित्या देवता मरुतो देवता विश्वेदेवा-

देवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता वरुणो देवता ॥४॥ ॐ द्यौ ? शान्तिरन्तरिक्ष ᳪ शान्तिः पृथिवी शान्तिराप ? शान्तिरोषधय ? शान्तिः । वनस्पतय ? शान्तिर्विश्वेदेवा ? शान्तिर्ब्रह्मशान्ति ? सर्व ᳪ शान्ति शान्तिरेवशान्ति ? सामाशान्ति रेधि ॥५॥ ॐ विश्वानिदेव सवितर्दुरितानि परासुव । यद्भद्रं तन्नऽआसुव ॥६॥ ॐ यतोयत ? समीहसे ततो नोऽअभयङ्कुरु ॥ शन्नः कुरु प्रजाभ्योऽभयन्न ? पशुभ्यः ॥७॥ ॐ इमारुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्रभरामहेमती ? ॥ यथा शमसद्विपदे चतुष्पदे विश्वंपुष्टंग्रामे अस्मिन्ननातुरम् ॥८॥ ॐ एतन्ते देवसवितर्यज्ञं प्राहुर्बृहस्पतये ब्रह्मणे । तेन यज्ञमवतेन यज्ञपतिं ते न

मामव ॥९॥ ॐ मनो जूतिर्ज्जुषता माज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ऽ समिमं दधातु । विश्वेदेवासऽ-इहमादयन्ता मो३म् प्रतिष्ठ ॥१०॥ ॐ एष वै प्रतिष्ठानाम यज्ञो यज्ञे तेन यज्ञेन यजन्तेन सर्व्वमेवप्रतिष्ठितम्भवति॥११॥ ॐ गणानां त्वा गणपति ऽ हवामहे प्प्रियाणांत्वा प्प्रियपति ऽ हवामहे निधी-नांत्वा निधिपति ऽ हवामहे व्वसो मम । आहमजानि गर्ब्भधमा त्वमजासि गर्ब्भ-धम् ॥१२॥ ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बा-लिकेनमा नयति कश्चन ।ससस्त्यश्वक ऽ सुभद्रिकां कांपीलवासिनीम् ॥१३॥

इसके बाद चावल छोड़ दे तथा हाथ जोड़े ।

ॐ सिद्धिबुद्धि सहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः। ॐ लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः । ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः ॐ वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः । ॐ शचीपुरन्दराभ्यां नमः । ॐ वास्तुमंडलोक्त देवताभ्यो नमः । ॐ ग्रामदेवताभ्यो नमः।

क्षेत्रदेवताभ्यो नमः । ॐ कुलदेवताभ्यो नमः । ॐ इष्टदेवताभ्यो नमः । ॐ एतत्कर्म प्रधान देवताभ्यो नमः । ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः । ॐ सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः । ॐ मातापितृचरणकमलेभ्यो नमः । ॐ पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु ।

ॐ सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः ॥ लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायक ।. धूम्रकेतु र्गणाध्यक्षोभालचन्द्रो गजानन ॥ द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ॥ विद्यारंभे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा ॥ संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ॥ शुक्लाम्बर-धरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम् ॥ प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये ॥ अभीप्सितार्थ सिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः ॥ सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः॥ वक्रतुण्ड महाकाय कोटिसूर्य समप्रभ ॥ अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ॥ सर्वमङ्गल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके । शरण्ये त्र्यम्बके गौरी नारायणि नमोऽस्तुते ॥ सर्वदा सर्वकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः । देवाः दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशानजनार्दनः॥ विश्वेशं माधवं ढुण्ढिं दण्डपाणिं च भैरवरम् ॥ बन्दे काशीं गुहां गंगां भवानीं मणिकर्णिकाम् ॥ लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजय ॥ येषामिंदीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दन ॥ अनन्याश्चिन्तयन्तोमां ये नरा पर्युपासते ॥ तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ॥ तदेव लग्नं सुबलं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव ॥ विद्याबलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेंऽघ्रियुगं नमामि ॥

संकल्प

इसके बाद दाहिने हाथ में जल, अक्षत, पुष्प, सुपारी-दक्षिणा आदि लेकर एकाग्र मन से संकल्प करे ।

ॐ विष्णुः ॐ विष्णुः ॐ विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य ब्रह्मणोन्हि द्वितीये परार्धे श्री श्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे ब्रह्मावर्तैक देशे गंगायमुनयोर्मध्ये बौद्धावतारे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलि प्रथमचरणे कुमारिका क्षेत्रे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशान्तरे ततः प्रभवादि षष्ठिसम्वत्सराणां मध्ये...... नाम्निसम्वत्सरे...... संख्यके...... अयने...... ऋतौ मासानां मासोत्तमे...... मासे शुभे...... पक्षे...... वासरान्वितायां...... योगे...... करणे एवं पंचाङ्गशुद्धे...... राशि स्थिते श्रीसूर्ये...... राशि स्थिते चन्द्रे...... राशिस्थिते देवगुरौ शेषेषुग्रहेषु यथा-यथा स्थानस्थितेषु एवं गुणगणविशेषेण विशिष्टानां जन्मान्तर पुण्यफलोदयस्वरूपेण प्राप्ते पुण्यावसरे...... गोत्रः...... शर्माहं सपत्नीकोऽहं सपरिवारोऽहं सकलशास्त्र श्रुति-स्मृति वेदोक्त पुराणोक्त शुभफल प्राप्त्यर्थं उत्तमायुरारोग्य ऐश्वर्याभिवृद्ध्यर्थं स्थिर धनसुख सम्पत्ति प्राप्तये अस्थिर लक्ष्मीं चिरकालपर्यन्तं सरंक्षणार्थं सकल कायिक वाचिक मानसिक सांसर्गिक सकल तापोपशमनार्थं राजभय चौरभय सर्पभय शत्रुभय अग्निभय रोगभय यानपातनादिभय अभिचारभय दुस्संगजन्य आकस्मिकभय तथा नानागतभय निवारणार्थं नवग्रहजन्यपीडा शान्त्यर्थं दैहिक दैविकाधिभौतिक त्रिविधतापोपशमनार्थं पुरुषार्थचतुष्टय सिद्ध्यर्थं उपस्थितानां सर्वेषां जनानां परमकल्याणकामः भगवद्भवानी शंकर देवता प्रीत्यर्थं.... लिङ्गोपरि यथाज्ञानेन यथामिलितोपचारैः ध्यानन्यासादियुतं यथासंख्याकैः ब्राह्मणैः सह शिवपूजन रुद्राभिषेक कर्माऽहं करिष्ये। तदङ्गत्वेन शिवपरिवारस्थदेवानां पूजनमपि करिष्ये ।

निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च ॥ हिरण्ययेन सवितारथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ॥

एहि सूर्य सहस्त्रांशो तेजोराशि जगत्पते ।
अनुकम्पय मां भक्त्या गृहणार्घं दिवाकर ॥

सूर्य नमस्कार

आदित्यस्य नमस्कारं ये कुर्वन्ति दिने दिने ।
जन्मान्तर सहस्त्रेषु दारिद्र्यं नोपजायते ॥

चन्द्रार्घ दान

ॐ इमं देवा असपत्न ॐ सुवद्धं महते क्षत्राय महते ज्येष्ठ्याय महते जान राज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय । इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमष्यै विशऽएष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणाना ॐ राजा ॥

समुद्र मथनोज्जातः शिवभालौ प्रभाकर ।
अनुकम्पय मां देव गृहाणार्घं निशाकर ॥

चन्द्र नमस्कार

दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णव संभवम् ।
नमामि शशिनं सोमं शंभोर्मुकुट भूषणम् ॥

शिवार्चन से समस्त यज्ञादि कर्मों का फल प्राप्त होता है। अतएव उसमें कहे हुये देवताओं का एकतन्त्री क्रम से पूजन अथवा स्मरण मात्र ही कर लेना चाहिये। उनके निमित्त एक दो पुष्प अर्पण करना चाहिये।

अभीप्सितार्थ सिद्ध्यर्थं पूजितो यःसुरासुरैः।
सर्व विघ्न हरस्तस्मै गणाधिपतये नमः॥

ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्चवो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमो नमः॥

ॐ गणपतये नमः

हेमाद्रि तनयां देवीं वरदां शंकर प्रियाम्।
लम्बोदरस्य जननीं गोरीमावाहयाम्यहम्॥

ॐ समख्ये देव्या धिया सन्दक्षिणयो रुचक्षसा॥ मामऽआयु ९ प्प्रमोषीर्म्मो अहंतव व्वीरं व्विदेय तवदेवि सुसन्दृशि॥

ॐ अम्बिकायै नमः

शुद्धस्फटिक संकाशं जलेशं-पादपां पतिम्।
आवाहये प्रतीचीशं वरुणं सर्वकामदम्॥

ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि व्वरुणस्य स्कंभ सर्ज्जनीस्थो व्वरुणस्यऽऋत-सदन्यसि व्वरुणस्य ऋतसदनमसि व्वरुणस्यऽऋत सदनमासीद ॥

ॐ अपांपतिवरुणाय नमः

वास्तोष्पतिं विदिकार्यं भूशय्याभिरतं प्रभुम् ।
आवाहयाम्यहं देवं सर्वकर्म फलप्रदम् ॥

ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान् स्वावेशो अनमीवो भवानः ॥ यत्वेमहे प्रतितन्नो जुषस्व शन्नोभव द्विपदे शं चतुष्पदे ॥

ॐ वास्तुमण्डलोक्त देवताभ्यो नमः

योगिन्यः शक्तिसम्पन्नाः नानारूपाः सुमंगलाः ।
महाशक्ति धरादेव्यः मखरक्षां कुरुष्वमे ॥

ॐ योगे योगे तवस्तरन् व्वाजेंव्वाजे हवामहे । सखाय इन्द्रमूतये ॥

ॐ चतुष्षष्ठियोगिनीभ्यो नमः

भूतप्रेतपिशाचाद्यैः आवृतं शूलपाणिनम् ।
आवाहये क्षेत्रपालं कर्मण्यस्मिन् सुखाय नः ॥

ॐ नहिस्पशमविदन्नन्यमस्म्माद् वैश्वानरात्पुरऽएतारमग्ने ? ॥ एमेनमवृधन्न

मृताऽअमर्त्यंवैश्वानरं क्षैत्रंजित्त्याय-देवा२ ॥

ॐ क्षेत्राधिपतये नमः

देवदेव जगन्नाथं भक्तानुग्रह कारकम्।
चतुर्भुजं रमानाथं विष्णुं आवाहयाम्यहम् ॥

ॐ सहस्त्रंशीर्षा पुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रंपात् ॥ सभूमिं ँ सर्व्वतस्पृत्वा त्त्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥

ॐ सर्वतोभद्रमंडलोक्तदेवताभ्योनमः।

या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥

ॐ आयं गौः पृश्निरक्रमीद-संदन्मातरं पुर२ ॥ पितरं च प्रयन्त्स्वः ॥

ॐ मातृभ्यो नमः

नमः सूर्य्याय चन्द्राय मंगलाय बुधाय च।
गुरु शुक्रश्च शनये राहवे केतवे नमः ॥

ॐ ग्रहा ऊर्ज्जाहुतयो व्यन्तो-विप्प्रायमतिम् ॥ तेषां विशिप्प्रियाणां व्वोहमिषमूर्ज्ज ँ समग्ग्रभ मुपयामगृ-

हीतोऽसीन्द्रायत्त्वा जुष्टं गृह्णाम्म्येषते
योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम् ॥

ग्रहमण्डलोक्त देवताभ्यो नमः

इसके उपरान्त शिवार्चन आरंभ करे :

न्यास मूलमिदं प्रोक्तं न्यास पूर्वं तु कारयेत् ॥
न्यासेन रहितं कर्म अर्घं गृह्णन्ति राक्षसाः ॥

विनियोग : अँ नमो भगवते रुद्रायेति दशाक्षर मन्त्रस्य प्रजापति ऋषिः विराट् छन्दः श्रीरुद्रोदेवता न्यासे विनियोगः ॥

ॐ नमः मूर्ध्नि । ॐ नं नमः नासिकायाम् ।
ॐ मों नमः ललाटे । ॐ भं नमः मुखे ।
ॐ गं नमः कण्ठे । ॐ वं नमः हृदये ॥
ॐ तें नमः दक्षिण हस्ते । ॐ रुं नमः वामहस्ते।
ॐ दां नमः नाभौ । ॐ यं नमः पादयोः ॥

एवं न्यास विधानेन निष्पापोजायते नरः ॥
आत्मानं रुद्ररूपं हि शरीरेण विचिन्तयेत् ॥

ॐ मानो महान्तमुतमानो ऽअर्भ कम्मान ऽउक्षन्त मुतमानऽ उक्षितम् ॥ मानो व्वधीः पितरम्मोतमातरम्मानः प्प्रियास्तन्न्वोरुद्र रीरिषः ॥

यह मन्त्र पढ़कर ज्योति स्वरूप शिव का ध्यान मस्तक पर करे ।

भगवान् शंकर के पूजन में उनके प्रधान आठ तत्वों की शिवजी

के समान ही पूजा करे। ये शिवगण कहलाते हैं। गणेश, पार्वती, कुमार, वीरभद्र, कुबेर, कीर्तिमुख, सर्प, नन्दीश्वर और नवें स्वयं ज्योति आदिदेव महादेव हैं। इन गुणों का पूजन पृथक रूप से अथवा शिव के साथ २ भी हो सकता है। इनका पूजन सुपारी, तंदुलपुंज प्रतिमा, पार्थिवलिङ्ग आदि में भी कर सकते हैं। इनके पूजन के बिना शिवपूजन अपूर्ण रहता है।

गणपति आवाहन

दधानं भृङ्गालीमनिशममले गंडयुगले।
ददानं सर्वार्थान् निज चरण सेवा सुकृतिने।
दयाधारं सारं निखिल निगमानामनुदिनम्।
गजास्यं स्मेरास्यं तमिह कलये चित्तनिलये।

ॐ गणानांत्वा गणपति ꣳ हवामहे प्रियाणान्त्वाप्रियपति ꣳ हवामहे निधीनांत्वा निधिपति ꣳ हवामहे व्वसोमम। आहमजानि गर्ब्भधमात्वमजासि गर्ब्भधम्॥

ॐ गणपतिं आवाहयामि स्थापयामि भो गणपते! इहागच्छ इहतिष्ठ पूजां गृहाण सन्मुखो वरदोभव॥

पार्वती आवाहन

मुखै ते ताम्बूलं नयन युगले कज्जलकला॥
ललाटे काश्मीरं विल सति गले मौक्तिक लता॥

स्फुरत्कांचीशाटी पृथु कटि तटे हाटकमयी ॥
भजामस्त्वां गौरीं नगपति किशोरीमविरतम् ॥

ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके न मानयति कश्चन । ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां कांपीलवासिनीम् ॥

ॐ पार्वतीं आवाहयामि स्थापयामि । भो पार्वति इहागच्छ इहतिष्ठ पूजां गृहाण सन्मुखी वरदाभव ।

स्वामिकुमार आवाहन

शंकरस्तेज सम्भूतं कुमारं शिखिवाहनम् ॥
षड्मुखं कृत्तिकासूनं गुहम् आवाहयाम्यहम् ॥

अथषड्मुख ध्यानम्

शिखीवाहोदेवः समरभयकारी शिवसुतः ॥
परमसेनानी त्वं षड्मुख तथा द्वादशभुजः ॥
महाशक्तिः शोभा अमरगण सेवित सर्वदा ॥
व्रजामः त्वां शरणं प्रणतभयहारी ते यशः ॥

ॐ यत्रंवाणाः सम्पतन्ति कुमारा विऽशिखा इव । तन्नइन्द्रो बृहस्पति-रदितिः शर्मयच्छतुविश्वाहाशर्मयच्छतु ॥

ॐ स्वामि कुमारं आवाहयामि स्थापयामि भो कुमार ! इहागच्छ इहतिष्ठ पूजां गृहाण सन्मुखो वरदोभव ॥

वीरभद्र आवाहन

वीरभद्रो महातेजो शंकरस्य गणाग्रणी ॥
इहागच्छ महावीर यज्ञरक्षां कुरुष्व मे ॥

अथ वीरभद्र ध्यानम्

महावीरो गदः क्रतुफल प्रदाता वै पुरा ॥
कृतः यज्ञः ध्वंसः कृतुपति सदेवाः अधिगणाः ॥
महाकोपाज्जातः शिवगण प्रधानो बलनिधिः ॥
मखं रक्षो देव सकल समुद्राये कुरु कृपा ॥

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवाः भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ॥

ॐ वीरभद्रं आवाहयामि स्थापयामि भो वीरभद्र ! इहागच्छ इहतिष्ठ पूजां गृहाण सन्मुखो वरदोभव ।

कुबेर आवाहन

आवाहयामि देवेशं धनदं यक्ष पूजितम् ॥
दिव्यदेहं महाकायं नरयानगतिं विभुम् ॥

अथ कुबेर ध्यानम्

धनेशो यक्षेशो गिरिश प्रियदेवो निधिपतिः ।
नरोवाहः देवः सित ध्वज पताका विजयते ॥
पुरी अलकाधीशो वृहत्तनुधारी कुरु दयाम् ॥
नरेन्द्रानाम् नाथः कठिन दुःख दारिद्र्य दहनम् ॥

ॐ व्वयꣳ सोमव्रते तवमनस्तनूषु

विभ्रंत ं ॥ प्रजावन्त ं सचेमहि ॥

ॐ कुबेरं आवाहयामि स्थापयामि भो कुबेर ! इहागच्छ-इहतिष्ठ पूजां गृहाण सन्मुखो वरदोभव ॥

कीर्तिमुख आवाहन

सर्वअङ्गमयमीशः विश्वरूपः महाक्रतुः ॥
इहागच्छ महादेव पूजां मे सफली कुरु ॥

अथ कीर्तिमुख ध्यानम्

मुखे नैव कीर्तिः हुतवह सदेवाः नरवराः ।
त्वया दत्तं भोज्यं जगतफल दायी सुखकराः॥
कृते पूजायागे भवयुतभवानी सर्वदा ॥
धनं धान्यं सौख्यं परम सायुज्यं देहि मे ॥

ॐ असवे स्वाहा व्वसवे स्वाहा विभुवे स्वाहा विवस्वते स्वाहा गणश्रिये स्वाहा गणपतये स्वाहा विभुवे स्वाहा-धिपतये स्वाहा शूषायस्वाहा सं सर्पाय स्वाहा चन्द्राय स्वाहा ज्योतिषे स्वाहा मलिम्लुचाय स्वाहा दिवा पतयते स्वाहा ॥

ॐ कीर्तिमुखं आवाहयामि स्थापयामि भो कीर्तिमुख इहागच्छ

इहतिष्ठ पूजां गृहाण सन्मुखो वरदोभव ॥

सर्प आवाहन

अनन्ताद्यान् महाकायान् फणासप्तकमण्डितान् ।
आवाहयाम्यहं सर्पान्, नानामणि विभूषितान् ॥

सर्प ध्यानम्

अनन्तद्याः नागाः विपुलफण युताः मणियुताः ।
महादेव कण्ठे बलयकृत शोभा युत सदाः ॥
महायोगी रूपान् जगतभयकारी अभयदान् ।
नमामि तान् दैवान् विरल सरलान्। विषधराम् ॥

ॐ नमोऽस्तुसर्प्पेभ्यो ये के च पृथिवी मनु । येऽअन्तरिक्षे ये दिवि-तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥

ॐ सर्पान् आवाहयामि स्थापयामि भो सर्पाः ।
इहागच्छ इहतिष्ठन्तु पूजां गृहाण वरदा भवंतु ॥

नन्दीश्वर आवाहन

नन्दीश्वर महायोगि धर्मरूपः शिवप्रियः ।
इहागत्य महायज्ञे श्रद्धाभक्तिं प्रयच्छ मे ॥

नन्दीश्वर ध्यानम्

सदानन्दी नन्दी जगतपति धारी सुरपतिः ।
महा धर्मो रूपः जनमन विहारी पशुपतिः ।
सदा श्रद्धा भक्तिः भव युत भवानी पाहिमाम् ।
मखेऽस्मिन् सांगंत्वं महत्पुण्यं दीयताम् ॥

ॐ आशुः शिशानो वृषभोन भीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम् ॥ सङ्क्रन्दनोऽनिमिषऽ एकवीरः शत ᳪ सेना ऽअजयत्साकमिन्द्रः ॥

ॐ नन्दीश्वरमावाहयामि स्थापयामि भो नन्दिन्! इहागच्छ इहतिष्ठ पूजां गृहाण सन्मुखो वरदोभव ॥

शिव आवाहन

महोक्षः खट्वाङ्ग परशुरजिनं भस्मफणिनः ।
कपालं चेतीयत्तव वरद तन्त्रोपकरणम् ॥
सुरास्तां तां वृद्धिं विदधति भवद्भ्रूप्रणिहितां ।
नहि स्वात्मारामं विषयमृगतृष्णा भ्रमयति ॥

कैलाश पीठासन मध्य सस्थं
भक्ताः सनन्दादिभिरर्च्च्य मानम् ॥
भक्तार्तिदावानल प्रमेयं
ध्यायेदुमालिङ्गित विश्वभूषणम् ॥

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरि निभं चारुचन्द्रा वसंतं ॥
रत्नाकल्पोज्जवलाङ्गं परशुमृगवराभीति हस्तं प्रसन्नम् ॥
पद्मासीनं समन्तात्स्तुतममरगणैः व्याघ्रकृत्तिं वसानम् ॥
विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम् ॥
कैलाशशिखरस्थं पार्वतीपतिमुत्तमम् ॥
यथोक्तं रूपिणं शंभु निर्गुणंगुणरूपिणं ॥
पंचवक्त्रं दशभुजं त्रिनेत्रं वृषभध्वजम् ॥
कर्पूर गौरं दिव्याङ्गं चन्द्रमौलि कपर्दिनम् ॥

व्याघ्रचर्मोत्तरीयं च गजचर्माम्बरं शुभम् ॥
वासुक्यादि परीताङ्गं पिनाकाद्यायुधान्वितम् ॥
सिद्धयौऽष्टौ च यस्याग्रे नृत्यन्ति निरन्तरम् ॥
जयजयेतिशब्दैश्च सेवितं भक्तपुञ्जकैः ॥
तेजसा दुस्सहैरेव दुर्लघ्यं देवसेवितम् ॥
शरण्यं सर्व सत्वानाम् प्रसन्नमुखपंकजम् ॥
वेदैः शास्त्रैर्यथागीतं विष्णुब्रह्मनुतं सदा ॥
भक्तवत्सलमानन्दं शिवं आवाहयाम्यहम् ॥

ॐ नमः शम्भवाय च मयो भवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवायचशिवतराय च ॥ ॐ असंख्याता सहस्त्राणि ये रुद्राऽअधि-भूम्याम् ॥ तेषा ँ सहस्त्रयोजने-वधन्वानि तन्मसि ॥

आद्याहि भगवान् शंभो शर्वस्तं गिरिजापते ॥
प्रसन्नो भव देवेश नमस्तुभ्यं नमो नमः ॥

इसके बाद वैदिक मंत्रों से प्राण प्रतिष्ठा करें :

ॐ अयं पुरो भुवस्तस्य प्राणो भौवायनोव्वसन्त ? प्राणायनो गायत्री वासन्ती गायत्र्यै गायत्रं गायत्रा दुपा ँ

शुरूपा ꣳ शो स्त्रिवृत्रि वृतो रथन्तरं वशिष्ठऽऋषि÷ प्रजापति गृहीतया त्वया प्राणं गृह्णामि प्रजाभ्य÷ ॥१॥

ॐ अयं दक्षिणा विश्वकर्मा तस्यमनो वैश्वकर्मणं ग्रीष्मो मानसस्त्रिष्टुब्ग्रीष्मो त्रिष्टुभ÷ स्वार ꣳ स्वारादन्तर्यामोऽन्त-र्यामात् पञ्चदश ः पञ्चदशात् बृहद् भारद्वाज ऋषि÷ प्रजापति गृहीतयात्वया मनो गृह्णामि प्रजाभ्य÷ ॥२॥

ॐ अयं पश्चाद् विश्वव्यचास्तस्य चक्षुर्वैश्वव्यचसं वर्षाश्चाक्षुष्यो जगता व्वार्षी जगत्याऽ ऋक्सममृक्समाच्छुक्र ः शुक्रात्सप्तदश ः सप्तदशाद्वैरूपञ्जम-दग्निर्ऋषि ः प्रजापति गृहीतया त्वया चक्षुर्गृह्णामि प्रजाभ्य÷ ॥३॥

ॐ इदमुत्तरात्स्वस्तस्य श्रोत्र ꣳ

सौव ॐ शरच्छ्रौत्र्यनुष्टुपशारद्यनुष्टभऽ-ऐडमैडान्मन्थी मन्थिनऽएक विॐशऽ ऐकविॐ शाद्वैराजं विश्वामित्रऽऋषिः प्रजापति गृहीतया त्वया श्रोत्रं गृह्णामि प्रजाभ्यः ॥४॥

ॐ इयमुपरि मतिस्तस्यै वाङ्मत्या हैमन्तोव्वाच्च्य ? पङ्क्तिर्हैमन्ती पंक्त्यै निधनवन्निधनवत् ऽ आग्रयण आग्रय-णात्रिणवत्रयस्त्रिॐ शौ त्रिणवत्रयस्त्रिॐ शाभ्यां ॐ शाक्वररैवते विश्वकर्मऽ ऋषिः प्रजापति गृहीतया त्वया व्वाचं गृह्णामि प्रजाभ्यों लोकन्ताऽइन्द्रम् ॥५॥

इसके बाद हाथ जोड़कर प्रार्थना करे :

ॐ इमा रुद्राय तवसे कपर्द्दिने क्षयद्वीराय प्रभरामहे मतीः । यथा शमस द्विपदे चतुष्पदे विश्वम्पुष्टङ्ग्रामे ऽअस्मिन्ननातुरम् ॥

भगवन् देवदेवेश यावत्पूजावसानकम् ।
तावत्वं प्रीतिभावेन लिङ्गेऽस्मिन् सन्निधोभव ॥

इसके बाद शिवपूजन आरंभ करे :

आसन

विश्वेश्वर महादेव राजराजेश्वरप्रिय ।
आसनन्दिव्यमीशान दास्येऽहन्तुभ्यमीश्वर ॥

ॐ एतत्ते रुद्रावसन्तेन परोमूज वतोतीहि ॥ अवततधन्वा पिनाकाव्वसः कृत्तिवासाऽअहिँ सन्नः शिवोऽतीहि ॥

ओं सगण सदाशिवाय नमः ॥ दिव्यासनम् समर्पयामि ॥

पाद्य

महादेव महेशान शर्वस्त्वं गिरिजापते ।
पादप्रक्षालनार्थाय दत्तं ते प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ नमोऽस्तुनीलग्रीवायसहस्राक्षाय मीढुषे ॥ अथो ये अस्य सत्वानोऽ-हन्तेभ्योऽकरन्नमः ॥

ओं सगण सदाशिवाय नमः ॥ पादयोः पाद्यं समर्पयामि ॥

अर्घ

नमस्ते देवदेवेश नमस्ते करुणाम्बुधे ।
करुणाकर मे देव गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तुते ॥

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि ॥ तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॥

ओं सगण सदाशिवाय नमः ॥ करयोरर्घ समर्पयामि ॥

आचमन

सर्व तीर्थ समायुक्तं सुगंधं निर्मलंजलम् ।
आचम्यतां मयादत्तं प्रसीद परमेश्वर ॥

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धना-न्मृत्योर्म्मुक्षीय मामृतात् ॥

ओं सगण सदाशिवाय नमः । आचमनीयम् समर्पयामि ॥

मधुपर्क

कांस्ये कांसेनपिहितो दधिमध्वाज्य संयुतः ।
मधुपर्को मयानीतः पूजार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ यन्मधुनो मधव्यं परमꣳ रूपमन्नाद्यम् ॥ तेनाऽहं मधुनो मधव्येन परमेणरूपेणान्नाद्येन परमो मधव्येन्ना-क्षेऽसानि ॥

ओं सगण सदाशिवाय नमः । मधुपर्क समर्पयामि ॥

निर्मलोदक स्नान

गंगासरस्वतीरेवा पयोष्णीनर्मदाजलैः ।
स्नापितोऽसि मयादेव ग्रहशान्तिं कुरुष्वमे ॥

ॐ व्वरुणस्योत्तम्भनमसि व्वरुणस्य स्कम्भ सर्जनीस्थो व्वरुणस्यऽऋत सदन्यसिव्वरुणऽऋतसदनमसि व्वरुणस्यऋत सदनमासीद ॥

ओं सगण सदाशिवाय नमः । निर्मलोदक स्नानं समर्पयामि ॥

पयः स्नानं

कामधेनु समुत्पन्नं सर्वेषां जीवनं परम् ।
पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम् ॥

ॐ पयः पृथिव्यां पयऽओषधीषु पयो दिव्युन्तरिक्षेपयोधा ः । पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम् ॥

ॐ सगण सदाशिवाय नमः । पयस्नानं समर्पयामि ॥

जलस्नान

ॐ आपो हिष्ठा मयोभुवस्तानऽऊर्जे दधातन । महेरणाय चक्षसे ।

दधिस्नान

पयस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम्।
दध्यानीतं मयादेव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ दधि क्राब्णोऽअकारिषं जिष्णोरश्वस्य व्वाजिनः । सुरभिनो मुखाकरत् प्रणआयुꣳषितारिषत् ॥

ॐ सगण सदाशिवाय नमः । दधिस्नानं समर्पयामि ॥

जलस्नान

ॐ यो वः शिवतमोरसस्तस्य भाजयतेहनः । उशतीरिव मातरः ॥

घृतस्नान

नवनीत समुत्पन्नं सर्वसंतोषकारकम्।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ घृतं घृतपावानः पिबत वसांवसापावानः पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा। दिशः प्रदिशऽआदिशो व्विदिशऽउद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा ॥

ॐ सगण सदाशिवाय नमः । घृतस्नानं समर्पयामि ।

जलस्नान

ॐ तस्मा ऽअरङ्ग मामवो यस्यक्षयाय जिन्वथ । आपोजन यथा च नः ॥

मधुस्नान

तरुपुष्प समुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु ।
तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ मधुव्वाता ऽऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः माध्वीर्न्नः सन्त्वोषधीः । मधुनक्त मुतोषसो मधुमत्पार्थिवꣳ रजः । मधुद्यौरस्तु नः पिता । मधुमान्नो व्वनस्पतिर्म्मधुमाँ २ ऽअस्तु सूर्यः माध्वीर्गावो भवन्तु नः ।

ओं सगण सदाशिवाय नमः । मधुस्नानं समर्पयामि ॥

जलस्नान

ॐ इमम्मेवरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय । त्वामवस्यु राचके ।

शर्करास्नान

इक्षुसारसमुद्भूता शर्करा पुष्टि कारिका ॥
मलापहारिका दिव्या स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ अपा ँ रसमुद्वयस ँ सूर्ये सन्त ँ समाहितम् । अपा ँ रसस्य यो रसस्तं वो गृह्णाम्युत्तममुपयामगृहीतो सीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्रा य त्वा जुष्टतमम् ॥

ॐ सगणसदाशिवाय नमः । शर्करा स्नानं समर्पयामि ॥

जलस्नान

ॐ शन्नों देवीरभिष्टय ऽआपों भवन्तु पीतयें । शं योरभिस्रवन्तु नः ॥

पञ्चामृतस्नान

पयोदधिघृतं चैव मधुशर्करया युतम् ।
पञ्चामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ ऊर्क्चं मे सूनृता च मे पयश्चमे रसश्च मे घृतञ्च मे मधु च मे सग्धिश्च मे सपीतिश्च मे कृषिश्च मे वृष्टिश्च मे जैत्रञ्च म ऽऔद्भिद्यञ्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ।

ॐ अपा ꣳ रसमुद्वयस ꣳ सूर्ये सन्त ꣳ समाहितम् । अपा ꣳ रसस्य यो रसस्तं वो गृह्णाम्युत्तममुपयामगृहीतो सीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्रा य त्वा जुष्टतमम् ॥

ॐ सगणसदाशिवाय नमः । शर्करा स्नानं समर्पयामि ॥

जलस्नान

ॐ शन्नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये । शं योरभिस्त्रवन्तु नः ॥

पञ्चामृतस्नान

पयोदधिघृतं चैव मधुशर्करया युतम् ।
पञ्चामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ ऊर्क्च मे सूनृता च मे पयश्च मे रसश्च मे घृतञ्च मे मधु च मे सग्धिश्च मे सपीतिश्च मे कृषिश्च मे वृष्टिश्च मे जैत्रञ्चमऽऔद्भिद्यञ्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ।

अथवा

ॐ पञ्चनद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्त्रोतसः । सरस्वती तु पञ्चधा सो देशे भवत्सरित् ।

ॐ सगणसदाशिवाय नमः ।। मिलितपञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।।

शुद्ध जलस्नान

काबेरी नर्मदावेणी तुङ्गभद्रा सरस्वती ॥
गंगा च यमुना चैव ताभ्यः स्नानार्थमाहृतम् ॥

ॐ शुद्धबालः सर्वशुद्धबालो मणिबालस्तऽआश्विनः । श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा यामा अवलिप्ता रौद्रा नभो रूपाः पार्जन्याः ॥

ॐ सगणसदाशिवाय नमः । शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि ।

इसके बाद आगे लिखे १६ मंत्रों से अथवा शिवअथर्वशीर्ष से शृंग या किसी सछिद्रपात्र से शिव का अभिषेक करे ।

ॐ नमस्तेरुद्रमन्यवऽउतोतऽइषवेनमः बाहुभ्यामुतते नमः ॥१॥ यातेरुद्र शिवातनूरघोरा पापकाशिनी तया-

नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि ॥२॥ यामिषुङ्गिरि शन्तहस्ते विभर्ष्यस्तवे ॥ शिवाङ्गिरि त्रताङ्कुरु माहि॑ꣳसी॑ः पुरुषञ्जगत् ॥३॥ शिवेन व्वचसा त्त्वा गिरिशाच्छाव्वदामसि ॥ यथा नः सर्व्वमिज्जगदयक्ष्म॑ꣳसुमनाऽअसत् ॥४॥ अद्ध्यवो च दधिवक्त्ता प्प्रथमो दैव्व्यौभिषक् ॥ अहींश्च सर्व्वाञ्जम्भयन्त्सर्व्वाश्च यातुधान्न्यो धराची॑ः परासुव ॥५॥ असौयस्ताम्म्रोऽअरुणऽउतबभ्रुः सुमङ्गलः ॥ये चैन॑ꣳरुद्राऽअभितो दिक्षुश्रिताः सहस्रशोवैषा॑ꣳहेडईमहे ॥६॥ असौ योऽवसर्प्पति नीलग्ग्रीवो व्विलोहितः ॥ उतैनङ्गोपाऽअदृश्रन्नदृश्रन्नुदहार्य्यः सदृष्टो मृडयातिनः ॥७॥ नमोऽस्तु नीलग्ग्रीवाय सहस्राक्षायमीढुषे ॥ अथोयेऽअस्य-

सत्वानोऽहन्तेभ्योऽ करन्नमः ॥८॥ प्र-
मुञ्च धन्वनस्त्वमुभयोरात्न्योर्ज्ज्याम् ॥
याश्चते हस्तइषवः पराताभगवोव्वप ॥९॥
विज्ज्यन्धनुः कपर्द्दिनो व्विशल्ल्यो वाण
वाँ २ उत ॥ अनैशन्नस्य याऽइषवऽआभुर
-स्यनिषङ्गधिः ॥१०॥ या तेहेतिर्म्मी-
ढुष्टमहस्ते व्वभूवते धनुः ॥ तया
स्म्मान्न्विश्श्व तस्त्वमयक्ष्म या
परिभुज ॥११॥ परिते धन्वनो हे
तिरस्म्मान्व्वृणक्तु व्विश्श्वतः ॥ अथो
यऽइषुधिस्त वारेऽ अस्म्मन्निधेहि-
तम् ॥१२॥ अवतत्त्यधनुष्ट्व ँ सहस्त्रा-
क्षशतेषुधे ॥ निशीर्य्य शल्ल्यानाम्मुख
शिवो नः सुमना भव ॥१३॥
नमस्त ऽआयुधायानात-ताय धृष्णवे ॥
उभाब्भ्या मुतते नमो बाहुब्भ्या-
न्तवधन्वने ॥१४॥ मानोमहान्त मुतमानो

ऽअर्ब्भकम्मानऽउक्षन्तमुतमानऽउक्षितम् ॥ मानोव्वधीः पितरम्मोत मातरम्मानः प्प्रियास्तन्न्वोरुद्ररीरिषः ॥१५॥ मानस्तोके तनये मानऽआयुषिमानो गोषुमानोऽअश्श्वेषु रीरिषः ॥ मानोव्वीरान्रुद्रभामिनोव्वधीर्हविष्म्मन्तः ॥ सदमित्त्वा हवामहे ॥१६॥

॥ अमृताभिषेकोस्तु ॥

अथ शिवोपनिषत्

ॐ नमश्शिवाय ॥ ॐ नमोस्तु शर्व्वा शंभो त्रिनेत्र चारुगात्र त्रैलोक्यनाथ उमापते दक्षयज्ञ विध्वंसकारक सकामाङ्गनाशन घोर पाप प्रणाशन महापुरुष महोग्रमूर्ते सर्व्वसत्वक्षयङ्कर शुभङ्कर महेश्वर त्रिशूलधर स्मरारे गुहाधामन् दिग्वासः महाशङ्खशेखर जटाधर कपालमालाविभूषित शरीर वामचक्षुः क्षुभितदेव प्रजाध्यक्ष भगाक्ष्णोः क्षयङ्कर भीमसेननाथ पशुपते कामाङ्गदहन चत्वरवासिन् शिव महादेवं ईशान शङ्कर भीमभववृषभध्वज कैटभ प्रौढ महानाथेश्वर भूतिरत अविमुक्तक रुद्ररुद्रेश्वर स्थाणों एकलिङ्ग कालिन्दीप्रिय श्रीकण्ठ नीलकण्ठ अपराजित रिपुभयङ्कर सन्तोषपते वामदेव अघोर तत्पुरुष महाघोर अघोरमूर्ते शान्त सरस्वतीकान्त सहस्रमूर्ते महोद्भव विभो कालाग्ने रुद्र रौद्रहर महीधरप्रिय सर्व्वतीर्थाधिवास हंस कामेश्वर केदार अधिपते परिपूर्ण्ण मुचुकुन्द मधुनिवास कृपाणपाणे भयङ्कर विद्याराज सोमराज कामराज महीधरराज कन्या हृदब्जवसते समुद्रशायिन्

गयामुखगोकर्ण्ण ब्रह्मयोने सहस्रवक्त्राक्षि चरण हाटकेश्वर नमस्ते नमस्ते ॥

॥ शिवार्पणमस्तु ॥

इसके उपरान्त सगन्धयुक्त जल से स्नान कराये ।

नाना सुगन्ध द्रव्याणि चन्दनं केशरान्वितं ॥
स्नानं कुरु महादेव ग्रहशान्तिं प्रयच्छ मे ॥

ॐ अ॒ꣳशुना॑ ते अ॒ꣳशुः पृच्यता॒म्परुषा॒परुः॑ गन्ध॒स्ते सोम॑ म॒वतु॒ मदा॑य॒ रसो॒ऽअच्युतः॑ ॥

ॐ सगण सदाशिवाय नमः ॥ गन्धोदकस्नानं समर्पयामि ॥

वस्त्र

सर्वभूषादिके सौम्ये लोकलज्जा निवारणे ।
मयोपपादिते तुभ्यं वासंसी प्रति गृह्यताम् ॥

ॐ युवा सुवासाः परिवीतऽआगात् सौश्रेयान्भवति जायमानः ॥ तन्धीरास कवय उन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः ॥

ॐ शिवपरिवारदेवताभ्यो नमः । वासांसि परिधापयामि ॥

ॐ मानस्तो॒केतनये॒ माऩ॒ आयुषि॒ मा॒नो गोषु मा॒नो अश्वेषुरीरिषः ॥ मानो वी॒रान् रुद्र॒भामिनो वधीर्ह॒विष्मन्त॒ः सद्मित्वा हवामहे ॥

ॐ सदाशिवाय नमः । कौपीनं परिधानापयामि ॥

ॐ नमो धृष्णवेचप्रमृशायचनमो निषङ्गिणे चेषुधिमते च नमस्तीक्ष्णेषवे चायुधिनेच नमः स्वायुधायचसुधन्वने च ॥

ॐ सदा शिवाय नमः ॥ अधोवस्त्रं परिधापयामि ॥

यज्ञोपवीत

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम् ॥
उपवीतं मयादत्तं गृहाण परमेश्वर ॥

ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमपुरस्ता- द्विसीमतः सुरुचो व्वेनऽआवः ॥ स बुध्न्या ऽउपमाऽअस्यविष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विव्वः ॥

ॐ सगण सदा शिवाय नमः ॥ उपवीतं परिधापयामि ॥

जलाचमनीयम्

इसके उपरांत शिव को उत्तरीय वस्त्र धारण कराये ।

ॐ याते हे तिम्मीढुष्टम हस्ते वभूव ते धनुः ॥ तयास्म्मान्विश्श्वतस्त्वमयक्ष्म्म या परिभुज ॥

ॐ सगण सदाशिवाय नमः ॥ उत्तरीयम् परिधापयामि ॥

॥ पुनः आचमनीयं जलम् ॥

ॐ शन्नो देवी रभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये ॥ शं योरभिस्त्रवन्तु नः ॥

कुंकुम-चन्दन-भस्मादि

कुंकुमं कामनादिव्यं कामिनी काम सम्भवम् ॥
सिन्दूरेनार्चितः देव तेजोवृद्धिं कुरुष्व मे ॥

ॐ तरणिर्व्विश्श्व दर्शतोज्ज्योतिष्कृदसि सूर्य्य ॥ विश्श्वमाभासिरोचनम् ॥

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः ॥ कुंकुमं समर्पयामि ।
सौभाग्यकरणार्थं सिन्दूरं विलेपयामि ॥
श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं केशरादि सुवासितं ॥
विलेपने सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ नमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यश्श्च वो नमो नमो भवाय च रुद्राय च नमः शर्व्वाय च पशुपतये च नमो नीलग्ग्रीवाय च शितिकण्ठाय च ॥

ॐ सगणसदाशिवाय नमः ॥ चन्दनं विलेपयामि ॥

ॐ त्र्यायुषञ्जमदग्ग्ने ऽ कश्यपस्य-त्र्यायुषम् ॥ यद्देवेषु त्र्यायुषन्तन्नो अस्तु त्र्यायुषम् ॥

ॐ सगणसदाशिवाय नमः ॥ भस्मं विलेपयामि ॥

अक्षत

ॐ अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुंकमाक्ताः सुशोभिताः ॥
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर ॥

ॐ नमस्तक्षब्भ्यो रथकारेब्भ्यश्च वो नमो नम ऽ कुलालेब्भ्य ऽ कर्म्मा-रेब्भ्यश्च वो नमो नमो निषादेब्भ्यः पुञ्जिष्ठेब्भ्यश्श्च वो नमो नमः श्श्वनि-ब्भ्यो मृगयुब्भ्यश्श्च वो नमो नमः॥

ॐ सगण सदाशिवाय नमः ॥ अक्षतान् समर्पयामि ॥

सप्तधान्य

ॐ व्रीहयश्च मे यवाश्चमेमाषाश्श्च मे तिलाश्चमे मुद्गाश्च्च मे खल्वाश्चमे प्रियङ्गवश्च मेऽणवश्च मे श्यामाकाश्च मे नीवाराश्च मे गोधूमाश्च मे मसूराश्च मे

यज्ञेनकल्पन्ताम् ॥

ॐ सगण सदाशिवाय नमः ॥ धान्यानि समर्पयामि ॥

पुष्प

मल्लिकादि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।
मयाहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रति गृह्यताम् ॥

ॐ नमः पार्याय चावार्य्याय च नमः प्रतरणायचोत्तरणाय च नमस्तीर्थ्याय च कूल्याय च नमः शष्प्याय च फेन्याय च।

पुष्पान्त पूजा करने के बाद आवरण पूजा करे।

आवरण पूजा

एकादश रुद्र पूजा : ॐ अघोराय नमः। ॐ पशुपतये नमः। ॐ शर्वाय नमः ॥ ॐ विरूपाक्षाय नमः ॥ ॐ विश्वरूपिणे नमः। ॐ त्र्यम्बकाय नमः। ॐ कपर्दिने नमः। ॐ भैरवाय नमः। ॐ शूलपाणये नमः। ॐ ईशानाय नमः। ॐ महेश्वराय नमः।

शक्ति पूजा

ॐ उमायै नमः। ॐ शंकरप्रियायै नमः। ॐ पार्वत्यै नमः। ॐ गौर्यै नमः। ॐ काल्यै नमः। ॐ कालिन्द्यै नमः। ॐ कोटिदेव्यै नमः। ॐ विश्वधारिण्यै नमः। ॐ ह्रां नमः। ॐ ह्रीं नमः। ॐ गंगादेव्यै नमः ॥

गणपूजा

ॐ गणपतये नमः। ॐ कार्तिकेयाय नमः। ॐ पुष्पदन्ताय

नमः । ॐ कपर्दिने नमः । ॐ भैरवाय नमः । ॐ शूलपाणये नमः । ॐ ईश्वराय नमः । ॐ दण्डपाणये नमः । ॐ नन्दिने नमः । ॐ महाकालाय नमः । ॐ कीर्तिमुखाय नमः ।

अष्टमूर्तिपूजा

ॐ शर्व्वाय क्षितिमूर्तये नमः । ॐ भवाय जलमूर्तये नमः । ॐ उग्राय वायुमूर्तये नमः । ॐ रुद्राग्निमूर्तये नमः । ॐ भीमाया काशमूर्तये नमः । ॐ पशुपतये यजमानमूर्तये नमः । ॐ ईशानाय सूर्यमूर्तये नमः । ॐ महादेवाय सोममूर्तये नमः ।

ॐ सगण सदाशिवाय सपरिवाराय नमः ॥

आवरण देवताओं की प्रतिष्ठा एवं पञ्चोपचार पूजन करे ।

ॐ एष वै प्रतिष्ठानाम् यज्ञो यत्रै तेन यज्ञेन यजन्ते सर्वमेव प्रतिष्ठतम् भवति ।

ॐ आवरणदेवताभ्यो नमः । सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि सर्मर्पयामि ।

पुष्पमाला

पुष्पैः नानाविधैः दिव्यै कुमदैरथ चम्पकैः ॥
कर्णिकारैः सधत्तूरैः मन्दारैश्च मनोहरैः ॥
नानापंकजपुष्पैश्च ग्रथिता पल्लवैरपि ॥
बिल्वपत्रयुतां मालां ग्रहाण परमेश्वर ॥

ॐ ओषधी ꣳ प्रतिमोदध्वम्पुष्पवतीꣳ प्प्रसूवरी ꣳ ॥ अश्वाइवसजित्वरीर्व्वीरुधः पारयिष्णवः ॥

ॐ सगण सदाशिवाय नमः । पुष्पमालां परिधापयामि ।

दूर्वा

त्वं दूर्वेऽमृतजन्मासि वन्दितासि सुरासरैः ।
सौभाग्यं सन्ततिं देहि सर्वकाम करीभव ॥

ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती पुरुषः परुषस्परि ॥ एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्त्रेण शतेन च ॥

ॐ गणपतये नमः । दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि । सदाशिवाय दुर्वाङ्कुरान् समर्पयामि ।

शमीपत्र

अमंगलानां च शमनी शमनी दुष्कृतस्य च ।
दुस्वप्नानाशिनी धन्यां प्रपद्येऽहं शमीं शुभाम् ॥

ॐ अग्निर्मूर्द्धादिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽअयम् ॥ अपा ँ रेता ँ सि जिन्वति ॥

ॐ सगण सदाशिवाय नमः । शमीपत्रान् समर्पयामि ॥

तुलसीपत्र

तुलसीपत्र पवित्रानि हरिप्रीति कराणि च ।
भक्त्या समर्पयेतुभ्यं मोक्षज्ञान प्रदोभव ॥

ॐ इदं व्विष्णुर्व्विचक्रमेत्त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पाᳬ सुरेस्वाहा॥

ॐ सगण सदाशिवाय नमः। तुलसीपत्राणि समर्पयामि।

बिल्वपत्र

त्रिदलं त्रिगुणकारं त्रिनेत्रं च त्रिधायुधं।
त्रिजन्मपापसंहारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥१॥

काशीवासनिवासी च कालभैरव पूजनम्।
प्रयागे माघमासे च बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥२॥

दर्शनं बिल्वपत्रस्य. स्पर्शनं पापनाशनम्।
अघोर पापसंहारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥३॥

अखण्डैः बिल्वपत्रैश्च पूजयेच्छिवशंकरं।
कोटिकन्या महादानं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥४॥

ग्रहाण बिल्वपत्राणि सपुष्पानि महेश्वर।
सुगन्धीनि भवानीय शिवस्त्वं कुसुमप्रिय ॥५॥

त्रिशाखैः बिल्वपत्रैश्च अच्छिद्रैः कोमलैः शुभैः।
तव पूजां करिष्यामि ग्रहाण परमेश्वर ॥६॥

श्रीवृक्षामृतसम्भूतं शङ्करस्य सदाप्रियं।
पवित्रं ते प्रयच्छामि बिल्वपत्रं सुरेश्वर ॥७॥

त्रिशाखैः बिल्वपत्रैश्च कोमलैः चातिसुन्दरैः।
त्वां पूजयामि विश्वेश प्रसन्नो भव सर्वदा ॥८॥

अमृतोद्भव श्रीवृक्षं शङ्करस्य सदाप्रियं।
तत्ते शंभो प्रयच्छामि बिल्वपत्रं सुरेश्वर ॥९॥

ॐ नमो बिल्मिने च कवचिने च

नमो व्वर्म्मिणे च वरूथिने च नमः श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्याय चाहनन्याय च ॥

ॐ नमः पर्ण्णाय च पर्ण्णशदाय च नमऽ उद्गुरमाणाय चाभिघ्नते च नमऽ आखिदते च प्रखिदते च नमऽइषुकृद्भ्यो धनुष्कृद्भ्यश्च वो नमो नमो वः किरिकेभ्यो देवाना हृदयेभ्यो नमो विचिन्वत्केभ्यो नमो विक्षिणत्केभ्यो नमऽ आनिर्हतेभ्यः ॥

सगण सदाशिवाय बिल्वपत्राणि समर्पयामि ॥

अर्क-धत्तूर-आदि

अर्कधत्तूरपुष्पाणि सफलानि महेश्वर ।
भक्त्या तुभ्यं प्रदास्यामि भोगमोक्ष प्रदोभव ॥

ॐ उदुत्यञ्जातवेदसन्देवं व्वहन्ति केतवः दृशे विश्श्वाय सूर्य्यम् ॥

ॐ सगण सदाशिवाय नमः । अर्कपुष्पाणि समर्पयामि ॥

ॐ धामन्ते विश्वं भुवनमधिश्रित-मन्त ऽ समुद्रे हृद्यन्तरायुषि ॥ अपामनीके समिथे यऽआभृतस्तमश्याम मधुमन्तंत ऊर्मिम् ॥

ॐ सगण सदा शिवाय नमः । धत्तूर फलानि समर्पयामि ॥

विजया

विजया विजयदात्री चेतानन्द प्रदायिनी ।
आशुतोष महादेव सर्वत्र विजयं कुरु ॥

ॐ विजयन्धनुः कपर्द्दिनो विशल्यो वाणवाँ २ऽ उत । अनेशन्नस्य याऽइषवऽ आभुरस्य निषङ्गधि ॥

ॐ सगण सदाशिवाय नमः । विजयापानं समर्पयामि ॥

धूप

वनस्पतिरसोद्भूतं गन्धाढ्यं गन्धमुत्तमम् ।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ नमः कपर्दिने च व्युप्तकेशाय च नमः सहस्राक्षायचशतधन्वने च नमो गिरिशयाय च शिपिविष्टाय च नमो मीढुष्टमाय चेषुमते च ॥

ॐ सगण सदाशिवाय नमः । प्रत्यक्ष धूपमाघ्रापयामि ॥

दीपक

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया ।
दीपं ग्रहाण देवेश त्र्योलेक्य तिमिरापहम् ॥

ॐ नमं आशवें चाजिरायं च नमः शीग्घ्रायं च शीब्भ्याय च नम ऽऊर्म्म्यायं चा वस्वन्न्याय च नमों नादेयायं च द्वीप्प्यायं च ॥

ॐ सगण सदाशिवाय नमः । प्रत्यक्षदीपं दर्शयामि ॥

हस्तप्रक्षालनं ॥

नैवेद्य

शर्कराघृतसंयुक्तं मधुरं सुस्वादुचोत्तमम् ।
उपाहार समायुक्तं नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ नमों ज्येष्ठायं च कनिष्ठायं च नमः पूर्व्वजायंचापरजायं च नमों मद्ध्यमायं चापगल्भायं च नमों जघन्न्याय च बुध्ध्न्याय च ॥

ॐ प्राणाय स्वाहाः । ॐ अपानाय स्वाहा । ॐ व्यानाय स्वाहा । ॐ उदानाय स्वाहा । ॐ समानाय स्वाहा ।

ॐ सगण सदाशिवाय नमः । नैवेद्यं सुभोजयामि ॥

आचमन

अतितृप्तिकरं तोयं सुगन्धं च पिबेच्छया ॥
त्वयि तृप्ते जगत्तृप्तं नित्यं तृप्ते महात्मनि ॥

ॐ नमः सोभ्याय च प्रतिसर्य्याय च नमो याम्याय च क्षेम्याय च नम ॆ श्लोक्याय चा वसान्याय च नमऽ उर्वर्य्याय च खल्याय च ॥

ॐ सगण सदाशिवाय नमः । आचमनीयजलं समर्पयामि ।

ऋतुफल

फलेन फलितं सर्वं त्रैलोक्यं स चराचरं ।
तस्मात्फल प्रदानेन सफला सन्तु मनोरथाः ॥

ॐ इमारुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्रभरामहे मती ः । यथाशमसद्द्विपदे चतुष्पदे विश्वंपुष्टंग्रामेऽअस्मिन्ननातुरम् ।

ॐ सगण सदाशिवाय नमः । कालोद्भवानि फलानि समर्पयामि ॥

सफल ताम्बूल

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम् ।
खदिरेण समायुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ पातन्नों अश्विनाविवा पाहि नक्त
६ सरस्वति । दैव्या होतारा भिषजा
पातमिन्द्र ँ सचा सुते ॥

ॐ सगण सदाशिवाय नमः । सफलताम्बूलं समर्पयामि ।

दक्षिणा-दान

हिरण्यगर्भ गर्भस्थं हेमवीजं विभावसो ।
अनन्तपुण्य फलदः अतः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥

ॐ यद्दतं यत्परादानं यत्पूर्त्तं याश्च
दक्षिणाः । तदग्निर्वैश्वकर्म्मणः स्वर्द्देवेषु
नों दधत् ।

ॐ सगण सदाशिवाय नमः । कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि ।

हाथ में पुष्पफलादि लेकर स्तुति करें :

ॐ ओजश्च मे सहश्चचमऽआत्क्मा च
मे तनूश्च मे शर्म्म च मेव्वर्म्मच मेऽङ्गानि
च मेस्थीनिच मे परूᳪ षिचमे शरीराणि
च मऽ आयुश्चमे जराचं मे यज्ञेन
कल्प्पन्ताम् ॥

मन्दारमाला कुलितालिकायै कपालमालाङ्कित शेखराय।
दिव्याम्बरायै च दिगम्बराय नमः शिवायै च नमः शिवाय॥

नमः सर्वहितार्थाय जगदाधार हेतवे।
साष्टाङ्गः प्रणामो हि प्रयत्नेन मयाकृतः॥
शिवतत्वं न जानामि कीदृशोऽसि महेश्वरः।
यादृशोऽसि महादेव तादृशाय नमो नमः॥

षड्वक्त्रपूजा

ॐ प्रालेयामलमिन्दुकुन्दधवलं गोक्षीरफेनप्रभम्।
भस्माभ्यङ्गमनङ्गदेहदहनं ज्वालावलीलोचनम्॥
ब्रह्मेन्द्राग्नि मरुद्गणैः स्तुतिपरैरभ्यर्चितं योगिभिः।
वन्देऽहं सकलं कलङ्करहितं स्थाणोर्मुखम् पश्चिमम्॥

॥ ॐ पश्चिमवक्त्राय शिवाय नमः॥

ॐ गौरं कुङ्कुम पिङ्गल सुतिलकं व्यापाण्डु गण्डस्थलम्।
भ्रू विक्षेप कटाक्ष वीक्षणलसत्संसक्त कर्णोत्पलम्॥
स्निग्धं बिम्बफलाधरं प्रहसितं नीलालकालं कृतम्।
वन्दे पूर्णशशाङ्कमण्डलनिभं वक्त्रं हरस्योत्तरम्॥

॥ ॐ उत्तरवक्त्राय शिवाय नमः॥

ॐ कालाभ्रभ्रमराञ्जनाचलनिभं व्यादीप्त पिङ्गेक्षणम्।
खण्डेन्दुद्युति मिश्रदोग्रदशनं प्रोद्भिन्न दंष्ट्राङ्कुरम्॥
सर्पप्रोत कपालशक्ति सुलभं व्याकीर्ण तच्छेखरम्।
वन्दे दक्षिणमीश्वरस्य जटिलं भ्रूभङ्गरौद्रं मुखं॥

॥ ॐ दक्षिणवक्त्राय शिवाय नमः॥

ॐ संवर्त्ताग्नितडित्प्रदीप कनक प्रस्पर्द्धितेजारुणम्।
गम्भीरस्मित निःसृतोग्रदर्शनं प्रोद्भासिताम्राधरम्॥

बालेन्दुद्युतिलोलपिङ्गलजटा भारं प्रबद्धोरगम् ।
वन्दे सिद्ध सुरासुरेन्द्र नमितं पूर्वं मुखं शूलिनः ॥

॥ ॐ पूर्ववक्त्राय शिवाय नमः ॥

ॐ व्यक्ताव्यक्त गुणोत्तरं सुवदनं षड्विंशतत्वाधिकम् ।
वेदाद्यक्षरमन्त्रशास्त्रनिलयं ध्येयं सदायोगिभिः ॥
वन्दे तामसवर्जितेन मनसा सूक्ष्मातिसूक्ष्मं परम् ।
शान्तं पंचममीश्वरस्यवदनं खव्याप्त तेजोमयम् ॥

॥ ॐ ऊर्ध्ववक्त्राय शिवाय नमः ॥

ॐ यद्वेदाद्यमनन्तशास्त्रमगुणं सम्पूजितं चामरैः ।
पुण्याङ्गाम्बुज नागपुष्पवकुला नागासुराद्यर्चितम् ॥
नित्यं भानुसहस्त्रदीप्तकिरणं कालज्ञतेजोऽमयम् ।
तत्कल्याणकरं नमामि सततं पाताल षष्ठं मुखम् ॥

॥ ॐ पातालवक्त्राय शिवाय नमः ॥

अथ द्वादश ज्योतिर्लिङ्गपूजा

ॐ सौराष्ट्रदेशे विशदेऽतिरम्ये ज्योतिर्मयं चन्द्रकला वसन्तम् ।
भक्तिप्रदानाय कृपावतीर्णं तं सोमनाथं शरणं प्रपद्ये ॥१॥

॥ ॐ सोमनाथाय नमः ॥

ॐ श्रीशैलश्रृंगे विबुधातिसंगे तुलाद्रितुंगेऽपि मुदा वसन्तम् ।
तमर्जुनं मल्लिकपूर्वमेकं नमामि संसार समुद्रसेतुं ॥२॥

॥ ॐ मल्लिकार्जुनाय नमः ॥

ॐ अवन्तिकायां विहितावतारं भक्तिप्रदानाय च सज्जनानाम् ।
अकालमृत्यो परिरक्षणार्थं वन्देमहाकाल महासुरेशम् ॥३॥

Scanned by CamScanner

॥ ॐ महाकालेश्वराय नमः ॥

ॐ कावेरिकानर्मदयोः पवित्रे समागमे सज्जन तारणाय ।
सदैव मान्धातृपदे वसन्तमोंकारमीशं शिवमेकमीडे ॥४॥

॥ ॐ ओंकारेश्वराय नमः ॥

ॐ पूर्वोत्तरे प्रज्वलिका निधाने सदा वसन्तं गिरजासमेतं ।
सुरासुरैराधित पादपद्मं श्रीवैद्यनाथं शरणं प्रपद्ये ॥५॥

॥ ॐ वैद्यनाथाय नमः ॥

ॐ याम्ये सदङ्गे नगरेऽतिरम्ये विभूषिताङ्गं विविधैश्च भोगैः ।
सदभक्तिमुक्तिं प्रदमेकमीशं श्रीनागनाथं शरणं प्रपद्ये ॥६॥

॥ ॐ नागनाथाय नमः ॥

ॐ महाद्रिपार्श्वे च तटे रमन्तं सम्पूज्यमानं सततं मुनीन्द्रैः ।
सुरासुरैयक्षमहोरगाद्यै केदारमीशं शिवमेकमीडे ॥७॥

॥ ॐ केदारनाथाय नमः ॥

ॐ सह्याद्रिशीर्षे विमलेवसन्तं गोदावरीतीर पवित्रदेशे ।
यद्दशनात्पावकमाशु नाशं प्रयाति तं त्र्यम्बकमीशमीडे ॥८॥

॥ ॐ त्र्यम्बकेश्वराय नमः ॥

ॐ सुताम्रपर्णी जलराशियोगे निवद्धसेतुं विशिखैरसंख्यैः ।
श्रीरामचन्द्रेण समर्पितं तत् रामेश्वराख्यं नियतं नमामि ॥९॥

॥ ॐ रामेश्वराय नमः ॥

ॐ यं डाकिनी शाकिनिका निसेव्यमानं पिशिताशनैश्च ।
सदैव भीमादिपद प्रसिद्धं तं शङ्करं भक्तहितं नमामि ॥१०॥

॥ ॐ भीमशंकराय नमः ॥

ॐ सानन्दमानन्दवने वसन्तं आनन्दकन्दं हतपापवृन्दम् ।

वाराणसीनाथमनाथनाथं श्रीविश्वनाथं शरणं प्रपद्ये ॥११॥

॥ ॐ काशीविश्वनाथाय नमः ॥

ॐ इलापुरे रम्यविशालकेऽस्मिन् समुल्लसंतं च जगद्वरेण्यं ।
वन्दे महोदारतर स्वभावं घृष्णेश्वराख्यं शिवमेकमीडे ॥१२॥

॥ ॐ घृष्णेश्वराय नमः ॥

ॐ ज्यौतिर्मयं द्वादश लिङ्गकां शिवात्मनां प्रोक्तमिदं क्रमेण ।
स्तोत्रं पठित्वा मनुजोति भक्त्या फलं तदालोक्य निजंभवेच्च ॥

॥ द्वादशज्योतिर्लिङ्ग देवताभ्यो नमः ॥

शिवपंचाक्षर स्तोत्र

ॐ नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय भस्माङ्गरागाय महेश्वराय ।
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय तस्मै नकाराय नमः शिवाय ॥१॥

ॐ मन्दाकिनीसलिल चन्दनचर्चिताय नन्दीश्वरप्रमथनाथमहेश्वराय ।
मन्दारपुष्पबहुपुष्पविभूषिताय तस्मै मकाराय नमः शिवाय ॥२॥

ॐ शिवाय गौरीवदनाब्जवृन्द सूर्याय दक्षाध्वर नाशनाय ।
श्री नीलकण्ठाय वृषभध्वजाय तस्मै शिकाराय नमः शिवाय ॥३॥

ॐ वसिष्ठकंभोद्भवगौतमाद्य सुनीन्द्र देवार्चित शेखराय ।
चन्द्रार्कवैश्वानर लोचनाय तस्मै वकाराय नमः शिवाय ॥४॥

ॐ यक्षस्वरूपाय जटाधराय पिनाकहस्ताय सनातनाय ।
दिव्याय देवाय दिगम्बराय तस्मै यकाराय नमः शिवाय ॥५॥

पंचाक्षरमिदं स्तोत्रं यः पठेच्छिवसन्निधौ ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते ॥

इसके बाद भगवान शंकर की मूर्ति पर सछिद्रकलश तिपाई पर रखे या रस्सी के सहारे लटका दे तथा उसमें दूध-दही-घी-शक्कर-शहद आदि जल में मिलाकर एक या एकाधिक पदार्थों से

अविच्छिन्न धारा चलावे। कामनाभेद से अन्य वस्तुओं से भी अभिषेक कर सकता है। जैसे गन्धोदक-इक्षुरस इत्यादि।

इसके बाद रुद्राभिषेक (रुद्राष्टाध्यायी का पूरा पाठ) शतरुद्री से (केवल १०० मंत्रों से) अथवा नमकचमकात्मक सम्पूर्ण रुद्राभिषेक अपनी रुचि के अनुसार करे।

षडंग न्यासः—मनोजूतिरिति मन्त्रस्य बृहस्पति-ऋषिः बृहतीछन्दः बृहस्पतिर्देवता हृदयन्यासे जपे पाठे विनियोगः।

ॐ मनोजूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्य-बृहस्पतिर्य्यज्ञमिमन्तनो त्वरिष्टंय्यज्ञ ँ समिमन्दधातु विश्वेदेवासऽइहमा दयन्तामो ३ मप्रतिष्ठ॥ हृदयाय नमः।

अबोद्ध्यग्निरितिमंत्रस्य बुधगविष्ठिराऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः अग्निर्देवता शिरोन्यासे जपेपाठे विनियोगः।

ॐ अबोद्ध्यग्नि ँ समिधा जनानाम्प्रति धेनुमिवायतीमुषासम्। यह्वाऽइवप्प्रवया मुज्जिहानाः प्प्रभानवः सिस्त्रतेनाकमच्छ॥ शिरसे स्वाहा।

मूर्द्धानमितिमंत्रस्य भरद्वाजऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः अग्निर्देवता शिखान्यासे जपे पाठे विनियोगः॥

ॐ मूर्द्धानन्दिवोऽअरतिम्पृथिव्या-
व्वैश्वानरमृतऽआजातमग्निम् । कवि ꣳ
सम्राज मतिथिञ्जनानामासन्नापात्र-
ञ्जनयन्तदेवा ? । शिखायै वौषट् ॥

मर्म्माणितिमन्त्रस्य अप्रतिरथऋषिः, विराट् छन्दः मर्माणि देवता कवचन्यासे जपे पाठे विनियोगः ।

ॐ मर्माणिते वर्म्मणाच्छादयामिसो
मस्त्वा राजा मृतेनानुवस्ताम् । उरो-
र्व्वरीयो व्वरुणस्ते कृणो तु जयन्तन्त्वा नु
देवा मदन्तु ॥ कवचाय हुम् ॥

विश्वतश्चक्षुरितिमंत्रस्य विश्वकर्माभौवनऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः विश्वकर्मादेवता नेत्रन्यासे जपे पाठे विनियोगः ।

ॐ विश्वतश्चक्षुरुतव्विश्वतो मुखो
व्विश्वतो बाहुरुत व्विश्वतस्पात् ।
सम्बाहुब्भ्यान्धमति सम्पतत्रैर्द्यावा भूमी
जनयन्देवऽएकः ॥ नेत्रत्रयाय वौषट् ।

मानस्तोकेतिमन्त्रस्य परमेष्ठीऋषिः जगतीछन्दः एकरुद्रो देवता अस्त्र न्यासे जपे पाठे विनियोगः ।

ॐ मानस्तोके तनयेमानऽ आयुषिमानो गोषुमानोऽ अश्वेषुरीरिषः ॥ मानो व्वीरान्नुद्रभामिनो व्वधीर्हविष्मन्तः सदमित्वा हवामहे । अस्त्राय फट् ।

अथ प्रथमोऽध्यायः

श्रीगणेशाय नमः ॥ हरिः ॐ ॥

गणानान्त्वागणपतिं हवामहेप्प्रियाणान्त्वाप्प्रियपतिं हवामहे निधीनान्त्वा निधिपतिं हवामहे व्वसोमम ॥ आहमजानिगर्ब्भधमात्त्वमजासिगर्ब्भधम् ॥१॥

गायत्रीत्त्रिष्टुब्जगत्यनुष्टुप्पङ्क्त्या सह ॥ बृहत्त्युष्णिहा ककुप्सूचीभिः शम्म्यन्तुत्त्वा ॥२॥ द्विपदा याश्चतुष्पदास्त्रिपदा याश्चषट्पदाः ॥ व्विच्छन्दा याश्चसच्छन्दाः सूचीभिः शम्म्यन्तु-

त्त्वा ॥ ३॥ सहस्तोमा ᳪ सहच्छन्दसऽ-
आवृत÷ सहप्प्रमाऽऋषय ᳪ सप्पतदैव्या÷
पूर्व्वेषाम्पन्था मनुदृश्यधीराऽअन्वा-
लेभिरेरत्थ्योनरश्म्मीन् ॥४॥ ॐ
यज्जाग्ग्रतो दूरमुदैतिदैवन्तदुसुप्पतस्यत-
थैवैति ॥ दूरङ्गमज्योतिषाञ्ज्योतिरे-
कन्तन्न्मेमन÷ शिवसङ्कल्प्पमस्तु ॥५॥
येनकम्म्माण्यपसोमनीषिणोयज्ञे कृण्व-
न्तिविदथेषुधीरा ᳪ ॥ यदपूर्व्वंय्यक्षमन्त
ऽ प्प्रजानान्तन्न्मे मन÷ शिवसङ्कल्प्पमस्तु
॥६॥ यत्प्रज्ञानमुतचेतो धृतिश्चयज्ज्यो-
तिरन्तर मृतम्प्रजासु ॥ यस्म्मान्नऽऋते
किञ्चनकम्म्मंक्रियतेतन्न्मे मन÷ शिव-
सङ्कल्प्पमस्तु ॥७॥ येने दम्भूतम्भुवन-
म्भविष्य्यत्परिगृहीतममृतेन सर्व्वम् ॥ येन
यज्ञस्तायतेसप्तहोता तन्न्मे मन÷

शिवसङ्कल्प्पमस्तु ॥८॥ यस्मिन्नृच ऽ सामयजू ಲ षियस्मिन्प्रतिष्ठितारथना भाविवारा ऽ ॥ यस्मिँश्चित्त ह सर्व्व- मोतम्प्रजानान्तन्मेमनः शिवसङ्क- ल्प्पमस्तु ॥९॥ सुषारथिरश्श्वानिव- यन्मनुष्ष्यान्नेनीयतेभीशुभिर्व्वाजिनऽइव ॥ हृत्प्रतिष्ठंयदजिरञ्जविष्ठन्तन्मे मनः शिवसङ्कल्प्पमस्तु ॥१०॥

इति रुद्रे प्रथमोऽध्यायः ॥१॥

अथ द्वितीयोऽध्यायः

हरिः ॐ ॥ सहस्त्रशीर्षा पुरुष ऽ सहस्त्राक्ष ऽ सहस्त्रपात् ॥ सभूमि ह सर्व्वतस्पृत्त्वात्त्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥१॥ पुरुषऽएवेद ह सर्व्वंय्यद्भूतंय्यच- भाव्व्यम्॥ उतामृतत्त्वस्स्येशानोयद- न्नेनातिरोहति ॥२॥ एतावानस्यमहि-

मातोज्ज्यां याँश्चपूरुषः ॥ पादो-
ऽस्यव्विश्वा भूतानित्रिपादस्या-
मृतन्दिवि ॥३॥ त्रिपादूर्ध्वऽउदैत्पुरुषः
पादोस्येहाभवत्पुनः ॥ ततोव्विष्वङ्-
व्यक्रामत्साशनानशनेऽअभि ॥४॥ ततो
व्विराडजायत व्विराजोऽअधिपूरुषः ।
सजातोऽअत्यरिच्यतपश्चाद्भूमि-
मथोपुरः ॥५॥ तस्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतः
सम्भृतम्पृषदाज्ज्यम् ॥ पशूँस्ताँश्चक्रे
व्वायव्व्यानारण्यान्ग्राम्म्याश्च ये ॥६॥
तस्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतऽऋचः सामानि
जज्ञिरे ॥ छन्दांसिजज्ञिरेतस्म्माद्यजु-
स्तस्म्मादजायत ॥७॥ तस्म्मादश्वा-
ऽअजायन्त ये के चोभयादतः ॥
गावोहजज्ञिरेतस्म्मात्तस्माज्जाताऽ-
अजावयः ॥८॥ तं यज्ञम्बर्हिषिप्रौ-
क्षन्पुरुषञ्जातमग्रतः ॥ तेनदेवा-

ऽअयजन्तसाद्ध्याऽऋषयश्श्चये ॥९॥
यत्पुरुषं व्ययदधु ॰ कतिधा व्व्यकल्प्प-
यन् ॥ मुखङ्किमस्यासीत्किम्बाहूकि-
मूरूपादाऽउच्च्येते ॥१०॥ ब्ब्राह्मणोस्य
मुखमासीद्बाहूराजन्न्य÷ कृत ः ॥ऊरुत-
दस्ययद्वैश्यं÷ पद्भ्या ं शूद्रोऽअ-
जायत ॥११॥ चन्द्रमामनसो जात-
श्श्चक्षो ः सूर्य्योऽअजायत ॥ श्श्रोत्त्रा-
द्वायुश्श्चप्राणश्श्चमुखादग्निरजा-
यत ॥१२॥ नाभ्भ्याऽआसीदन्तरिक्ष
ः शीष्ण्र्णोद्यौ ः समवर्त्तत ॥ पद्भ्या-
म्भूमिर्द्दिश ः श्श्रोत्त्रात्तथालोकाँ २
अकल्प्पयन् ॥१३॥ यत्पुरुषेणहविषा
देवायज्ञमतन्न्वत ॥ व्वसन्तोऽस्या सीदा-
ज्ज्यंङ्ग्रीष्ममऽइध्म ः शरद्धवि ः ॥१४॥
सप्प्तास्यासन्परिधयस्त्रि ः सप्प्तसमिध÷

कृता॒ ॥ दे॒वा य॒द्यज्ञन्तन्वा॒नाऽअबध्न॒-न्पुरुषम्प॒शुम् ॥१५॥ य॒ज्ञेन यज्ञमय-जन्तदे॒वास्तानि॒धर्म्माणिप्रथ॒मान्या-सन् ॥ तेह॒ नाकम्महि॒मानः॑सचन्त॒ यत्र॒पूर्व्वेसा॒द्ध्याः॑ सन्ति॒ दे॒वाः॑ ॥१६॥ अ॒द्भ्यः॑ सम्भृतः॑ पृथि॒व्यैरसाच्च व्वि॒श्वकर्म्मणः॑ सम॑वर्त्त॒ताग्रे॑ ॥ तस्य॒त्त्वष्टा व्वि॒दधद्रू॒पमेति॒तन्मर्त्यस्य-दे॒वत्वमा॒जान॒मग्रे॑ ॥१७॥ व्वेदा॒हमे॒तं पुरुषं म॒हान्तमादि॒त्यवर्ण्णन्तमसः॑ प॒रस्तात्॑ ॥ त॒मेवव्विदित्त्वातिमृ॒त्यु-मेति॒नान्यः॑ पन्थाव्विद्यते॒ ऽयनाय ॥१८॥ प्र॒जापतिश्चरति॒गर्ब्भेऽअ॒न्तरजाय मानो बहु॒धाव्विजायते ॥ तस्य॒ योनि॒म्परि पश्यन्ति॒ धीरास्तस्मिन्हत॒स्त्थु॒र्भुवनानि॒ व्विश्वा ॥१९॥ यो दे॒वेभ्य॒ऽआ॒तपति॒-

योदेवानाम्पुरोहित ं ॥ पूर्व्वोयोदेवे-
ब्भ्योजातोनमोरुचायब्ब्राह्मये ॥२०॥
रुचम्ब्राह्मञ्जनयन्तोदेवाऽअग्ग्रेतदब्रु-
वन् ॥ यस्त्वैवम्ब्राह्मणो विद्यात्तस्य-
देवाऽ असन्वशे ॥२१॥ श्रीश्श्चतेलक्ष्मी-
श्श्चपत्न्या वहोरात्रेपाश्र्वेनक्षत्राणि
रूपमश्विनौ व्व्यात्तम् ॥इष्णान्निषाणा-
मुम्मऽइषाण सर्व्वलोकम्मऽइषाण॥२२॥

इति रुद्रे द्वितीयोऽध्याय: ॥२॥

अथ तृतीयोऽध्याय:

हरि: ॐ ॥ आशु ? शिशानो-
व्वृषभोनभीमो घनाघन ; क्षोभ-
णश्चर्षणीनाम् ॥ सङ्क्रन्दनोनिमिषऽ-
एकवीर ? शत ं सेनाऽअजयत्साक-
मिन्द्र: ॥१॥ सङ्कन्दनेना निमिषेण
जिष्णुनायुत्कारेणदुश्च्यवनेन धृष्णुना ॥

तदिन्द्रेण जयतत्त्सहद्ध्वंय्युधोन-
रऽइषुहस्तेनव्वृष्णा ॥२॥ सऽइषुहस्तैः
सनिषङ्गिभिर्व्वशीसꣳ स्त्रष्टासयुधऽइंद्रो-
गणेन ॥ सꣳ सृष्ट जित्त्सोमपाबाहु-
शर्द्ध्युग्ग्रधन्न्वाप्प्रतिहिताभिरस्ता ॥३॥
बृहस्प्पतेपरिदीयारथेनरक्षोहामित्त्राँ २
ऽअपबाधमानꣳ ॥ प्प्रभञ्जन्त्सेनाꣳ
प्प्रमृणोयुधाजयन्नस्म्माकमेदव्ध्य विता-
रथानाम् ॥४॥ बलविज्ञायस्त्थ विरꣳ
प्प्रवीरꣳ सहस्वान्वाजीसहमानऽउग्ग्रः ॥
अभिवीरोऽअभिसत्त्वासहोजाजैत्त्रमिन्द्रर-
थमातिष्ठ गोवित् ॥५॥ गोत्त्रभिदङ्गो-
विदंव्वज्ज्रबाहुञ्जयन्त्त मज्ज्मप्प्रमृण-
न्त्तमोजसा ॥ इमꣳ सजाताऽअनुवीर-
यद्ध्वमिन्द्रꣳ सखायोऽअसनुसꣳ
रभद्ध्वम् ॥६॥ अभिगोत्त्राणि

सहसागाहमानो दयोवीर ? शतमन्न्यु-
रिन्द्रः ॥ दुश्च्यवन ? पृतनाषाडयु-
द्ध्योस्माक ६ सेनाऽअवतुप्प्रयुत्सु ॥७॥
इन्द्रऽआसान्नेता बृहस्प्पतिर्द्दक्षिणायज्ञ ६
पुरऽएतु सोमः ॥ देवसेनानामभिभ-
ञ्जतीनाञ्जयन्तीनां मरुतोयन्त्वग्ग्रम् ॥८॥
इंद्रस्यव्वृष्ष्णो व्वरुणस्य राज्ञ-
ऽआदित्यानाम्मरुता ६ शर्द्धऽउग्ग्रम् ॥
महामनसाम्भुवनच्च्यवानाङ्घोषोदेवानाञ्जय-
तामुदस्त्थात् ॥९॥ उद्धर्षयमघवन्ना-
युधान्न्युत्सत्त्वनाम्मामकानांमना ६ सि ॥
उद्वृत्त्रहन्वाजिनांव्वाजिनान्न्युद्रथाना-
ञ्जयतांय्यन्तुघोषाः॥१०॥ अस्माकमिन्द्र
६ समृतेषुध्वजेष्ष्वस्माकंय्याऽइषवस्ता-
जयन्तु ॥ अस्म्माकंव्वीराऽउत्तरेभव-
न्त्वस्माँ २ ऽउदेवा ऽअवताहवेषु ॥११॥

अमीषाञ्चित्तं प्रतिलोभयन्ती गृहाणा-
ङ्गान्यप्वेपरेहि ॥ अभिप्रेहि निर्दहहृत्सु-
शोकैरन्धेनामित्रास्तमसा सचन्ताम्
॥१२॥ अवसृष्टापरापतशरव्येब्रह्मसं-
ऽ शिते ॥ गच्छांमित्त्रान्प्रपद्यस्वमामी-
षाङ्कञ्चनोच्छिषः ॥१३॥ प्रेताजयतान-
रइन्द्रोवः शर्म्मयच्छतु ॥ उग्गावः
सन्तुबाहवोना धृष्ष्यायथासथ ॥१४॥
असौ या सेना मरुतःपरेषामभ्ध्ये
तिनऽओजसास्पर्द्धमाना ॥ ताङ्गूहत-
तमसापव्रतेन यथामी अन्योऽ अन्यन्न
जानन् ॥१५॥ यत्रबाणाः सम्पतन्ति
कुमारा विशिखाऽइव ॥ तन्नऽइन्द्रो-
बृहस्पतिरदितिः शर्म्म यच्छतु
विश्श्वाहाशर्म्म यच्छतु ॥१६॥
मर्म्माणितेव्वर्म्मणाच्छादयामिसोमस्त्व

राजामृतेनानुवस्ताम् ॥ उरोर्व्वरीयो-
व्वरुणस्ते कृणोतु जयन्तन्त्वानु देवा मं
दन्तु ॥१७॥

इति रुद्रे तृतीयोऽध्यायः ॥३॥

अथ चतुर्थोऽध्यायः

हरिः ॐ ॥ व्विब्भ्राड्बृहत्पिबतु-
सोम्म्यम्मद्ध्वायुर्द्दधद्यज्ञपता वविर्हु-
तम् ॥ व्वातजूतोयोऽअभिरक्षतित्मना-
प्प्रजाः पुपोषपुरुधा व्विराजति ॥१॥
उदुत्यञ्जातवेदसन्देवंव्वहन्ति केतवः
दृशेव्विश्श्वायसूर्य्यम् ॥२॥ येनापावक
चक्षसाभुरण्यन्तञ्जनाँ २॥ ऽअनु ॥ त्वं
व्वरुण पश्यसि ॥३॥ दैव्व्या बद्ध्व-
र्य्यूऽआगत ६ रथेन सूर्य्यत्वचा ॥
मद्ध्वायज्ञ ६ समञ्जाथे ॥ तम्प्रत्क्कथा
यंव्वेनश्चित्त्रन्देवानाम् ॥४॥ तम्प्रत्क्कथा

पूर्व्वथा विश्वथेमथाज्ज्येष्ठता-
तिम्बर्हिषदं स्वर्व्विदम् ॥ प्रतीचीनं
व्वृजनन्दोहसेधुनिमाशुञ्जयन्तमनु-
यासुव्वर्द्धसे ॥५॥ अयंव्वेनश्चोदय-
त्पृश्निगर्ब्भाज्ज्योतिर्ज्जरायूरजसो-
व्विमाने ॥ इममपांसङ्गमे सूर्य्यस्य
शिशुन्नविप्प्रामतिभीरिहन्ति ॥६॥
चित्रन्देवानामुदगादनीकञ्चक्षुर्मि-
त्रस्यव्वरुणस्याग्नेः ॥ आप्प्राद्या-
वापृथिवीऽअन्तरिक्षः सूर्य्यऽआत्मा
जगतस्तस्थुषश्च ॥७॥ आनऽइडाभि-
र्व्विदथेसुशस्तिव्विश्वानरः सवितादेव-
ऽएतु ॥ अपियथा युवानोमत्सथानो-
व्विश्वञ्जगदभिपित्त्वे मनीषा ॥८॥
यदद्यकच्चव्वृत्रहन्नुदगाऽअभिसूर्य्य ॥
सर्व्वन्तदिन्द्रतेव्वशे ॥९॥ तरणिर्व्विश्व-

दर्शतोज्ज्योतिष्कृदसिसूर्य्य ॥ विश्श्व-
माभासिरोचनम् ॥१०॥ तत्सूर्य्यस्य देव-
त्वन्तन्महित्वम्मद्ध्याकर्त्तोर्व्वितत ६
सञ्जभार ॥ यदेदयुक्त हरितः सधस्त्था-
दाद्रात्त्री वासस्तनुतेसिमसम्मै ॥११॥
तन्मित्त्रस्यव्वरुणस्याभिचक्षेसूर्य्यो-
रूपङ्कृणुतेद्योरुपस्त्थे ॥ अनन्त
मन्न्यदर्द्दुशदस्यपाजः कृष्ष्णमन्न्यद्धरितः
सम्भरन्ति ॥१२॥ बण्णमहाँ २॥ ऽअसि
सूर्य्य बडादित्त्यमहाँ २॥ ऽअसि ॥ महस्ते
सतो महिमा पनस्यतेद्धादेवमहाँ २॥
ऽअसि ॥१३॥ बट्सूर्य्यश्रवसामहाँ २॥
ऽअसि सत्त्रा देवमहाँ २॥ ऽअसि ॥
मन्हादेवानामसुर्य्यः पुरोहितौव्विभु-
ज्ज्योतिरिदाब्भ्यम् ॥१४॥ श्रायन्ताऽइव
सूर्य्यं विश्श्वेदिन्द्रस्य भक्षत ॥ व्वसूनि-

जाते जनमानऽओजसाप्प्रतिभागन्न-
दीधिम ॥१५॥ अद्यादेवाऽउदिता
सूर्य्यस्य निरꣳहसः पिपृतानिरवद्यात् ॥
तन्नो मित्त्रो व्वरुणोमामहन्तामदितिꣳ
सिन्धुः पृथिवीऽउतद्यौः ॥१६॥ आ
कृष्णेनरजसाव्वर्त्तमानो निवेशयन्न-
मृतम्मर्त्यञ्च ॥ हिरण्ययेनसवितारथेना
देवो यातिभुवनानि पश्यन् ॥१७॥

इति रुद्रे चतुर्थोऽध्यायः ॥४॥

अथ पञ्चमोऽध्यायः

हरिः ॐ॥ नमस्तेरुद्द्रमन्न्यवऽउतो
तऽइषवेनमः बाहुब्भ्यामुत ते नमः ॥१॥
या तेरुद्द्र शिवातनूरघोरापापकाशिनी ॥
तयानस्तन्न्वा शन्तमयागिरिशन्ताभिचा
कशीहि ॥२॥ यामिषुङ्गिरि शन्तहस्ते
विभर्ष्यस्तवे ॥ शिवाङ्गिरित्रताङ्कुरु

मा हिंꣳसी ꣳ पुरुषञ्जगत् ॥३॥ शिवेन
व्वचसात्त्वा गिरिशाच्छाव्वदामसि ॥
यथानꣳ सर्व्वमिज्जगदयक्ष्मꣳ सुमनाऽ-
असत् ॥४॥ अद्ध्यवोचदधिवक्ता-
प्प्रथमोदैव्व्यो भिषक् ॥ अहींश्चसर्वा-
ञ्जम्भयन्त्सर्व्वाँश्चयातुधान्न्योधराचीꣳ
परासुव ॥५॥ असौयस्ताम्म्रोऽअरुण-
ऽउतबब्भ्रुꣳ सुमङ्गलः ॥ ये चैनꣳ
रुद्द्राऽअभितोदिक्षुश्रिताः सहस्र-
शोवैषाꣳ हेडऽईमहे ॥६॥ असौ
योऽवसर्प्पति नीलग्ग्रीवो व्विलोहितः ॥
उतैनङ्गोपाऽअदृश्श्रन्नदृश्श्रन्नुदहार्य्यः
ꣳ सदृष्ट्वोमृडयातिनꣳ ॥७॥ नमोऽस्तु
नीलग्ग्रीवायसहस्राक्षायमीढुषे ॥
अथोयेऽअस्य सत्त्वानोऽहन्तेब्भ्योऽ
करन्नमः ॥८॥ प्प्रमुञ्च धन्न्वनस्त्वमुभयो

रात्न्योंज्ज्यीम् ॥ याश्चतेहस्तऽइषव

परातांभगवोव्वप ॥९॥ विज्ज्यन्धनुः

कपर्द्दिनो व्विशल्ल्योबाणवाँ२ ऽउत ॥

अनेशन्नस्ययया ऽइषवऽआभुरस्यनिष-

ङ्गधि ? ॥१०॥ या तैहेतिम्मींढुष्टमऽहस्ते

बभूवतेधनुः ॥ तयास्म्मान्विश्श्व-

तस्त्वमयक्ष्म्मया परिभुज ॥११॥ परिते-

धन्न्वनोहेतिरस्म्मान्न्वृणक्तुव्विश्श्वतः ॥

अथो यऽइषुधिस्तवारेऽअस्म्मन्निधे-

हितम् ॥१२॥ अवतत्त्यधनुष्ट्व ँ

सहस्राक्षशतेषुधे ॥ निशीर्य्यशल्ल्याना-

म्मुखा शिवो नः सुमना भव ॥१३॥

नमस्तऽआयुधायानातताय धृष्ष्णवे ॥

उभाब्भ्यामुततेनमोबाहुब्भ्यान्त वधन्न्वने

॥१४॥ मानो महान्तमुतमानोऽअर्ब्भ-

कम्मा नऽउक्षन्तमुत मा नऽउक्षितम् ॥ मा

नो व्वधी ँ पितरम्मोत मातरम्मानः
प्प्रियास्तन्न्वोरुद्द्ररीरिष ँ ॥१५॥
मानस्तोके तनये मा नऽआयुषि मा नो
गोषु मा नोऽअश्श्वेषुरीरिष ँ॥ मा नोव्वीरा
न्नुद्द्रभामिनोव्वधीर्हे विषम्मन्त ँ ॥
सदमित्त्वा हवामहे ॥१६॥ नमो
हिरण्ण्यबाहवे । सेनान्न्ये दिशाञ्चपतये
नमोनमोव्वृक्षेब्भ्यो हरिकेशेब्भ्य ँ
पशूनाम्पतयेनमो नमः ॥ शष्प्पि-
ञ्जरायत्त्विषीमते पथीनाम्पतये नमो नमो
हरिकेशायो पवीतिनेपुष्टानाम्पतये नमो
नमो बब्भ्लुशाय॥१७॥ नमोबब्भ्लुशाय।
व्व्याधिनेन्नानाम्पतये नमो नमो भवस्य
हेत्त्यैजगताम्पतये नमोनमोरुद्द्रायाा
ततायिनेक्षेत्त्राणाम्पतये नमो नमः
सूतायाहन्त्येव्वनानाम्पतये नमोनमोरो-

हिताय ॥१८॥ नमो रोहितायस्थपत-
येव्वृक्षाणाम्पतये नमो नमो भुवन्तये
वारिवस्कृतायोषधीनाम्पतये नमो
नमोमन्त्रिणेवाणिजाय कक्षाणाम्पतये
नमो नमऽउच्चैर्घोषायाक्क्रन्दय ते
पत्तीनाम्पतये नमो नमः कृत्स्ना-
यतया ॥१९॥ नमः कृत्स्नायतया ॥
धावते सत्त्वनाम्पतये नमो नमः
सहमानाय निव्व्याधिनऽआव्याधिनी
नाम्पतये नमो नमो निषङ्गिणेककुभा-
यस्तेनानाम्पतये नमोनमोनिचेरवेपरिच
रायारण्ण्यानाम्पतये नमोनमोव्वञ्चते
॥२०॥ नमोव्वञ्चते । परिव्वञ्चतेस्तायू-
नाम्पतये नमोनमो निषङ्गिणऽइषुधिमते
तस्क्कराणाम्पतये नमो नमः
सृकायिब्भ्योजिघांᳪसद्भ्यो मुष्ण-

ताम्पतयेनमो नमो सिमद्भ्योनक्त-
ञ्चरद्भ्यो विकृन्तानाम्पतये
नमः ॥२१॥ नमऽउष्णीषिणे ॥ गिरिच-
रायकुलुञ्चानाम्पतये नमो नमऽइषु
मद्भ्योधन्वायिभ्यश्च वो नमोनमऽ
आतन्वानेभ्यः प्रतिदधानेभ्यश्च वो
नमोनमऽआयच्छद्भ्यो स्यद्भ्यश्चवोनमो
नमो विसृजद्भ्यः ॥२२॥ नमोवि-
सृजद्भ्योविध्यद्भ्यश्च वो नमो नमः
स्वपद्भ्यो जाग्रद्भ्यश्चवोनमोनमः
शयानेभ्यऽआसीनेभ्यश्च वो
नमोनमस्तिष्ठद्भ्योधावद्भ्यश्चवो नमो
नमः सभाभ्यः ॥२३॥ नमः
सभाभ्यः। सभापतिभ्यश्चवोनमो-
नमोऽश्वेभ्योऽश्वपतिभ्यश्चवोनमो
नमऽआव्याधिनीभ्यो विविध्यन्ती-

भ्यश्च्श्च्वो नमोनमऽउगगणाभ्यस्तृ हतीभ्यश्च्श्च्वो नमोनमोगणेभ्य÷ ॥२४॥

नमोगणेभ्यो । गणपतिभ्यश्च्श्च्वो नमोनमो व्व्रातेभ्योव्व्रातपतिभ्यश्च्श्च्वो नमोनमो गृत्सेभ्योगृत्सपतिभ्यश्च्श्च वो नमो नमो व्विरूपेभ्यो व्विश्वरूपेभ्यश्च्श्च्वो नमोनम ँ सेनाभ्य ँ ॥२५॥

नम ँ सेनाभ्य ँ । सेनानिभ्यश्च्श्च्वोनमोनमो रथिभ्योऽअरथेभ्यश्च्श्च वो नमो नम÷ क्षत्तृभ्य÷सङ्ग्रहीतृभ्यश्च्श्च वो नमो नमो महद्भ्योऽअर्भकेभ्यश्च्श्च वो नम÷ ॥२६॥

नमस्तक्षभ्यो । रथकारेभ्यश्च्श्च्वो नमो नम ँ कुलालेभ्य ँ कर्म्मारेभ्यश्च्श्च वो नमो नमो निषादेभ्य÷पुञ्जिष्ठेभ्यश्च्श्च्वो नमो नम÷श्वनिभ्योमृग-

युब्भ्यश्श्च वो नमो नम ᳚ श्वब्भ्य॑: ॥२७॥
नम ᳚ श्श्वब्भ्य॒: । श्वपतिब्भ्यश्श्च वोन-
मोनमोभवायचरुद्रायचनम॑: शर्व्वाय
चपशुपतयेचनमोनीलग्ग्रीवाय-
चशितिकण्ठायचनम॑: कपर्द्दिने ॥२८॥
नम॑:कपर्द्दिने । चव्व्युप्तकेशायचनम॑:
सहस्राक्षायच शतधन्न्वनेचनमोगिरि-
शयाय च शिपिविष्टायच नमो मीढुष्ट्ट-
मायचेषुमते च नमो ह्रस्वाय ॥२९॥ नमो
ह्रस्वाय । चव्वामनायच नमोबृहते-
चव्वर्षीयसे च नमोवृद्धाय च सवृधे च
नमोग्ग्र्यायच प्प्रथमायचनमऽ-
आशवे ॥३०॥ नमऽआशवे । चाजि-
रायच नम ᳚ शीग्घ्र्याय च शीब्भ्याय च
नमऽऊम्म्र्यायचावस्वन्न्याय च
नमोनादेयायचद्वीप्प्यायच ॥३१॥

नमोऽज्ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च नमः पूर्व्वजाय चापरजाय च नमो मद्ध्यमाय चापगल्भाय च नमो जघन्न्याय च बुध्न्याय च नमः सोभ्याय ॥३२॥ नमः सोभ्याय। च प्प्रतिसर्य्याय च नमो याम्म्याय च क्षेम्म्याय च नमः श्लोक्याय चावसान्न्याय च नमऽउर्व्वर्य्याय च खल्ल्याय च नमो वन्न्याय ॥३३॥ नमो वन्न्याय। च कक्ष्याय च नमः श्रवाय च प्प्रतिश्रवाय च नमऽआशुषेणाय चाशुरथाय च नमः शूराय चावभेदिने च नमो बिल्मिने ॥३४॥ नमो बिल्मिने। च कवचिने च नमो वर्म्मिणे च वरूथिने च नमः श्श्रुताय च श्श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्याय चाहनन्न्याय च नमो धृष्ष्णवे ॥३५॥ नमो धृष्ष्णवे।

चप्प्रमृशाय॑ च॒ नमो॑ निष॒ङ्गिणे॑चेषु-
धि॒मते॑च॒नम॑स्ती॒क्ष्णेष॑वे चायु॒धिने॑च
नम॑ःस्वायु॒धाय॑ च सु॒धन्व॑नेच ॥३६॥
नम॒ऽस्रु॒त्या॑य । चप॒थ्या॑यचन॒म॒ऽ
काट्या॑य च नीप्प्या॑यच॒नम॒ऽकूल्ल्या॑य
च सर॒स्या॑यच॒नमो॑नाद्॒याय॑ च
वैश॒न्ता॑य॑ च॒ नम॒ऽ कूप्प्या॑य ॥३७॥ नम॒
ऽकूप्प्या॑य चाव॒ट्ट्या॑यच॒नमो॑ व्वीद्ध्र्या॑य
चात॒प्प्या॑यच॒नम॒ो मेग्घ्या॑यच व्विद्द्यु-
त्या॑य च॒ नम॒ो व्वर्ष्या॑यचाव॒र्ष्या॑य
च॒नमो व्वात्या॑य ॥३८॥ नम॒ो व्वात्या॑य ।
च॒रेष्म्या॑यच॒नमो॑ व्वास्तव्व्या॑यचवा-
स्तुपाय॑च॒ नम॒ऽ सोमा॑ यचरुद्द्राय॑च॒
नम॑स्ता॒म्म्राय॑चारु॒णाय॑च॒ नम॑ः शङ्ग॑वे
॥३९॥ नम॑ः श॒ङ्गवे॑ । चपशु॒पत॑येच॒नम॑
ऽउग्ग्राय॑चभी॒माय॑च॒ नमो॑ग्ग्रेव॒धाय॑च-

दूरेवधायचनमोहन्त्रेचहनीयसेचनमोवृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यो नमस्ताराय ॥४०॥ नमः शम्भवाय । चमयोभवायचनमः शङ्-करायचमयस्करायचनमः शिवाय-चशिवतराय च ॥४१॥ नमः पार्य्याय । चावार्य्याय च नमः प्रतरणाय चोत्त-रणायच नमस्तीर्त्थ्यायच कूल्ल्याय-चनमः शष्प्यायचफेन्न्यायच नमः सिकत्त्याय ॥४२॥ नमः सिकत्याय । चप्रवाह्य्यायच नमः किꣳ शिलायच-क्षयणायचनमः कपर्द्दिनेचपुलस्तये च नमऽइरिण्याय चप्रपत्थ्यायच नमोव्व्र-ज्ज्याय ॥४३॥ नमो व्व्रज्ज्याय । चगोष्ठ्यायच नमस्तल्प्यायचगेह्-यायचनमो हृदय्यायच निवेष्प्याय च नमः काट्ट्यायचगह्वरेष्ठायच नमः

शुष्क्याय ॥४४॥ नम॑ः शुष्क्याय । चहरित्यायच नम॑ः पा ंसव्व्याय चरजस्यायच नमोलोप्प्याय चोलप्प्या- यचनमऽऊर्व्व्यायचसूर्व्व्यायचनम॑ः पर्णाय ॥४५॥ नम॑ः पर्णाय । चपर्णशदायचनमऽउद्गुरमाणाय चाभिघ्नेतचनमऽआखिदतेचप्प्रखिदते च नम॑ऽइषुकृद्भ्योधनुष्कृद्भ्यश्श्चवो- नमोनमोव ः किरिकेभ्योदेवाना ः हृदयेभ्योनमोव्विचिन्वत्केभ्योनमोव्वि क्षिणत्केभ्योनमऽआनिर्हतेभ्य॑ः ॥४६॥ द्रापेऽअन्धसस्प्पते दरिद्रनीललोहित ॥ आसाम्प्रजानामेषाम्पशूनाम्माभेर्म्मारोङ्मोच नः किञ्चनाममत् ॥४७॥ इमारुद्राय । तवसेकपर्द्दिनेक्षयद्वीरायप्रभरामहेमती ः ॥ यथाशमसद्द्विपदे चतुष्प्पदेव्वि-

श्वम्पुष्टङ्ग्रामेऽअस्मिन्ननातुरम् ॥४८॥
यातेरुद्द्रशिवातनू ; शिवाव्विश्श्वाहा
भेषजी ॥ शिवारुतस्यभेषजी तयानो
मृडजीवसे ॥४९॥ परिनोरुद्द्रस्यहेति-
र्व्वृर्णक्तुपरित्वेषस्यदुर्म्मतिरघायो ः ॥
अवस्त्थिरामघवद्भ्यस्तनुष्व्वमीढ्-
वस्तोकायतनयायमृड ॥५०॥ मीढु-
ष्टमशिवतम । शिवोनः सुमनाभव ॥
परमेव्वृक्षऽआयुधन्निधायकृत्तिंव्वसान
ऽआचरपिनाकम्बिभ्रदागहि ॥५१॥
व्विकिरिद्द्रव्विलोहित । नमस्तेऽअस्तु-
भगवः ॥ यास्ते सहस्त्रः हेतयोन्न्य-
मस्म्मन्निवपन्तुताः ॥५२॥ सहस्त्राणि-
सहस्त्रशोबाह्वोस्तव हेतयः ॥
तासामीशानोभगवः पराचीना मुखा-
कृधि ॥५३॥ असङ्ख्यातासहस्त्राणि

येरुद्द्राऽअधिभूम्म्याम् ॥ तेषा

ꣳसहस्त्रयोजनेवधन्न्वानितन्न्मसि ॥५४॥

अस्म्मिन्न्महत्त्यर्णण्र्णवेन्तरिक्षेभवाऽअधि ॥

तेषाꣳ सहस्त्रयोजनेवधन्न्वानि-

तन्न्मसि ॥५५॥ नीलग्ग्रीवाः शिति-

कण्ठादिवꣳ रुद्द्राऽउपश्शिश्रताः ॥ तेषाꣳ

सहस्त्रयोजनेवधन्न्वानितन्न्मसि ॥५६॥

नीलग्ग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्व्वाऽअ-

धःक्षमाचराः ॥ तेषाꣳ सहस्त्रयोजनेव-

धन्न्वानितन्न्मसि ॥५७॥ येव्वृक्षेषु-

शष्प्पिञ्ज्जरा नीलग्ग्रीवाव्विलोहिताः ॥

तेषाꣳ सहस्त्रयोजनेवधन्न्वानित-

न्न्मसि ॥५८॥ ये भूतानामधिप-

तयोव्विशिखासः कपर्द्दिनः तेषाꣳ ।

सहस्त्रयोजनेवधन्न्वानितन्न्मसि ॥५९॥

येपथाम्पथिरक्षयऽऐलवृदाऽआयुर्य्युधः ॥

तेषाꣳ सहस्त्रयोजनेवधन्न्वानि-
तन्न्मसि ॥६०॥ ये तीर्त्थानि ।
प्प्रचरन्तिसृकाहस्तानिषङ्गिणः ॥ तेषाꣳ
सहस्त्रयोजनेवधन्न्वानितन्न्मसि ॥६१॥
येन्न्नेषु । व्विविद्ध्यन्ति पात्त्रेषु पिबतो
जनान् ॥ तेषाꣳ सहस्त्रयोजनेवध-
न्न्वानितन्न्मसि ॥६२॥ यऽएतावन्तश्श्च
भूयाꣳ सश्श्चदिशोरुद्द्राव्वितस्त्थिरे ॥
तेषाꣳ सहस्त्रयोजनेवधन्न्वानितन्न्मसि॥६३॥
नमोस्तु । रुद्द्रेब्भ्योये दिवि-
येषांव्वर्षमिषवः ॥ तेब्भ्यो दशप्प्रा
चीर्द्दशदक्षिणा दशप्प्रतीचीर्द्दशोदी-
चीर्द्दशोद्ध्वाः ॥ तेब्भ्योनमोऽअस्तुते
नोव्वन्तुते नोमृडयन्तुतेयन्द्विष्म्मो
यश्श्चनोद्वेष्टितमेषाञ्जम्भेदध्मः ॥६४॥
नमोस्तुरुद्द्रेब्भ्यो येन्तरिक्षे येषां व्वातऽ-

ईषवः ॥ तेभ्योदशप्प्राचीर्द्दशदक्षिणा
दशप्प्रतीचीर्द्दशोदीचीर्द्दशोर्द्ध्वाः ॥
तेभ्यो नमोऽअस्तु ते नोऽव्वन्तु ते
नोमृडयन्तुतेयन्द्विष्मो य्यश्श्चनोद्वेष्टि-
तमेषाञ्जम्भेदध्मः ॥६५॥ नमोस्तु ।
रुद्द्रेभ्यो येपृथिव्व्यां य्येषामन्नमिषवः।
तेभ्योदशप्प्राचीर्द्दशदक्षिणा दशप्प्रती-
चीर्द्दशोदीचीर्द्दशोर्द्ध्वाः । तेभ्योनमो-
ऽअस्तु ते नोवन्तु ते नोमृडयन्तु ते
यन्द्विष्मो यश्च्चनोद्वेष्टितमेषा-
ञ्जम्भेदध्मः ॥६६॥

इति रुद्रेपञ्चमोऽध्यायः ॥५॥

यदि आप शतरुद्री का पाठ करना चाहते हैं तो कृपया इसके बाद पुनः १६ मंत्रों का पाठ करके परिशिष्ट नं. ६ पृष्ठ नं. १९२ से शतरुद्री का पाठ कर सकते हैं।

❖

अथ षष्ठोऽध्यायः

हरिः ॐ ॥ व्वयᳪं सोम व्व्रते तव मनस्तनूषुबिब्भ्रतः ॥ प्रजावन्तः सचेमहि ॥१॥ एषते । रुद्द्रभागः सहस्वस्राम्बिकया तञ्जुषस्वस्वाहै षतेरुदद्रभागऽआखुस्तेपशुः ॥२॥ अव रुदद्रमदीमह्यव देवन्त्र्यम्बकम् ॥ यथानो व्वस्यं सस्क्करद्द्यथानः श्श्रेयस-स्क्करद्यथानो व्यवसाययात् ॥३॥ भेषजमसि भेषजङ्गवेश्श्वाय पुरुषाय भेषजम् ॥ सुखम्मेषाय मेष्यै ॥४॥ त्र्यं-म्बकंय्यजामहे । सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम् । उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्म्मुक्षीय मामृतात् ॥ त्र्यम्बकंय्यजामहे सुगन्धि-म्पतिवेदनम् ॥ उर्व्वारुकमिव बन्धना-दितो मुक्षीय मामुतः ॥५॥ एतत्ते ।

रुद्द्रावसन्तेन परो मूजवतोतीहि ॥ अवततधन्वा पिनाकावसꣳ कृत्तिवासाऽअहिꣳसन्नꣳ शिवोतीहि ॥६॥ त्र्यायुषञ्जमदग्नेꣳ कश्यपस्यत्र्यायुषम् । यद्देवेषु त्र्यायुषन्तन्नोऽअस्तु त्र्यायुषम् ॥७॥ शिवोनामासि स्वधितिस्ते पिता नमस्तेऽअस्तुमामाहिꣳसीꣳ ॥ निर्वर्त्तयाम्यायुषेन्नाद्यायप्प्रजननायरायस्पोषाय सुप्प्रजास्त्वाय सुवीर्य्याय ॥८॥

इति रुद्रेषष्ठोऽध्यायः ॥६॥

अथ सप्तमोऽध्यायः

हरिꣳ ॐ ॥ उग्रश्च । भीमश्चद्ध्वान्तश्चधुनिश्च । सासह्वाँश्चाभियुग्वाचविक्षिपꣳ स्वाहा ॥१॥ अग्निꣳ हृदयेनाशनिꣳ हृदयाग्ग्रेणपशुपतिङ्कृत्स्नहृदयेन भवं य्यक्ना ॥ शर्व्वम्मतस्न्ना-

ब्भ्यामीशानम्मन्न्युना महादेवमन्त ः पर्शव्व्योनोग्ग्रन्देवंव्वनिष्ठुनाव्वि- सिष्ठुहनु ः शिङ्गीनिकोश्याब्भ्याम् ॥२॥ उग्गँल्लोहितेन मित्र ः सोव्व्रत्येनरुद्र- न्दौव्व्रत्येनेन्द्रम्प्रक्क्रीडेनमरुतो बलेन साद्ध्यान्प्रमुदा ॥ भवस्य कण्ठ्यं ः रुद्द्रस्यान्त ः पार्श्व्यम्महादेवस्य यकृ- च्छर्व्वस्यव्वनिष्ठुः पशुपतेः पुरीतत् ॥३॥ लोमब्भ्य ः स्वाहा ॥ लोमब्भ्य ः स्वाहा त्वचेस्वाहा त्वचेस्वाहा लोहिताय स्वाहा लोहितायस्वाहा मेदोब्भ्य ः स्वाहा मेदोब्भ्य ः स्वाहा । माᳬसेब्भ्य ः स्वाहा माᳬसेब्भ्य ः स्वाहास्नावब्भ्य ः स्वाहा स्नावब्भ्य ः स्वाहा स्त्थब्भ्य ः स्वाहास्त्थब्भ्यःस्वाहा मज्जब्भ्य ः स्वाहा मज्जब्भ्य स्वाहा ॥ रैतसेस्वाहा पायवे

स्वाहा ॥४॥ आयासायस्वाहा प्प्रायासायस्वाहा संय्यासायस्वाहा व्वियासाय स्वाहोद्यासाय स्वाहा ॥ शुचे स्वाहा शोचतेस्वाहा शोचमानाय स्वाहा शोकाय स्वाहा ॥५॥ तपसे स्वाहा । तप्प्यते स्वाहा तप्प्यमानायस्वाहा तप्प्ताय स्वाहा घर्म्माय स्वाहा । निष्कृत्त्यै स्वाहा प्प्रायश्चित्त्यै स्वाहा भेषजायस्वाहा ॥६॥ यमाय स्वाहान्तकाय स्वाहा मृत्यवे स्वाहा ॥ ब्ब्रह्मणेस्वाहा ब्ब्रह्महत्यायै स्वाहा व्विश्वेब्भ्योदेवेब्भ्य ं स्वाहा द्यावापृथिवीब्भ्या ं स्वाहा ॥७॥

इति रुद्रे सप्तमोऽध्यायः ॥७॥

अथाष्टमोऽध्यायः

हरिः ॐ ॥ व्वाजश्च ।

मेप्रसवश्चमेप्रयतिश्च मे प्रसितिश्च मे धीतिश्च मे क्रतुश्च मे स्वरश्च मे श्लोकश्च मे श्रवश्च मे श्श्रुतिश्च मे ज्ज्योतिश्च मे स्वश्च मे यज्ञेनकल्प्पन्ताम् ॥१॥ प्राणश्च। मेपानश्च मे व्व्यानश्च मे सुश्च मे चित्तञ्चमऽआधीतञ्च मे व्वाक्च मे मनश्चमे चक्षुश्च्चमेश्श्रोत्रञ्चमे दक्षश्च मे बलञ्चमे यज्ञेनकल्प्पन्ताम् ॥२॥ ओचश्च। मेसहश्च्चमऽआत्मा च मे तनूश्च मे शर्म्मचमे व्वर्म्म च मेऽङ्गानिच मेस्थीनि चमे परू ᳪ षिचमेशरीराणिच मऽआयुश्चमेजराच मे यज्ञेनकल्प्प-न्ताम् ॥३॥ ज्ज्यैष्ठयञ्च ॥ मऽआधिपत्यञ्च मेमन्न्युश्चमे भामश्च मेमश्चमेम्भश्चमे जेमाच मे महिमाचमे व्वरिमाचमे प्प्रथिमाचमे व्वर्षिमा-

चमेद्द्राघिमाचमेव्वृद्धञ्चमेव्वृद्धिश्च मे यज्ञेनकल्प्पन्ताम् ॥४॥ (न. १) ॥ सत्यञ्च । मे श्रद्धा च मे जगच्चमे धनञ्चमे विश्श्वञ्चमे महश्श्चमे क्रीडाच मे मोदश्चमे जातञ्चमे जनिष्ष्यमाणञ्चमे सूक्त्तञ्चमे सुकृतञ्चमेयज्ञेनकल्प्पन्तानम् ॥५॥ ऋ तञ्च । मेमृतञ्चमेयक्ष्मञ्चमेनामयच्चमे जीवातुश्चमे दीर्घायुत्वञ्च मेऽनमित्रञ्च मेभयञ्च मे सुखञ्चमेशयनञ्चमे सूषाश्च मे सुदिनञ्च मे यज्ञेनकल्प्पन्ताम् ॥६॥ यन्ताच । मेधर्त्ता च मेक्षेमश्च मे धृतिश्चमेविव्वश्श्वञ्चमे महश्च मे संव्विच्च मे ज्ञात्रञ्च मे सूश्चमेप्रसूश्श्चमे सीरञ्चमे लयश्च मे यज्ञेनकल्पन्ताम् ॥७॥ शञ्चमे । मयश्चमे प्प्रियञ्च मेनुकामश्श्चमे कामश्चमे

सौमनसश्च्मे भगश्च मे द्द्रविणञ्च मेभद्द्रञ्चमेश्रेयश्च मे व्वसी यश्चमे यशश्च मे यज्ञेनकल्प्पन्ताम् ॥८॥ (नं. २) ॥ उर्क्कँच । मे सूनृताच मे पयश्च्च मे रसश्च्च मे घृतञ्चमे मधु च मे सग्ग्धिश्च्च मे सपीतिश्च्च मे कृषिश्च्च मे व्वृष्टिश्च मे जैत्रञ्चमऽऔद्भिद्यञ्च मे यज्ञेनकल्प्पन्ताम् ॥९॥ रयिश्च्च । मेरायश्चमे पुष्टञ्चमे पुष्टिश्च्चमे व्विभुचमे प्रभुचमे पूर्णञ्चमे पूर्णतरञ्चमे कुयवञ्चमे क्षितञ्चमे न्नञ्चमे क्षुच्चमे यज्ञेनकल्प्पन्ताम् ॥१०॥ व्वित्तञ्च । मे व्वेद्यञ्चमे भूतञ्चमे भविष्यच्चमे सुगञ्चमे सुपत्थ्यञ्चमेऽऋद्धञ्चमऽ-ऋद्धिश्च्चमे क्लृप्तञ्चमे क्लृप्तिश्च मे मतिश्चमे सुमतिश्च्चमे यज्ञेन-

कल्पन्ताम् ॥११॥ व्रीहयश्च । मे यवाश्च मे माषाश्च मे तिलाश्च मे मुद्गाश्च मे खल्वाश्च मे प्रियङ्गवश्च मेऽणवश्च मे श्यामाकाश्च मे नीवाराश्च मे गोधूमाश्च मे मसूराश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥१२॥ (नं० ३) । अश्मा च । मे मृत्तिका च मे गिरयश्च मे पर्वताश्च मे सिकताश्च मे वनस्पतयश्च मे हिरण्यञ्च मे यश्च मे श्यामञ्च मे लोहञ्च मे सीसञ्च मे त्रपु च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥१३॥ अग्निश्च । म आपश्च मे वीरुधश्च म ओषधयश्च मे कृष्टपच्याश्च मे कृष्टपच्याश्च मे ग्राम्याश्च मे पशव आरण्याश्च मे वित्तञ्च मे वित्तिश्च मे भूतञ्च मे भूतिश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥१४॥

व्वसुच । मेव्वसतिश्चमे कर्म्मचमे शक्ति-श्चमेर्त्थश्चमऽएमश्चमऽ इत्याचमे गतिश्च मे यज्ञेनकल्प्पन्ताम् ॥१५॥ (न० ४) ॥ अग्निश्च्च । मऽइन्द्रश्च्चमे सोमश्च्च मऽइन्द्रश्चमे सविताचमऽइन्द्रश्चमे सरस्वतीच मऽइन्द्रश्चमे पूषाचम-ऽइन्द्रश्चमे बृहस्प्पतिश्च मऽइन्द्रश्च मे यज्ञेनकल्प्पन्ताम् ॥१६॥ मित्रश्च । मऽइन्द्रश्चमे व्वरुणश्च्चमऽइन्द्रश्च्चमे धाताचमऽइन्द्रश्च्चमे त्वष्टाचमऽइन्द्रश-चमे मरुतश्चमऽइन्द्रश्चमे व्विश्वेचमे-देवा ऽइन्द्रश्च मे यज्ञेनकल्प्पन्ताम् ॥१७॥ पृथिवीच । मऽइन्द्रश्चमेऽन्तरिक्षञ्चम-ऽइन्द्रश्चमे द्यौश्च मऽइन्द्रश्चमे समाश्चमऽइन्द्रश्चमे नक्षत्राणि-चमऽइन्द्रश्चमे दिशश्चमऽइन्द्रश्च्च मे

यज्ञेनकल्पन्ताम् ॥१८॥ (न० ५) ॥

अꣳशुश्च । मे रश्मिश्चमेदाभ्यश्च मे धिपतिश्चमऽउपाꣳशुश्चमेऽन्तर्य्यामश्चमऽऐन्द्रवायवश्चमे मैत्रावरुणश्चमऽआश्विनश्चमे प्प्रतिप्प्रस्थानश्चमे शुक्रश्चमे मन्थीचमे यज्ञेनकल्पन्ताम् ॥१९॥ आग्रयणश्च । मे वैश्वदेवश्चमेद्ध्रुवश्चमे वैश्वानरश्चमऽऐन्द्राग्नश्चमे महावैश्वदेवश्चमे मरुत्त्वतीयाश्चमे निष्क्केवल्ल्यश्चमे सावित्रश्चमे सारस्वतश्चमे पात्क्नीवतश्चमे हारियोजनश्च मे यज्ञेनकल्पन्ताम् ॥२०॥

स्रुचश्च । मेचमसाश्च मे व्वायव्यानिचमे द्रोणकलशश्चमे ग्ग्रावाणश्चमेधिषवणेचमे पूतभृच्चमऽआधवनीयश्चमे व्वेदिश्चमे बर्हिश्चमे-

ऽवभृथश्चमे स्वगाकारश्च मे यज्ञेनकल्पन्ताम् ॥२१॥ (न० ६) अग्निश्च । मेघर्म्मश्चमेऽर्कश्चमे सूर्य्यश्चमे प्राणश्चमेऽश्वमेधश्च मे पृथिवीचमेऽदितिश्चमे दितिश्चमेद्यौ-श्चमेऽङ्गुलय ऽ शक्वरयोदिशश्च मे यज्ञेनकल्पन्ताम् ॥२२॥ व्रतञ्च । मऽऋतवश्चमे तपश्चमेसंव्व-त्सरश्चमे होरात्रे ऽउर्व्वष्ठीवे बृहद्रथन्तरेच मे यज्ञेनकल्पन्ताम् ॥२३॥ (न० ७)। एकाच । मेतिस्त्रश्चमे तिस्त्रश्च मे पञ्चचमे पञ्चचमे सप्तचमे सप्तचमे नवचमे नवचमऽएकादशचम-ऽएकादशचमे त्रयोदशचमे त्रयोदशचमे पंचदशचमे पंचदशचमे सप्तदशचमे सप्तदशचमे नवदशचमे नवदशचम-

ऽएकविंꣳ शतिश्चमऽएकविंꣳ शतिश्चमे-
त्रयोविंꣳ शतिश्चमे त्रयोविंꣳ शतिश्चमे
पंचविंꣳ शतिश्श्चमे पंचविंꣳ शतिश्चमे
सप्तविंꣳ शतिश्चमेसप्प्तविंꣳ शतिश्चमे
नवविंꣳ शतिश्चमेनवविंꣳ शतिश्च
मऽएकत्रिꣳ शच्चमऽएकत्रिꣳ
शच्चमेत्रयस्त्रिꣳ शच्चमे यज्ञेनकल्प्प-
न्ताम् ॥२४॥ (न० ८) ॥ चतस्रश्च ।
मेष्टौचमेष्टौचमे द्वादशचमे द्वादशचमे
षोडशचमे षोडशचमे विꣳ शतिश्चमे
विꣳशतिश्चमे चतुर्विꣳ शतिश्चमे
चतुर्विꣳ शतिश्चमेष्टाविꣳ शतिश्चमेष्टावि
ꣳ शतिश्चमे द्वात्रिꣳ शच्चमे द्वात्रिꣳ
शञ्च मे षट्त्रिꣳ शच्चमे षट्त्रिꣳ शच्चमे
चत्त्वारिꣳ शच्चमे चत्त्वारिꣳ शच्चमे
चतुश्श्चत्वारिꣳ शच्चमे चतुश्श्चत्वारि

ॐ शच्चमेऽष्टाचंत्त्वारि ꣳ शच्चमे यज्ञेनकल्प्पन्ताम् ॥२५॥ (न० ९) ॥ त्र्यविश्च्च । मेत्र्यवीचंमे दित्त्यवाट्चंमे दित्त्यौही चं मे पञ्चाविश्श्चमे पञ्चावीचंमे त्रिवत्त्सश्च्चंमे त्रिवत्त्साचंमे तुर्य्यवाट्चंमे तुर्य्यौहीचं मे यज्ञेनकल्प्पन्ताम् ॥२६॥ पष्ठवाट्च । मे पष्ठौहीचंमेऽउक्षाचंमे व्वशाचंमेऽ-ऋषभश्च्चंमे व्वेहच्चंमे नड्वाँश्चंमे धेनुश्चंमे यज्ञेनकल्प्पन्ताम् ॥२७॥ (न० १०) व्वाजायस्वाहा प्प्रसवायस्वाहा पिजाय स्वाहा क्रतवेस्वाहा व्वसवेस्वाहा हर्प्पतये स्वा-हाऽह्नेमुग्ग्धाय स्वाहा मुग्ग्धाय व्वैनꣳ शिनायस्वाहा व्विनꣳशिनऽ आन्त्या-यनाय स्वाहान्त्याय भौवनाय स्वाहा

भुवनस्य पतये स्वाहाधिपतये स्वाहा प्रजापतये स्वाहा ॥ इयन्तेराणिम-न्त्रायजन्तासि यमनऽऊर्ज्जेत्वावृष्ट्यैत्वा प्रजानान्त्वाधिपत्याय ॥२८॥ आयु-र्य्यज्ञेन । कल्प्पताम्प्राणोयज्ञेनकल्प्प-ताञ्चक्षुर्य्यज्ञेनकल्प्पता ँ श्श्रोत्रंय्य ज्ञेनकल्प्पताम्वाग्ग्यज्ञेन कल्प्पताम्म-नौय्यज्ञेन कल्प्पतामात्त्मा यज्ञेन कल्प्पताम्ब्रह्मायज्ञेन कल्प्पताञ्ज्योति-र्य्यज्ञेनकल्प्पता ँ स्वर्य्यज्ञेनकल्प्पता-म्पृष्टंय्यज्ञेन कल्पतां यज्ञोयज्ञेन कल्प्पताम् ॥ स्तोमश्श्चय जुश्श्चऽऋक्च सामच्चबृहच्चरथन्तरञ्च ॥ स्वर्द्देवा-ऽअगन्मामृताऽअभूम प्रजापतेः प्रजा-ऽअभूम वेट् स्वाहा ॥२९॥

इति रुद्रे अष्टमोऽध्यायः ॥८॥

अथ रुद्रशान्त्याध्यायः ॥१॥

हरिः ॐ । ऋचं व्वाचम्प्रपद्ये मनो यजुः प्रपद्ये सामप्प्राणाम्प्रपद्ये चक्षुः श्रोत्रम्प्रपद्ये ॥ व्वागोजः सहोजो मयिप्प्राणापानौ ॥१॥ यन्मेछिद्द्रञ्चक्षुषो हृदयस्य मनसो व्वातितृण्णम्बृहस्प्पतिर्म्मेतद्दधातु ॥ शन्नो भवतुभुवनस्ययस्प्पतिः ॥२॥ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्व्वरेण्यम्भर्गो देवस्य धीमहि ॥ धियो यो नः प्रचोदयात् ॥३॥ कयानश्चित्रऽआभुवदूती सदावृधः सखा ॥ कया शचिष्ठयाव्वृता ॥४॥ कस्त्वा सत्त्योमदानाम्मंहिष्ठोमत्सदन्धसः ॥ दृढाचिदारुजेव्वसु ॥५॥ अभीषुणः सखीनामविताजरितृणाम् ॥ शतम्भवास्यूतिभिः ॥६॥ कयात्त्वन्नऽऊत्या-

भिप्प्रमन्दसेव्वृषन् ॥ कयास्तोतृभ्य-
ऽआभर ॥७॥ इन्द्रोव्विश्श्वस्य राजति ॥
शन्नोऽअस्तुद्द्विपदेशञ्चतुष्पदे ॥८॥
शन्नोमित्र ꣳ शंव्वरुणꣳशन्नो भवत्वर्य्य
मा ॥ शन्नऽइन्द्रोबृहस्प्पतिꣳ शन्नोव्वि-
ष्णुरुरुक्रम ꣳ ॥९॥ शन्नोव्वातः ।
पवता ꣳ शन्नस्तपतुसूर्य्यः ॥ शन्नꣳ क-
निक्रदद्देवꣳ पर्ज्जन्योऽअभिवर्षतु ॥१०॥
अहानिशम्भवन्तुन ꣳ श ꣳ रात्री
प्प्रतिधीयताम् ॥ शन्नऽइन्द्राग्गनीभव-
तामवोभि ꣳ शन्नऽइन्द्राव्वरुणारातह-
व्या ॥ शन्नऽइन्द्रापूषणाव्वाजं सातौ-
शमिन्द्रासोमासुवितायशंय्योः ॥११॥
शन्नो देवीरभिष्टयऽआपोभवन्तुपीतये ॥
शंय्योरभिस्रवन्तु न ꣳ ॥१२॥
स्योनापृथिवि ।नोभवान्नृक्षरानिवेशनी ॥

यच्छानः शर्म्मसप्रथाः ॥१३॥ आपोहि ष्ठामयोभुवस्तानऽऊर्जेदधातन ॥ महेरणायचक्षसे ॥१४॥ यो वः शिवतमोरसस्तस्यभाजयतेहनः ॥ उशतीरिवमातरः ॥१५॥ तस्म्माऽअरङ्गमामवो यस्यक्षयाय जिन्वथ ॥ आपोजनयथाचनः ॥१६॥ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिः पृथिवीशान्तिरापꣳ शान्तिरोषधयः शान्तिः ॥ व्वनस्प्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्मशान्तिः सर्वꣳशान्तिः शान्तिरेवशान्तिः सामा शान्तिरेधि ॥१७॥ दृतेदृꣳहमामित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणिभूतानिसमीक्षन्ताम् ॥ मित्रस्याहञ्चक्षुषासर्वाणिभूतानिसमीक्षे ॥ मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे ॥१८॥ दृते दृꣳहमा ॥ ज्योक्त्तेसन्दृशिजीव्यास-

ज्योत्त्क्तेसन्दृशिजीव्व्यासम् ॥१९॥
नमस्तेहरसेशोचिषेनमस्तेऽअस्त्वर्च्चिषे ॥
अन्न्याँस्तेऽअस्म्मत्तपन्तुहेतयः पावको-
ऽअस्म्मब्भ्यᳪ शिवो भव ॥२०॥ नमस्ते-
ऽअस्तुव्विद्युतेनमस्तेस्तनयित्नवे ॥ नम-
स्तेभगवन्नस्तुयतᳫ स्वः समीहसे ॥२१॥
यतो यतᳪ समीहसे ततो नोऽअभय-
ङ्कुरु ॥ शन्नःकुरुप्प्रजाब्भ्योभयन्नᳫ
पशुब्भ्यः ॥२२॥ सुमित्रियानऽआपऽ-
ओषधयᳫ सन्तुदुर्म्मित्रियास्तस्म्मै सन्तु-
योस्म्मान्द्वेष्टियञ्चव्वयन्द्द्विष्म्मᳫ ॥२३॥
तच्चक्षुर्द्देवहितम्पुरस्ताच्छुक्क्रमुच्चरत् ।
पश्येम शरदः शतञ्जीवेम शरदः शतᳪ
शृणुयामशरदःशतम्प्रब्ब्रवामशरदः
शतमदीनाᳫ स्यामशरदः शतम्भू-
यश्चशरदः शतात् ॥२४॥

इति रुद्रे शान्त्याध्यायः ॥९॥

अथ रुद्रे स्वस्तिप्रार्थनामन्त्राऽध्यायः ॥१०॥

हरिः ॐ ॥ स्वस्तिनऽइन्द्रोव्वृद्धश्श्रवाः स्वस्तिनः पूषाव्विश्ववेदाः ॥ स्वस्तिनस्ताक्ष्र्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्तिनोबृहस्प्पतिर्द्दधातु ॥१॥ ॐ पयः पृथिव्यामप्पयऽओषधीषुपयोदिव्व्यन्तरिक्षेपयोधाः । पयस्वतीः प्प्रदिशः सन्तुमह्यम् ॥२॥ ॐ व्विष्णोरराटमसिव्विष्णोः श्नप्त्रेस्थो व्विष्णोः स्यूरसिव्विष्णोर्द्ध्रुवोसि ॥ वैष्णवमसिव्विष्णवेत्त्वा ॥३॥ ॐ अग्निर्द्देवताव्वातोदेवता सूर्योदेवता चन्द्रमादेवताव्वसवोदेवता रुद्द्रादेवतादित्यादेवता मरुतोदेवता व्विश्वेदेवादेवताबृहस्प्पतिर्द्देवतेन्द्रोदेवता व्वरुणोदेवता ॥४॥

ॐसद्योजातंप्रपद्यामि सद्योजाताय वैनमोनमः ॥ भवेभवेनातिभवेभवस्व- मांभवोद्भवायनमः ॥५॥ वामदेवाय- नमोज्येष्ठायनमः श्रेष्ठायनमोरुद्रायनम ऽ कालायनम ऽ कलविकरणाय नमो बलविकरणायनमो बलायनमोबल- प्रमथनायनम ऽ सर्वभूतदमनायनमोम- नोन्मनायनमः ॥६॥ अघोरेभ्योथघोरे- भ्योघोरघोरतरेभ्य ऽ ॥ सर्वेभ्य ऽ सर्व- शर्वेभ्यो नमस्तेऽअस्तुरुद्ररूपेभ्यऽ ॥७॥ तत्पुरुषायविद्महे महादेवाय धीमही तन्नोरुद्रः प्रचोदयात् ॥८॥ ईशान- ऽ सर्वविद्यानामीश्वर ऽ सर्वभूतानाम् ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोधिपतिर्ब्रह्माशिवोमे- अऽस्तु सदाशिवोम् ॥९॥ ॐ शिवो- नामासिस्वधितिस्ते पितानमस्तेऽअस्तु-

मामाहिᳬसीः । निवर्त्तयाम्म्यायुषेन्ना-
द्यायप्रजननायरायस्पोषायसुप्रजास्त्वाय
सुवीर्य्याय ॥१०॥ ॐ व्विश्वानि-
देवसवितर्दुरितानि परासुव ॥ यद्भ-
द्रन्तन्नऽआसुव ॥११॥ ॐद्यौः शान्ति-
रन्तरिक्षᳬ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः
शान्तिरोषधयः शान्तिः ॥ व्वनस्पतयः
शान्तिर्व्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्मशान्तिः
सर्व्वᳬ शान्तिः शान्तिरेवशान्तिः
सामाशान्तिरेधि ॥१२॥ ॐ सर्वेषां वा
एषव्वेदानाᳬ रसोयत्साम सर्वेषामे-
वैनमेतद्वेदानाᳬ रसेनाभिषिञ्चति ॥१३॥

इति स्वस्तिप्रार्थनामन्त्राध्यायः ॥१०॥

ॐ शान्तिःशान्तिःशान्तिः ॥ सुशान्तिर्भवतु ।
सर्वारिष्टशान्तिर्भवतु ॥

अनेन कृतेन रुद्राभिषेककर्मणा श्रीभवानीशङ्करमहारुद्रः
प्रीयतान्नमम ॥

ॐ साम्बसदाशिवार्पणमस्तु ॥ इति ॥

॥ उत्तर न्यासान्विधाय ॥

श्रीशिवमहिम्नः स्तोत्रम्

पुष्पदन्त उवाच

महिम्नः पारन्ते परमविदुषो यद्यसदृशी
स्तुतिर्ब्रह्मादीनामपि तदवसन्नास्त्वयि गिरः ।
अथावाच्यः सर्वः स्वमतिपरिणामावधि गृणन्
ममाप्येष स्तोत्रे हर निरपवादः परिकरः ॥१॥

अतीतः पन्थानं तव च महिमा वाङ्मनसयो-
रतद्व्यावृत्त्यायं चकितमभिधत्ते श्रुतिरपि ।
स कस्य स्तोतव्यः कतिविधगुणः कस्यविषयः
पदे त्वर्वाचीने पतति न मनः कस्य न वचः ॥२॥

मधुस्फीता वाचःपरमममृतं निर्मितवत-
स्तव ब्रह्मन्किं वागपि सुरगुरोर्विस्मयपदम् ।
मम त्वेतां वाणीं गुणकथन पुण्येन भवतः
पुनामीत्यर्थेऽस्मिन् पुरमथन बुद्धिर्व्यवसिता ॥३॥

तवैश्वर्यं यत्तज्जगदुदयरक्षाप्रलयकृत्
त्रयीवस्तुव्यस्तं तिसृषु गुणाभिन्नासुतनुषु ।
अभव्यानामस्मिन् वरद रमणीयामरमणीं
विहन्तुं व्याक्रोशीं विदधत इहैके जडधियः ॥४॥

किमीहः किंकायः स खलु किमुपायस्त्रिभुवनं

किमाधारो धाता सृजति किमुपादान इति च।
अतर्क्यैश्वर्ये त्वय्यनवसरदुःस्थो हतधियः
कुतर्कोऽयं कांश्चिन्मुखरयति मोहाय जगतः ॥५॥
अजन्मानो लोकाः किमवयववन्तोऽपि जगता-
मधिष्ठातारं किं भवविधिरनादृत्य भवति।
अनीशो वा कुर्याद् भुवनजनने कः परिकरो
यतो मन्दास्त्वां प्रत्यमरवर संशेरत इमे ॥६॥
त्रयी सांख्यं योगः पशुपतिमतं वैष्णवमिति
प्रभिन्ने प्रस्थाने परमिदमदः पथ्यमिति च।
रुचीनां वैचित्र्यादृजुकुटिलनानापथजुषां
नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव ॥७॥
महोक्षः खट्वाङ्गं परशुरजिनं भस्म फणिनः
कपालं चेतीयत्तव वरद तन्त्रोपकरणम्।
सुरास्तां तामृद्धिं विदधति भवद्भ्रूप्रणिहितां
नहि स्वात्मारामं विषयमृगतृष्णा भ्रमयति ॥८॥
ध्रुवं कश्चित्सर्वं सकलमपरस्त्वध्रुवमिदं
परो ध्रौव्याध्रौव्ये जगति गदति व्यस्तविषये।
समस्तेऽप्येतस्मिन्पुरमथन तैर्विस्मित इव
स्तुवञ्जिह्रेमि त्वां न खलु ननु धृष्टा मुखरता ॥९॥

तवैश्वर्यं यत्नाद्यदुपरि विरिञ्चो हरिरधः।
परिच्छेत्तुं यातावनलमनिलस्कन्धवपुषः ॥
ततो भक्तिश्रद्धाभरगुरुगृणद्भ्यां गिरिश यत्
स्वयं तस्थे ताभ्यां तव किमनुवृत्तिर्न फलति ॥१०॥

अयत्नादापाद्य त्रिभुवनमवैरव्यतिकरं
दशास्यो यद्बाहूनभृत रणकण्डूपरवशान्।
शिरः पद्मश्रेणीरचितचरणाम्भोरुहबलेः
स्थिरायास्त्वद्भक्तेस्त्रिपुरहर विस्फूर्जितमिदम् ॥११॥

अमुष्य त्वत्सेवासमधिगतसारं भुजवनं
बलात्कैलासेऽपि त्वदधिवसतो विक्रमयतः।
अलभ्या पातालेऽप्यलसचलिताङ्गुष्ठशिरसि
प्रतिष्ठा त्वय्यासीद् ध्रुवमुपचितो मुह्यति खलः ॥१२॥

यदृद्धिं सुत्राम्णो वरद! परमोच्चैरपि सती-
मधश्चक्रे बाणः परिजनविधेयत्रिभुवनः।
न तच्चित्रं तस्मिन् वरिवसितरि त्वच्चरणयो
र्नकस्या उन्नत्यै भवति शिरसस्त्वय्यवनतिः ॥१३॥

अकाण्डब्रह्माण्डक्षयचकितदेवासुरकृपा-
विधेयस्याऽसीद् यस्त्रिनयनविषं संहृतवतः।
स कल्माषः कण्ठे तव न कुरुते न श्रियमहो

विकारोऽपि श्लाघ्यो भुवनभयभङ्गव्यसनिनः ॥१४॥
असिद्धार्था नैव क्वचिदपि सदेवासुरनरे
निवर्तन्ते नित्यं जगति जयिनो यस्य विशिखाः ।
स पश्यन्नीश त्वामितरसुरसाधारणमभूत
स्मरः स्मर्तव्यात्मा न हि वशिषु पथ्यः परिभवः ॥१५॥
मही पादाघाताद् व्रजति सहसा संशयपदं
पदं विष्णोर्भ्राम्यद्भुजपरिघरुग्णग्रहगणम् ।
मुहुर्द्यौर्दौस्थ्यं यात्यनिभृतजटाताडिततटा
जगद्रक्षायै त्वं नटसि ननु वामैव विभुता ॥१६॥
वियद्व्यापी तारागणगुणितफेनोद्गमरुचिः
प्रवाहो वारां यः पृषतलघुदृष्टः शिरसि ते ।
जगद्द्वीपाकारं जलधिवलयं तेन कृतमि-
त्यनेनैवोन्नेयं धृतमहिम दिव्यं तव वपुः ॥१७॥
रथः क्षोणी यन्ता शतधृतिरगेन्द्रो धनुरथो
रथाङ्गे चन्द्रार्कौ रथचरणपाणिः शर इति ।
दिधक्षोस्ते कोऽयं त्रिपुरतृणमाडम्बरविधिः
विधेयैः क्रीडन्त्यो न खलु परतन्त्राः प्रभुधियः ॥१८॥
हरिस्ते साहस्रं कमलबलिमाधाय पदयो-
र्यदेकोने तस्मिन्निजमुदहरन्नेत्रकमलम् ।

गतो भक्त्युद्रेकः परिणतिमसौ चक्रवपुषा
त्रयाणां रक्षायै त्रिपुरहर जागर्ति जगताम् ॥१९॥
क्रतौ सुप्ते जाग्रत्त्वमसि फलयोगे क्रतुमतां
क्व कर्म प्रध्वस्तं फलति पुरुषाराधनमृते ।
अतस्त्वां संप्रेक्ष्य क्रतुषु फलदानप्रतिभुवं
श्रुतौ श्रद्धां बद्ध्वा दृढपरिकरः कर्मसु जनः ॥२०॥
क्रियादक्षो दक्षः क्रतुपतिरधीशस्तनुभृता-
मृषीणामार्त्विज्यं शरणद सदस्याः सुरगणाः ।
क्रतुभ्रंशस्त्वत्तः क्रतुफलविधानव्यसनिनो
ध्रुवं कर्तुः श्रद्धाविधुरमभिचाराय हि मखाः ॥२१॥
प्रजानाथं नाथ प्रसभमभिकं स्वां दुहितरं
गतं रोहिद्भूतां रिरमयिषुमृष्यस्य वपुषा ।
धनुष्पाणेर्यातं दिवमपि सपत्राकृतममुं
त्रसन्तंतेऽद्यापि त्यजति न मृगव्याधरभसः ॥२२॥
स्वलावण्याशंसा धृतधनुषमह्नाय तृणवत्
पुरः प्लुष्टं दृष्ट्वा पुरमथन ! पुष्पायुधमपि ।
यदिस्त्रैणं देवी यमनिरतदेहार्धघटन-
दवैति त्वामद्धा बत वरद ! मुग्धा युवतयः ॥२३॥
श्मशानेष्वाक्रीडा स्मरहर ! पिशाचाः सहचरा-

श्चिताभस्मालेपः स्रगपि नृकरोटीपरिकरः ।
अमङ्गल्यं शीलं तव भवतु नामैवमखिलं
तथापि स्मर्तृणां वरद परमं मङ्गलमसि ॥२४

मनः प्रत्यक्चित्ते सविधमवधायात्तमरुतः
प्रहृष्यद्रोमाणः प्रमदसलिलोत्संगितदृशः ।
यदालोक्याह्लादं ह्रद इव निमज्यामृतमये
दधत्यन्तस्तत्वं किमपि यमिनस्तत्किल भवान् ॥२५

त्वमर्कस्त्वं सोमस्त्वमसि पवनस्त्वं हुतवह-
स्त्वमापस्त्वं व्योमस्त्वमु धरणिरात्मा त्वमितिच ।
परिच्छिन्नामेवं त्वयि परिणता विभ्रति गिरं
न विद्मस्तत्तत्त्वं वयमिह तु यत्त्वं न भवसि ॥२६।

त्रयीं तिस्रो वृत्तीस्त्रिभुवनमयो त्रीनपि सुरा-
नकाराद्यैर्वर्णैस्त्रिभिरभिदधत्तीर्णविकृतिः ।
तुरीयं ते धाम ध्वनिभिरवरुन्धानमणुभिः
समस्तं व्यस्तं त्वां शरणद गृणात्योमितिपदम् ॥२७।

भवः शर्वो रुद्रः पशुपतिरथोग्रः सहमहां-
स्तथा भीमेशानाविति यदभिधानाष्टकमिदम् ।
अमुष्मिन्प्रत्येकं प्रविचरति देवः श्रुतिरपि
प्रियायास्मै धाम्ने प्रणिहितनमस्योऽस्मि भवते ॥२८॥

नमो नेदिष्ठाय प्रियदव दविष्ठाय च नमो
नमः क्षोदिष्ठाय स्मरहर महिष्ठाय च नमः ।
नमो वर्षिष्ठाय त्रिनयन यविष्ठाय च नमो
नमः सर्वस्मै ते तदिदमितिशर्वाय च नमः ॥२९॥

बहलरजसे विश्वोत्पत्तौ भवाय नमो नमः
प्रबलतमसे तत्संहारे हराय नमो नमः ।
जनसुखकृते सत्त्वोद्रिक्तौ मृडाय नमो नमः
प्रमहसि पदे निस्त्रैगुण्ये शिवाय नमो नमः ॥३०॥

कृशपरिणति चेतः क्लेशवश्यं क्व चेदं
क्व च तव गुणसीमोल्लंघिनी शश्वदृद्धिः ।
इति चकितममन्दीकृत्य मां भक्तिराधा-
द्वरद चरणयोस्ते वाक्यपुष्पोपहारम् ॥३१॥

असितगिरिसमं स्यात् कज्जलं सिन्धुपात्रे
सुरतरुवरशाखा लेखनी पत्रमूर्वी ।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं
तदपि तव गुणानामीश पारं न याति ॥३२॥

असुरसुरमुनीन्द्रैरर्चितस्येन्दुमौले-
र्ग्रथितगुणमहिम्नो निर्गुर्णस्येश्वरस्य ।
सकलगुणवरिष्ठः पुष्पदन्ताभिधानो

रुचिरमलघुवृत्तैः स्तोत्रमेतच्चकार ॥३३॥
अहरहरनवद्यं धूर्जटेः स्तोत्रमेतत्
पठति परमभक्त्या शुद्धचित्तः पुमान् यः ॥
स भवति शिवलोके रुद्रतुल्यस्तथाऽत्र
प्रचुरतरधनायुः पुत्रवान्कीर्तिमांश्च ॥३४॥
दीक्षा दानं तपस्तीर्थं ज्ञानं यागादिकाः क्रियाः ।
महिम्नस्तवपाठस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम् ॥३५॥
आसमाप्तमिदं स्तोत्रं पुण्यं गन्धर्वभाषितम् ।
अनूपमं मनोहारि शिवमीश्वरवर्णनम् ॥३६॥
महेशान्नापरो देवो महिम्नो नापरा स्तुतिः ।
अघोरान्नापरो मन्त्रो नास्ति तत्त्वं गुरोः परम् ॥३७॥
कुसुमदशननामा सर्वगन्धर्वराजः
शशिधरवरमौलेर्देवदेवस्य दासः ।
स गुरुनिजमहिम्नो भ्रष्ट एवास्य रोषात्
स्तवनमिदमकार्षीद्दिव्यदिव्यं महिम्नः ॥३८॥
सुरवरमुनिपूज्यं स्वर्गमोक्षैकहेतुं
पठति यदि मनुष्यः प्राञ्जलिर्नान्यचेताः ॥
व्रजति शिवसमीपं किन्नरैः स्तूयमानः
स्तवनमिदममोघं पुष्पदन्तप्रणीतम् ॥३९॥
तव तत्वं न जानामि कीदृशोऽसि महेश्वर । ४०
यादृशोऽसि महादेव तादृशाय नमोनमः ।

एककालं द्विकालं वा त्रिकालं यः पठेन्नरः।
सर्व पाप विनिर्मुक्तः (११५) शिव लोके महीयते ॥ 43॥

श्रीपुष्पदन्तमुखपङ्कजनिर्गतेन
स्तोत्रेण किल्बिषहरेण हरप्रियेण।
कण्ठस्थितेन पठितेन समाहितेन
सुप्रीणितो भवति भूतपतिर्महेशः ॥४०॥

इत्येषा वाङ्मयी पूजा श्रीमच्छङ्करपादयोः।
अर्पिता तेन देवेशः प्रीयतां मे सदाशिवः ॥४१॥

इति श्रीपुष्पदन्तप्रणीत श्री शिवमहिम्नः स्तोत्रं समाप्तम्।

॥ ॐ नमः साम्बसदाशिवाय ॥

पार्वतीलास्यम्

(आचार्य बृहस्पति विरचितम्)

शशाङ्क शेखरज्ज्वलस्मितांशुमालिकालसद्
विनोदमोद सिन्धुमज्जनोत्सुकाऽपराजिता ॥
मदालसाङ्ग—भङ्गिमाऽङ्गनाविलासदेशिका
महेश मोहिनी महेश्वरी जयेदमंगलम् ॥१॥

लसल्ललाटिका विलोल मौक्तिकालि शोभना
लयोर्मिलालिताङ्गहार मालिका मनोहरा ॥
दिगन्नगिन्दिगिन्नन्दिगिन्न गिन्निति ध्वज-
न्मृदङ्ग सङ्गिनी सनोतु पार्वती सदा शिवम् ॥२॥

हिरण्यमयील्लसत् किरीटिनी सुवर्णवर्णिनी

(Left margin, from previous page: ॥३३॥ ॥ ॥३४॥ ३५॥ ३६॥ ३७॥ ८॥ ९॥ ५२)

मणिप्रभामयूखजाल लालिताङ्ग दीपिनी ॥
चलत्कटिस्थ काञ्चिदामिनी द्युति प्रवर्षिणी
सुहासिनीगिरीशनन्दिनी करोतु मङ्गलम् ॥३॥
अनङ्ग सङ्गिनी मनस्तरङ्ग भङ्गि नन्दिता-
ङ्गहार कल्पनाकलाप कौशलान्विता ॥
रुनुञ्झुनुन् रुनुञ्झुनुन् रुनुञ्झुनुन् नादिनी
शिवाविमुक्तताण्डवं शिवञ्चिरायु पश्यतु ॥४॥
सितस्मिताधरप्रवाल निन्दितेन्दु लेखया
विमुक्त बेणिसर्पिणी हृताहि मण्डल श्रिया ॥
शुभाङ्ग भङ्गिनिर्जितौ तरङ्गजाह्नवीत्विषा
प्रमाद्यतामहर्निशं शिवः प्रसन्नयो मया ॥५॥
चलत्पदाम्बुजार्पितै रलक्तकाङ्कितैः परा
म्प्रफुल्लपङ्कजच्छविं समर्प्यदर्पण प्रभम् ॥
हिमावृतावनीत लङ्कटिस्थ किङ्किणी क्वण
प्रवीणया विनोद्यताममन्दमिन्दु शेखरः ॥६॥
महेश मौलि मल्लिका मिलन्मिलिन्द गुञ्जित
म्प्रकल्प्य मध्यमस्वरं सुमध्यमाभि रैशकम् ॥
प्रगीयमानमालिभिः प्रबन्धमङ्गभङ्गिभिः
र्व्यनक्तु शैलजा मनोजवैरिणोऽनिशंमुदे ॥७॥

अपाङ्ग मङ्गिमेङ्गिता भिषङ्गहर्षितो हरः
पदारविन्द नूपुर क्वणेन मन्द हासया ॥
सलीलमालिवृन्दवन्दनोल्लसद्विलासया
निमन्त्र्यतामनङ्गगर्वभञ्जकोऽनुवृत्तये ॥८॥
पुराविशाल बाहुदण्ड मण्डनैभुजङ्गभै
मृदङ्गवेणुवल्लकी निनाद मैहितैस्ततः ॥
श्लथाङ्गबन्धनच्युतैरचञ्चलैश्शनैश्शनैः
सरद्भिरन्तरान्तरा विरम्यतामितस्ततः ॥९॥
मदोल्लसन्महेश मानसोर्मिजालमीलितम्
महानलस्फुलिङ्गवर्जितं ललाट लोचनम्
जटाभुजङ्गराजये शिरः स्वजह्नु सूनवे
निरन्तरं सुखावहं सखी जनाय जायताम् ॥१०॥
उमापद क्रमोल्लसन्मना मानगधीश्वरो
हिलन् स्फुरैश्चलन्मिलन् हसन्ध्वनन्समन्ततः
सखीजनोतवीणितो विनोद भाजनं शिवो
हिमाद्रिजा मृणालबाहुवेष्टितो विलोक्यताम् ॥११॥
हिलत्सुवर्ष कुण्डलोल्लसत्कपोल दर्पणा
लुठद्विलोल मौक्तिका वलील सत्पयोधरा ॥
झनञ्झनञ्झनञ्झनेति कास्य तालक-

स्वनानुवर्तिनी गिरीन्द्रजाश्रयेत्फणीन्द्रिणम् ॥१२॥
॥ शमिति ॥

अथ शिवताण्डवस्तोत्र प्रारम्भः

जटाटवीगलज्जलप्रवाहपावितस्थले
गलेऽवलम्ब्य लम्बितां भुजङ्गतुङ्गमालिकाम् ।
डमड्डमड्डमड्डमन्निनादवड्डमर्वयं
चकार चण्डताण्डवं तनोतु नः शिवः शिवम् ॥१॥

जटाकटाहसंभ्रमभ्रमन्निलिम्पनिर्झरी-
विलोलवीचिवल्लरी विराजमानमूर्द्धनि ।
धगद्धगद्धगज्ज्वलल्ललाटपट्टपावके
किशोरचन्द्रशेखरे रतिः प्रतिक्षणं मम ॥२॥

धराधरेन्द्रनन्दिनीविलासबन्धुबन्धुर-
स्फुरद्दिगन्तसन्ततिप्रमोदमानमानसे ।
कृपाकटाक्षधोरणीनिरुद्धदुर्धरापदि
क्वचिद्दिगम्बरे मनो विनोदमेतु वस्तुनि ॥३॥

जटाभुजङ्गपिङ्गलस्फुरत्फणामणिप्रभा-
कदम्बकुङ्कुमद्रवप्रलिप्तदिग्वधूमुखे ।
मदान्धसिन्धुरासुरत्वगुत्तरीयमेदुरे
मनो विनोदमद्भुतं बिभर्तु भूतभर्तरि ॥४॥

ललाटचत्वरज्वलद्धनञ्जयस्फुलिङ्गभा-
निपीतपञ्चसायकं नमन्निलिम्पनायकम् ।
सुधामयूखरेखया विराजमानशेखरं
महः कपालि संपदे सरिज्जटालमस्तु नः ॥५॥

सहस्रलोचनप्रभृत्यशेषलेखशेखर-
प्रसूनधूलिधोरणीविधूसराङ्घ्रिपीठभूः ।
भुजङ्गराजमालया निबद्ध जाटजूटकः
श्रिये चिराय जायतां चकोरबन्धुशेखरः ॥६॥

करालभालपट्टिकाधगद्धगद्धगज्ज्वल-
द्धनंजयाहुतीकृतप्रचण्डपञ्चसायके ।
धराधरेन्द्रनन्दिनीकुचाग्रचित्रपत्रक-
प्रकल्पनैकशिल्पिनि त्रिलोचने रतिर्मम ॥७॥

नवीनमेघमण्डलीनिरुद्धदुर्धरस्फुरत्
कुहूनिशीथिनीतमः प्रबन्धबद्धकन्धरः ॥
निलिम्पनिर्झरीधरस्तनोतु कृत्तिसुन्दरः
कलानिधानबन्धुरः श्रियं जगद्धुरन्धुरः ॥८॥

प्रफुल्लनीलपङ्कजप्रपञ्चकालिमप्रभा-
बलम्बिकण्ठकन्दलीरुचिप्रबद्धकन्धरम् ।
स्मरच्छिदं पुरच्छिदं भवच्छिदं मखच्छिदं
गजच्छिदान्धकच्छिदं तमन्तकच्छिदं भजे ॥९॥

अखर्वसर्वमङ्गलाकलाकदम्बमञ्जरी-
रसप्रवाहमाधुरीविजृम्भणीमधुव्रतम् ।
स्मरान्तकंपुरान्तकं भवान्तकं मखान्तकं
गजान्तकान्धकान्तकं तमन्तकान्तकं भजे ॥१०॥

जयत्यदभ्रविभ्रमभ्रमद्भुजङ्गमश्वसद्
विनिर्गमक्रमस्फुरत्करालभालहब्यवाट् ।
धिमिंधिमिंधिमिध्वनन्मृदङ्गतुङ्गमङ्गल-
ध्वनिक्रमप्रवर्तितप्रचण्डताण्डवः शिवः ॥११॥

दृषद्विचित्रतल्पयोर्भुजङ्गमौक्तिकस्रजो-
र्गरिष्ठरत्नलोष्ठयोः सुहृद्विपक्ष पक्षयोः
तृणारविन्दचक्षुषोः प्रजामहीमहेन्द्रयोः
समप्रवृत्तिकः कदा सदाशिवं भजाम्यहम् ॥१२॥

कदा निलिम्पनिर्झरीनिकुञ्जकोटरे वसन्
विमुक्तदुर्मतिः सदा शिरस्थमञ्जलिं वहन् ॥
विलोललोललोचनाललामभाललग्नकं
शिवेति मन्त्रमुच्चरन्सदा सुखी भवाम्यहम् ॥१३॥

निलिम्पनाथनागरीकदम्बमौलिमल्लिका-
निगुम्फनिर्भरक्षरन्मधूष्णिकामनोहरः ।
तनोतु नो मनोमुदं विनोदिनीमहर्निशं
परश्रियः परं पदं तदङ्गजत्विषां चयः ॥१४॥

प्रचण्डवाडवानलप्रभाशुभप्रचारिणी
महाष्टसिद्धिकामिनीजनावहूतजल्पना ।
विमुक्तवामलोचनाविवाहकालिकध्वनिः
शिवेति मन्त्रभूषणं जगज्जयाय जायताम् ॥१५॥
इमं हि नित्यमेवमुक्तमुत्तमोत्तमं स्तवं
पठन् स्मरन् ब्रुवन् नरो विशुद्धिमेति सन्ततम् ।
हरे गुरौ सुभक्तिमाशु याति नान्यथा गतिं
विमोहनं हि देहिनां सुशङ्करस्य चिन्तनम् ॥१६॥
पूजावसानसमये दशवक्त्रगीतं
यः शम्भुपूजनमिदं पठति प्रदोषे ॥
तस्य स्थिरां रथगजेन्द्रतुरङ्गयुक्तां
लक्ष्मीं सदैव सुमुखीं प्रददाति शम्भुः ॥१७॥

इति रावणकृत शिवताण्डवस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

कर्पूरार्तिः

इसके बाद कपूर अथवा दीपक (एक या अनेक) द्वारा आरती करें तथा इन मन्त्रों को पढ़ें–

ॐ इद ꣳ हविः प्रजननम्मेअस्तुदश-वीर ꣳ सर्वगण ꣳ स्वस्तये । आत्मसनि-प्रजासनी पशुशनि लोकसन्यभयसनिः ।

अग्नि ऽ प्रजां बहुलाम्मे करोत्वन्नंपयोरे-
तोऽअस्मासु धत्त ॥ ॐ आ रात्रि
पार्थिवꣳ रजः पितुरप्रायि धामभिः ॥
दिव ऽ सदाꣳसि बृहती वितिष्ठस
आत्वेषं वर्तते तमः ॥

जयगंगाधर आरती

जयगंगाधर हर शिव जय गिरजाधीशा ॥ शिव जय० ॥
त्वं मां पालय नित्यं कृपया जगदीशा ॥ ॐ हर हर हर महादेव ॥१॥
कैलासे गिरि शिखरे कल्पद्रुम विपिने ॥ शिव० ॥
गुंजति मधुकर पुंजे कुंज वने गहने ॥ ॐ हर० ॥२॥
कोकिल कूजति खेलति हंसावलि ललितां ॥ शिव० ॥
रचयति कला कलापं नृत्यति मुद सहिता ॥ ॐ हर० ॥३॥
तस्मिल्ललित मुदेशे शालामणि रचिता ॥ शिव० ॥
तन्मध्ये हर निकटे गौरी मुद सहिता ॥ ॐ हर० ॥४॥
क्रीडां रचयति भूषां रंजित निजमीशं ॥ शिव० ॥
ब्रह्मादिक सुरसेवित प्रणमति ते शीर्षं ॥ ॐ हर० ॥५॥
विबुधवधूबहुनृत्यति हृदये मुद सहिता ॥ शिव० ॥
किन्नरगानं कुरुते सप्तस्वर सहिता ॥ ॐ हर० ॥६॥
धिनकत थै थै धिनकत मृदंगं वादयते ॥ शिव० ॥
क्वण क्वण ललिता वेणुं मधुरं नादयते ॥ ॐ हर० ॥७॥

रुण रुण चरणे रचयति नुपरमुज्वलिता ॥ शिव० ॥
चक्रावर्ते भ्रमयति कुरुते तां धिक तां ॥ ॐ हर० ॥८॥
तां तां लुप चुप तालं मधुरं नादयते ॥ शिव० ॥
अंगुष्ठांगुलि नादं लास्यकतां कुरुते ॥ ॐ हर० ॥९॥
कर्पूरद्युति गौरं पंचानन सहितम् ॥ शिव० ॥
त्रिनयन शशधर मौले विषधर कण्ठयुतम् ॥ ॐ हर० ॥१०॥
सुन्दर जटाकलापं पावक युत भालं ॥ शिव० ॥
डमरु त्रिशूलपिनाकं कर धृत नृकपालम् ॥ ॐ हर० ॥११॥
शंख निनादं कृत्वा झल्लरि नादयते ॥ शिव० ॥
नीराजयते ब्रह्मा वेद ऋचां पठते ॥ ॐ हर० ॥१२॥
इति मृदुचरण सरोजे हृति कमले धृत्वा ॥ शिव० ॥
अवलोकयति महेशं ईशं अभिनत्वा ॥ ॐ हर० ॥१३॥
मुण्डरचित उर माला पन्नग उपवीतम् ॥ शिव० ॥
वाम विभागे गिरजा रूपं अति ललितम् ॥ ॐ हर० ॥१४॥
सकल शरीरे मनसिज कृत भस्माभरणम् ॥ शिव० ॥
इति वृषभध्वजरूपे तापत्रय हरणम् ॥ ॐ हर० ॥१५॥
ध्यानं आरति समये हृदये इति कृत्वा ॥ शिव० ॥
रामं त्रिजटानाथं ईशं अभिनत्वा ॥ ॐ हर० ॥१६॥
आरतिमेवं प्रतिदिन पठनं यः कुरुते ॥ शिव० ॥
शिव सायुज्यं गच्छति भक्त्या या शृणुते ॥ ॐ हर० ॥१७॥

॥ नमः शिवाय ॥

आरती

ॐ जय शिव ओंकारा हर जय शिव ओंकारा ॥
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्द्धंगी धारा ॥ ॐ हर हर हर महादेव ॥

एकानन चतुरानन पंचानन राजै ॥ शिव पंचानन० ॥
हंसासन गरुड़ासन वृषवाहन राजै ॥ ॐ हर हर हर महादेव ॥
दोयभुज चार चतुर्भुज दशभुज ते सोहै ॥ शिव दश० ॥
तीनों रूप निरखता त्रिभुवन जन मोहै ॥ ॐ हर हर हर महादेव ॥
अक्षमाला वनमाला मुण्डमाला धारी ॥ शिव मुण्ड० ॥
चन्दन मृगमद चन्दा भाले शुभकारी ॥ ॐ हर हर हर महादेव ॥
नन्दीवाहन खग वाहन शिव चक्रत्रिशूलधारी ॥ शिव चक्र० ॥
त्रिपुरारी शुभकारी कर कमलाधारी ॥ ॐ हर हर हर महादेव ॥
श्वेताम्बर पीताम्बर बाघाम्बर अंगे ॥ शिव बाघा० ॥
ब्रह्मादिक सनकादिक भूतादिक संगे ॥ ॐ हर हर हर महादेव ॥
लक्ष्मीवर सावित्री गंगा पारवती संगे ॥ शिव पार० ॥
बाघाम्बर आसन पर उमया अर्धंगे ॥ ॐ हर हर हर महादेव ॥
करमध्ये सुकमण्डलु चक्र त्रिशूल धर्ता ॥ शिव चक्र० ॥
जगकर्ता जगभर्ता जन-पालन करता ॥ ॐ हर हर हर महादेव ॥
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका ॥ शिव जानत० ॥
प्रणवाक्षर अनु मध्ये ये तीनों एका ॥ ॐ हर हर हर महादेव ॥
काशी में विश्वनाथ विराजै नन्दी ब्रह्मचारी ॥ शिव नन्दी० ॥
नित उठि दरसन पावत महिमा अति भारी ॥ ॐ हर हर हर महादेव ॥
साम्ब सदाशिव की आरति जो कोई नर गावै ॥ शिव जो० ॥
कहत शिवानन्द स्वामी इच्छा फल पावै ॥ ॐ हर हर हर महादेव ॥

कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारं ।
सदावसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानी सहितं नमामी ॥

कदलीगर्भ संभूतं कर्पूरेण प्रदीपितम् ।
आरार्तिक्यमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव ॥

इसके बाद आरती जल द्वारा शीतल करें । सभी भक्तजन आरती लें । हाथ धोकर भगवान को प्रणाम करें । हाथ में पुष्प-बिल्वपत्र आदि लेकर पुष्पांजलि करें ।

पुष्पाञ्जलि

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजयन्त देवास्तानि धर्म्माणिप्रथमान्यासन् तेहनाकम्महि-मानः सचन्तयत्रपूर्वेसाध्याः सन्तिदेवाः ॥१॥

ॐ विश्वतश्चक्षुरुतविश्वतो मुखो विश्वतो बाहुरुत व्विश्वतस्पात् ॥ सम्बाहुब्भ्यान्धमति सम्पतत्रैर्द्यावा भूमी जनयन्देवऽएकः ॥२॥

ॐ तत्पुरुषायविद्महेमहादेवाय धीमहि ॥ तन्नोरुद्रः प्रचो दयात् ॥३॥

ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे । समे

कामान्कामकामाय मह्यम् । कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु । कुबेराय वैश्रवणाय । महाराजायनमः ।

ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराजमाधिपत्यमयं समन्त पर्यायी स्यात् । सार्वभैमः सार्वायुष आन्तादापरार्धात् । पृथिव्यै समुद्रपर्यंताया एकराडितितदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुतस्यावसन्गृहे । आवीक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति ॥

ॐ मानस्तोके तनये मानऽआयुषि मानो गोषुमानो अश्वेषुरीरिषः । मानो व्वीरान्रुद्रभामिनो व्वधीर्हविष्मन्तः सदमित्वा हवामहे ॥

सेवन्तिकाबकुलचम्पकपाटलाब्जैः पुन्नागजातिकर वीररसाल पुष्पैः । विल्व प्रवाल तुलसीदल मंजरीभिः त्वां पूजयामि विश्वेश्वर मे प्रसीद ॥

मंत्र पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि

इसके बाद अपने स्थान पर खड़े होकर एक प्रदक्षिणा करें ।

ॐ ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता

निषङ्गिणः । तेषा ँ सहस्त्रयोजनेऽवधन्वा नितन्मसि ॥

ॐ सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिः सप्तसमिधः कृताः ॥ देवायद्यज्ञन्तन्वानाऽअवध्नन्पुरुषम्पशुम् ॥

इसके बाद आसन पर बैठकर शिवादि सभी देवताओं का उत्तर पूजन करें ।

ॐ नमः शंभवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च ॥

गन्धाक्षतपुष्पधूपदीपनैवेद्यं निवेदयामि

इसके बाद सब शान्त होकर भगवान शंकर के स्तोत्र का श्रद्धा से पाठ करें ।

श्री रुद्राष्टकम्

नमामी शमीशान निर्वाणरूपं । विभुं व्यापकं ब्रह्मवेद स्वरूपं ॥
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं । चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहं ॥१॥
निराकारमोंकारमूलं तुरीयं । गिराज्ञान गोतीतमीशं गिरीशं ॥
करालं महाकालकालं कृपालं । गुणागार संसारसारं नतोऽहं ॥२॥
तुषाराद्रि संकाशगौरं गभीरं । मनोभूत कोटि प्रभाश्री शरीरं ॥

स्फुरन्मौलि कल्लोलिनी चारुगंगा। लसद्भाल बालेन्दु कंठे भुजंगा ॥३॥
चलत्कुण्डलं भ्रू सुनेत्रं विशालं। प्रसन्नाननं नीलकण्ठं दयालं॥
मृगाधीश चर्माम्बरं मुण्डमालं। प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि ॥४॥
प्रचण्डं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं। अखण्डं अजं भानुकोटि प्रकाशं॥
त्रयः शूल निर्मूलनं शूलपाणि। भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यं ॥५॥
कलातीत कल्याण कल्पान्तकारी। सदासज्जनानन्द दाता पुरारी॥
चिदानन्द संदोह मोहापहारी। प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी ॥६॥
न यावद् उमानाथ पादारविन्दं। भजंतीह लोके परे वा नराणाम्॥
न तावत्सुखं शान्ति संतापनाशं। प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासं ॥७॥
न जानामि योगं जपं नैवपूजां। नतोऽहं सदा सर्वदा शंभु तुभ्यं॥
जराजन्मदुःखौघ तातप्यमानं। प्रभोपाहि आपन्नमामीश शंभो ॥८॥

रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतुष्टये॥
ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शंभुः प्रसीदति ॥९॥

ॐ नमः शिवाय

इसके बाद तिलक आशीर्वाद आदि करें ।। ब्राह्मणों को दक्षिणा दें। इसके बाद विसर्जन तथा अभिषेक करें।

॥ सदा शिवार्पणमस्तु ॥

शिवाऽष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् (१)

देवा ऊचुः

जय शम्भो विभो रुद्र स्वयम्भो जय शङ्कर ! ।
जयेश्वर जयेशान जय सर्वज्ञ कामद ! ॥१॥

नीलकण्ठ जय श्रीद श्रीकण्ठ जय धूर्जटे ! ।
अष्टमूर्तेऽनन्तमूर्ते महामूर्ते जयानघ ! ॥ २ ॥

जय पापहरानङ्ग - निःसङ्गाभङ्ग - नाशन ! ।
जय त्वं त्रिदशाधार त्रिलोकेश त्रिलोचन ! ॥ ३ ॥

जय त्वं त्रिपथाधार त्रिमार्ग त्रिभिरूर्जित ! ।
त्रिपुरारे त्रिधामूर्ते जयैक-त्रिजटात्मक ! ॥ ४ ॥

शशिशेखर शूलेश पशुपाल शिवाप्रिय ! ।
शिवात्मक शिव श्रीद सुहृच्छीशतनो जय ! ॥ ५ ॥

सर्व सर्वेश भूतेश गिरिश त्वं गिरीश्वर ! ।
जयोग्ररूप भीमेश भव भर्ग जय प्रभो ! ॥ ६ ॥

जय दक्षाऽध्वर - ध्वंसिन्नन्धक - ध्वंसकारक ! ।
रुण्डमालिन् कपालिंस्त्वं भुजङ्गनिजभूषण ! ॥ ७ ॥

दिगम्बर दिशांनाथ व्योमकेश चितांपते ! ।
जयाधार निराधार भस्माधार धराधर ! ॥ ८ ॥

देवदेव महादेव देवतेशादिदैवत ।
बह्निवीर्य जय स्थाणो जयायोनिजसम्भव ॥ ९ ॥

भव शर्व महाकाल भस्माङ्ग सर्पभूषण ।
त्र्यम्बकस्थपते वाचांपते भो जगतांपते ॥१०॥

शिपिविष्ट विरूपाक्ष जय लिङ्ग वृषध्वज ।

नीललोहित पिङ्गाक्ष जय खट्वाङ्गमण्डन ॥११॥
कृत्तिवास अहिर्बुध्न्य मृडानीश जटाम्बुभृत् ।
जगद्भ्रातर्जगन्मातर्जगत्तात जगद्गुरो ॥१२॥
पञ्चवक्त्र महावक्त्र कालवक्त्र गजास्यभृत् ।
दशबाहो महाबाहो महावीर्य महाबल ॥१३॥
अघोरघोरवक्त्र त्वं सद्योजात उमापते ।
सदानन्द महानन्द नन्दमूर्ते जयेश्वर ॥१४॥
एवमष्टोत्तरशतं नाम्नां देवकृतं तु ये ।
शम्भोर्भक्त्या स्मरन्तीह शृण्वन्ति च पठन्ति च ॥१५॥
न तापास्त्रिविधास्तेषां न शोको न रुजादयः ।
ग्रहगोचरपीडा च तेषां क्वाऽपि न विद्यते ॥१६॥
श्रीःप्रज्ञा-ऽऽरोग्यमायुष्यं सौभाग्यं भाग्यमुन्नतिम् ।
विद्यां धर्मं मतिः शम्भोर्भक्तिस्तेषां न संशयः ॥१७॥

इति श्रीस्कन्दपुराणे शिवाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

हिमालयकृतं शिवस्तोत्रम् (२)

हिमालय उवाच

त्वं ब्रह्मा सृष्टिकर्ता च त्वं विष्णुः परिपालकः ।
त्वं शिवः शिवदोऽनन्तः सर्वसंहारकारकः ॥१॥
त्वमीश्वरो गुणातीतो ज्योतीरूपः सनातनः ।
प्रकृतिः प्रकृतीशश्च प्राकृतः प्रकृतेः परः ॥२॥
नानारूपविधाता त्वं भक्तानां ध्यानहेतवे ।
येषु रूपेषु यत्प्रीतिस्तत्तद्रूपं बिभर्षि च ॥३॥

सूर्यस्त्वं सृष्टिजनक आधारः सर्वतेजसाम् ।
सोमस्त्वं सस्यपाता च सततं शीतरश्मिना ॥४॥

वायुस्त्वं वरुणस्त्वं च विद्वांश्च विदुषां गुरुः ।
मृत्युञ्जयो मृत्युमृत्युः कालकालो यमान्तकः ॥५॥

वेदस्त्वं वेदकर्ता च वेदवेदाङ्गपारगः ।
विदुषां जनकस्त्वं च विद्वांश्च विदुषां गुरुः ॥६॥

मन्त्रस्त्वं हि जपस्त्वं हि तपस्त्वं सत्फलप्रदः ।
वाक् त्वं रागाधिदेवी त्वं तत्कर्ता तद्गुरूः स्वयम् ॥७॥

अहो सरस्वतीबीजं कस्त्वां स्तोतुमिहेश्वरः ।
इत्येवमुक्त्वा शैलेन्द्रस्तस्थौ घृत्वा पदाम्बुजम् ॥८॥

तत्रोवास तमाबोध्य चावरुह्य वृषाच्छिवः ।
स्तोत्रमेतन्महापुण्यं त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नरः ॥९॥

मुच्यते सर्वपापेभ्यो भयेभ्यश्च भवार्णवे ।
अपुत्रो लभते पुत्रं मासमेकं पठेद्यदि ॥१०॥

भार्याहीनो लभेद् भार्यां सुशीलां सुमनोहराम् ।
चिरकालगतं वस्तु लभते सहसा ध्रुवम् ॥११॥

राज्यभ्रष्टो लभेद्राज्यं शङ्करस्य प्रसादतः ।
कारागारे श्मशाने च शत्रुग्रस्तेऽतिसङ्कटे ॥१२॥

गम्भीरेऽतिजलाकीर्णे भग्नपोते विषादने ।
रणमध्ये महाभीते हिंस्त्रजन्तुसमन्विते ।
सर्वतो मुच्यते स्तुत्वा शङ्करस्य प्रसादतः ॥१३॥

इति ब्रह्मवैवर्ते श्रीकृष्णजन्मखण्डे हिमालयकृतं शिवस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

अथ अष्टोत्तरशत शिवनामावलि

१ शिवाय नमः ।
२ महेश्वराय नमः ।
३ शंभवे नमः ।
४ पिनाकिने नमः ।
५ शशिशेखराय नमः ।
६ वामदेवाय नमः ।
७ विरूपाक्षाय नमः ।
८ कपर्द्दिने नमः ।
९ नीललोहिताय नमः ।
१० शंकराय नमः ।
११ शूलपाणये नमः ।
१२ खट्वाङ्गधारिणे नमः ।
१३ विष्णुवल्लभाय नमः ।
१४ शिपिविष्टाय नमः ।
१५ अम्बिकानाथाय नमः ।
१६ श्रीकंठाय नमः ।
१७ भक्तवत्सलाय नमः ।
१८ भवाय नमः ।
१९ शर्वाय नमः ।
२० त्रिलोकेशाय नमः ।
२१ शितिकण्ठाय नमः ।
२२ शिवाप्रियाय नमः ।
२३ उग्राय नमः ।
२४ कपालिने नमः ।
२५ कामारये नमः ।
२६ अंधकासुरसूदनाय नमः ।
२७ गंगाधराय नमः ।
२८ ललाटाक्षाय नमः ।
२९ कालकालाय नमः ।
३० कृपानिधये नमः ।
३१ भीमाय नमः ।
३२ परशुहस्ताय नमः ।
३३ मृगपाणये नमः ।
३४ जटाधराय नमः ।
३५ कैलाशवासिने नमः ।
३६ कवचये नमः ।
३७ कठोराय नमः ।
३८ त्रिपुरान्तकाय नमः ।
३९ वृषाङ्काय नमः ।
४० वृषभारूढाय नमः ।
४१ भस्मोद्धूलित विग्रहाय नमः
४२ सामप्रियाय नमः ।
४३ स्वरमयाय नमः ।
४४ त्रयीमूर्तये नमः ।
४५ अनीश्वराय नमः ।
४६ सर्वज्ञाय नमः ।
४७ परमात्मने नमः ।
४८ सोमसूर्याग्निलोचनाय नमः
४९ हविर्यज्ञमयाय नमः ।
५० सोमाय नमः ।

५१ पंचवक्त्राय नमः ।
५२ सदाशिवाय नमः ।
५३ विश्वेश्वराय नमः ।
५४ वीरभद्राय नमः ।
५५ गणनाथाय नमः ।
५६ प्रजापतये नमः ।
५७ हिरण्यरेतसे नमः ।
५८ दुर्द्धर्षाय नमः ।
५९ गिरीशाय नमः ।
६० गिरिशाय नमः ।
६१ अनघाय नमः ।
६२ भुजंगभूषणाय नमः ।
६३ भर्गाय नमः ।
६४ गिरिधन्वने नमः ।
६५ गिरिप्रियाय नमः ।
६६ कृत्तिवासाय नमः ।
६७ पुरारये नमः ।
६८ भगवते नमः ।
६९ प्रमथाधिपाय नमः ।
७० मृत्युंजयाय नमः ।
७१ सूक्ष्मतनवे नमः ।
७२ जगद्व्यापिने नमः ।
७३ जगद्गुरुवे नमः ।
७४ व्योमकेशाय नमः ।
७५ महासेनाय नमः ।
७६ जनकाय नमः ।
७७ चारुविक्रमाय नमः ।
७८ रुद्राय नमः ।
७९ भूतपतये नमः ।
८० स्थाणवे नमः ।
८१ अहिर्बुध्नाय नमः ।
८२ दिगम्बराय नमः ।
८३ अष्टमूर्तये नमः ।
८४ अनेकात्मने नमः ।
८५ सात्त्विकाय नमः ।
८६ शुद्धविग्रहाय नमः ।
८७ शाश्वताय नमः ।
८८ खण्डाय नमः ।
८९ परशुरजसे नमः ।
९० पाशविमोचकाय नमः ।
९१ मृडाय नमः ।
९२ पशुपतये नमः ।
९३ अव्ययाय नमः ।
९४ महादेवाय नमः ।
९५ देवाय नमः ।
९६ प्रभवे नमः ।
९७ पूषदन्तविदारिणे नमः ।
९८ व्यग्राय नमः ।
९९ दशाध्वरहरये नमः ।
१०० हराय नमः ।
१०१ भगनेत्रभिदे नमः ।
१०२ अव्यक्ताय नमः ।

१०३ सहस्राक्षाय नमः । १०६ अनन्ताय नमः ।
१०४ सहस्रपातये नमः । १०७ तारकाय नमः ।
१०५ अपवर्गप्रदाय नमः । १०८ परमेश्वराय नमः ।

इसके उपरान्त बैठकर हाथ जोड़ कर शिवजी की स्तुति करें—

त्रिनेत्राय नमस्तुभ्यं उमादेहार्धधारिणे ।
त्रिशूलधारिणे तुभ्यं भूतानां पतये नमः ॥
गंगाधर नमस्तुभ्यं वृषभध्वज नमोस्तुते ।
आशुतोष नमस्तुभ्यं भूयो भूयो नमो नमः ॥
आवाहनं न जानामि न जनामि विसर्जनम् ।
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर ॥

इसके बाद देवताओं का उत्तर पूजन करें तथा प्रणाम करें—

सौराष्ट्रे सोमनाथं च श्रीशैलेमल्लिकार्जुनम् ।
उज्जयिन्यां महाकाल ओंकारममरेश्वरम् ॥
केदार हिमवत्पृष्ठे डाकिन्यां भीमशंकरम् ।
वाराणस्यां च विश्वेशं त्र्यम्बकं गौतमीतटे ॥
वैद्यनाथ चिताभूमौ नागेशं दारुकावने ।
सेतुबन्धे च रामेशं घुष्मेशं च शिवालये ॥
द्वादशैतानि नामानि पूजाकाले सदा पठेत् ॥

करचरणकृतं वा क्कायजं कर्मजं वा
श्रवणनयनजं वा मानसं वाऽपराधम् ॥
विहितमविहितं वा: सर्वमेतत्क्षमस्व
जय जय करुणाब्धे श्रीमहादेव शंभो ॥
नमः पार्वतीपतये हर ।

काल हर, कंटक हर, दुःख हर, दारिद्र्य हर।
हर हर कहे तो हारे क्यों, हर का नाम विसारे क्यों।

अनेन श्रीरुद्रपूजाभिषेककर्मणा भगवद्भवानीशंकर देवता प्रीयतां न मम ।। ॐ शिवार्पणमस्तु ।।

ॐ नमः शिवाय ।। ॐ नमः शिवाय ।। ॐ नमः शिवाय ।।

अथ पौराणिक रुद्राभिषेक

वेदों एवं पुराणों में शिर्वाचन की अनेक विधियाँ वर्णन की गयी हैं। वेद के मंत्रों से अभिषेक करना सर्वसाधारण के वश की बात नहीं है। अतएव यहाँ श्री महाभारत के द्रोण–पर्व में वर्णित पौराणिक रुद्राभिषेक दे रहे हैं। भगवान् श्रीकृष्ण ने अर्जुन को इस विधि का उपदेश किया था। इसके अनेक प्रकार हैं। संतान की इच्छा वाला तन्डुल से, धन प्राप्ति के लिये बिल्वपत्र से, कन्या के लिये धान्य से (समूचे धान), दीर्घायु के लिये दूर्वाङ्कुर से, पशु–वाहन–भृत्य आदि की इच्छा के लिये गोघृत की धारा से, शत्रु नाश के लिये कुशोदक से श्री आशुतोष भगवान् शिव पर यह श्लोक बोलकर कम से कम ११ बार अभिषेक करना चाहिये। यह अभिषेक विधि भी सद्यःफलदायी है।

अभिषेक श्लोकाः

ॐ नमो भवाय शर्वाय रुद्राय वरदाय च ।
पशूनांपतये नित्यं उग्राय च कपर्दिने ॥१॥
महादेवाय भीमाय त्र्यम्बकाय शिवाय च ।
ईशानाय मखघ्नाय नमस्ते मखघातिने ॥२॥
कुमारगुर्वे नित्यं नीलग्रीवाय वेधसे ।
विलोहिताय धूम्राय व्याधिने चापराजिते ॥३॥

नित्यं नील शिखंडाय शूलिने दिव्यचक्षुषे ।
हन्त्रे गोत्रे त्रिनेत्राय व्याधाय च सुरेतसे ॥४॥
अचिन्त्यायाम्बिकामंत्र सर्वदेवस्तुताय च ।
वृषभध्वजाय मुण्डाय जटिने ब्रह्मचारिणे ॥५॥
विश्वात्मके विश्वसृजे विश्वमावृत्त तिष्ठते ।
नमो नमस्ते सत्याय भूतानां प्रभवे नमः ॥६॥
पंचवक्त्राय शर्वाय शंकराय शिवाय च ।
नमोऽस्तु वाचस्पतये प्रजानांपतये नमः ॥७॥
विश्वस्यपतये नित्यं महतांपतये नमः ।
नमः सहस्त्रशीर्षाय सहस्त्रभुजमन्यवे ॥८॥
सहस्त्रनेत्रपादाय नमः सांख्याय कर्मणे ॥९॥
नमो हिरण्यवर्णाय हिरण्यकवचाय च ।
भक्तानुकंपिने नित्यं सिद्ध्यतां नो वर प्रभो ॥१०॥
एवं स्तुस्त्वा महादेवं वासुदेवसहार्जुनः ।
प्रसादयामासभवं तदा शस्त्रोपलब्धये ॥११॥

॥ ॐ नमः पार्वतीपतये हर हर हर महादेव ॐ ॥

परिशिष्ट-प्रथमः (१)

अथ पार्थिव पूजनविधिः

जिस समय ब्रह्मा और विष्णु का विवाद हुआ था उस समय उनका गर्व दूर करने के लिये भगवान शंकर लिङ्गरूप में प्रकट हुए थे तथा उनका गर्व दूर किया था। उस समय उन्होंने उन दोनों

एवं सम्पूर्ण विश्व को अपने अनन्तस्वरूप के दर्शन कराये थे। वहीं से लिङ्गार्चन आरंभ हुआ। लिङ्गों के अनेक प्रकार हैं। शिवपुराण एवं स्कन्दपुराणों में विविध प्रकार के शिवलिङ्गों का वर्णन तथा पूजन का फल भी लिखा है। यथा—रत्नलिङ्ग, धातुलिङ्ग, स्वयंभूलिङ्ग, बाणलिङ्ग, ज्योतिर्लिङ्ग, रसलिङ्ग, नर्मदेश्वरलिङ्ग, पार्थिवेश्वर लिङ्ग, आदि अनेक प्रकार के लिङ्गों का वर्णन मिलता है। यहाँ यही सोचकर शान्ति हो जाती है कि—

शिवतत्त्वं न जानामि कीदृशोऽसि महेश्वर॥
यादृशोऽसि महादेव तादृशाय नमोस्तु ते॥

अतएव यहाँ हम पार्थिवेश्वरलिङ्ग की सामान्य पूजन विधि का वर्णन करते हैं। यों तो पार्थिव नाम पृथ्वी से उत्पन्न होने का है। अतः सभी पाषाणलिङ्ग पार्थिवेश्वर होते हैं, किन्तु प्रायः मिट्टी एवं बालू आदि से निर्मित लिङ्ग को ही पार्थिवेश्वरलिङ्ग कहते हैं।

पार्थिवेश्वरलिङ्ग पूजन क्रम

आरंभ में पहले लिखी विधि के अनुसार आचमन, प्राणायाम, भूशुद्धि, जलशुद्धि, स्वस्तिवाचन, संकल्प आदिक सारे कृत्य करें।

हरो महेश्वरश्चैव शूलपाणिः पिनाकधृक्॥
शिवःपशुपतिश्चैव महादेव विसर्जनम्॥

"ॐ ह्रां पृथिव्यै नमः" मंत्र से पृथ्वी की प्रार्थना करें।

"ॐ हराय नमः" कहकर मृत्तिका ग्रहण करें।

"ॐ बं" कहकर मिट्टी गूँथें।

"ॐ शूलपाणये नमः" से प्रतिमा की स्थापना करें।

इसके बाद हाथ में जल लेकर विनियोग छोड़ें—

ॐ अस्य श्रीशिवपंचाक्षरमन्त्रस्य वामदेवऋषिः अनुष्टुप्छन्दः श्रीसदाशिवो देवता ॐ बीजं। नमः शक्तिः। शिवाय कीलकं। ममसाम्बसदाशिवप्रीतये पूजने—जपे च विनियोगः॥

ॐ वामदेवाय ऋषये नमः शिरसि । ॐ अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे । ॐ सदाशिवदेवतायै नमः हृदि । ॐ बीजाय नमः गुह्ये । ॐ शक्तये नमः पादयोः । ॐ शिवायकीलकाय नमः सर्वाङ्गे । ॐ शिं सद्योजाताय नमः गुह्ये । ॐ वां वामदेवाय नमो मूर्ध्नि । ॐ यं ईशानाय नमो मुखे । ॐ अं अंगुष्ठाभ्याम् नमः । ॐ नं तर्जनीभ्याम् स्वाहा । ॐ मं मध्यमाभ्याम् वषट् । ॐ शिं अनामिकाभ्याम् हुं । ॐ वां कनिष्ठिकाभ्याम् वौषट् । ॐ यं करतलकरपृष्ठाभ्याम् फट् । ॐ हृदयाय नमः । ॐ नं शिरसे स्वाहा । ॐ मं शिखायै वषट् । ॐ शिं कवचाय हुँ । ॐ वां नेत्रत्रयाय वौषट् । ॐ यं अस्त्राय फट् ।

इस प्रकार अंगन्यास करने के बाद प्राण प्रतिष्ठा करे ।

विनियोग—

ॐ अस्य श्री प्राणप्रतिष्ठामंत्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः ऋषयः ऋग्यजुः सामानिच्छन्दांसि क्रियामय वपुः—प्राणाख्या देवता आँ वीजम्, ह्रीं शक्तिः, क्रौं कीलकम्, देवप्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः ।

ॐ ब्रह्मविष्णुरुद्रऋषिभ्यो नमः शिरसि । ऋग्यजुःसामच्छन्दसेभ्यो नमो मुखे । प्राणाख्या देवतायै नमः हृदि । आँ बीजाय नमो गुह्ये । क्लीं शक्तये नमः पादयोः । क्रौं कीलकाय नमः सर्वांगे ।

ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः सोऽहं शिवस्य प्राणाः इह प्राणाः ।। ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः सोऽहं शिवस्य जीव इह स्थितः ।। ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः सोऽहं शिवस्य सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनस्त्वक्चक्षु-श्रोत्र—घ्राण—जिह्वा-पाणि—पाद—पायूपस्थानि इहागत्य सुखं-चिरं—तिष्ठन्तु स्वाहा ।।

इसके बाद हाथ में ही पार्थिवलिङ्ग लिए हुए शिवजी का आवाहन करें —

ॐ भूः पुरुषं साम्बसदाशिवमावाहयामि।
ॐ भुवः पुरुषं साम्बसदाशिवमावाहयामि।
ॐ स्वः पुरुषं साम्बसदाशिवमावाहयामि।

स्वामिन् सर्वजगन्नाथ यावत् पूजावसानकम्॥
तावत्वं प्रीतिभावेन लिङ्गेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

इसके बाद पहले लिखी विधि से पूजन–पाठ–अभिषेक–आरती–पुष्पाञ्जलि करे फिर चावल छोड़ कर विसर्जन करे—

इसके बाद अभिषेक का जल लेकर आचमन एवं मार्जन करे।

ॐ देवस्यंत्वासवितुः प्प्रसवेश्श्विनो र्ब्बाहुब्भ्यां पूष्णो हस्ताब्भ्याम्। सरस्वत्यैव्वाचोयन्तुर्य्यन्त्रियै दधामि बृहस्प्पतेष्ट्वासाम्म्राज्ज्येनाभिषिंचाम्यसो॥

ॐ आपोहिष्ठा.............आदि मंत्रों से भी अभिषेक करे।

॥ इति पार्थिवेश्वरार्चनविधिः॥ ॥ शुभम्॥

॥ ॐ सदाशिवार्पणमस्तु ॐ॥

परिशिष्ट द्वितीय (२)

ॐ नमः शिवाय

महामृत्युञ्जय-जपविधिः

श्रीमहामृत्युञ्जयजप बड़ा कठिन एवं तत्काल चमत्कारिक फलदाता है। इसी मंत्र की सिद्धि प्राप्त करके शुक्राचार्य में वह

शक्ति आ गयी थी कि वे मृतक को पुनः जीवित कर देते थे। फिर मरणासन्न और आपदग्रस्त की तो बात ही क्या है। इनका नाम ही मृत्युञ्जय है। इनकी श्रद्धाविधि के साथ उपासना करने से दैहिक—दैविक—आधिभौतिक आदि सारे संकट टल जाते हैं। महामृत्युञ्जय की उपासना भगवान् शंकर की उपासना का ही एक भेद है। सामान्यतया प्रायः यह उपासना रोगादि शान्ति के लिये करते हैं, किन्तु इससे सभी प्रकार के संकटों की निवृत्ति होती है। जैसे-राजभय-शत्रुभय-अभिचारभय-अपमृत्युभय-अग्निभय-सर्पभय-कारागारभयादि समस्त ज्ञाताज्ञात भय दूर होते हैं। यदि विधानपूर्वक इनकी आराधना की जाये तो सभी प्रकार से जीवमात्र की रक्षा होती है।

जप करने वाला व्यक्ति मन—वाणी—बुद्धि का संयम करता हुआ आचमन—प्राणायाम करके श्रीगणेशादि देवताओं का स्मरण करे तथा शान्तिपाठ या स्वस्तिवाचन करे। यथा सुविधानुसार शिवपूजन करे तथा ध्यान में श्रीमहामृत्युञ्जय का विशेष ध्यान करें।

संकल्प—ॐ विष्णुः ३ देशकालौसंकीर्त्य ....गोत्रः ....शर्माऽहं (.......गोत्रेण.......नियुक्तोऽहं.......) मम (यजमानस्य) जन्मपत्रानुसारेण ....महादशा—मध्ये ....अन्तरजन्यपीड़ापरिहारार्थं तथा च नवग्रहाणांपीडामपि शान्त्यर्थं मम सकल दैहिक—दैविक—आधिभौतिक समस्त ज्ञाताज्ञात सांसर्गिक पापदोष शमनार्थं, राजभय, चौरभय, शत्रुभय, रोगभय, डाकिनी—शकिनी, पिशाच, वेतालादिभय निवारणार्थं उत्तमायुरारोग्य—ऐश्वर्याभिवृद्ध्यर्थं तथा च भगवान्महामृत्युञ्जयदेवता प्रीत्यर्थं न्यास—ध्यान—पूजनपूर्वकं महामृत्युञ्जयजपानि करिष्ये (यदि यजमान् के लिए कर रहा हो तो 'करिष्यामि' कहे)।

(आदि में ऋष्यादि न्यास करे ।)

ॐ वामदेवकहोलवशिष्ठा—ऋषयः मूर्ध्नि । ॐ पंक्तिगायत्री—अनुष्टुप्छन्दांसि मुखे । ॐ सदाशिवमहामृत्युञ्जयदेवतायै नमो हृदि । ॐ ह्रीं शक्तये नमो लिङ्गे । ॐ श्रीं बीजाय नमः पादयोः ।

इसके बाद विनियोग छोड़ें —

ॐ अस्य श्रीमहामृत्युञ्जयमंत्रस्य वामदेव कहोल वशिष्ठाःऋषयः पंक्तिर्गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दांसि सदाशिवमृत्युञ्जयदेवता ह्रीं शक्तिं श्रीं बीजम् श्रीमहामृत्युञ्जयप्रीतये पूर्वसिद्धाये जपे विनियोगः ॥

मन्त्रः–ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवःस्वः त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ॥ ऊर्वारुक मिवबन्धान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् भूर्भुवस्वरोम् जूं सः हौं ॐ ॥

अथ मंत्रन्यासः–ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं ॐ नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा हृदयाय नमः । ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः यजामहे ॐ नमो भगवते रुद्रायामृतमूर्तये मां जीवय शिरसि स्वाहा ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः पुष्टिवर्द्धनम् ॐ नमो भगवते रुद्राय चन्द्रशिरसे जटिने स्वाहा शिखायै वषट् ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः उर्व्वारुकमिवबन्धनात् ॐ नमो भगवते त्रिपुरान्तकाय ॐ ह्रां ह्रीं कवचाय हुम् ॥ ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय ॐ नमो भगवतेरुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुःसाममंत्राय नेत्रत्रयाय वौषट् । ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मामृतात् ॐ नमो भगवते रुद्राय ॐ अग्नित्रयायज्वलज्वालाय मां रक्ष रक्ष अघोराय अस्त्राय फट् ॥

अथ मंत्र-न्यासः–ॐ त्र्यम्बकं शिरसि । ॐ यजामहे भ्रुवोः । ॐ सुगन्धिं नेत्रयोः । ॐ पुष्टिवर्द्धनं मुखे । ॐ उर्वारुक

गण्डयोः । ॐ इव हृदये । ॐ बन्धनात् जठरे । ॐ मृत्योर्लिङ्गे । ॐ मुक्षीय ऊर्वोः । ॐ मा जान्वोः । ॐ अमृतात्पादयोः ॥

इस प्रकार मूल मंत्र से न्यास करने के पश्चात् ध्यान करे—

ॐ हस्ताम्भोज युगस्थ कुम्भयुगलादुद्धृत्य तोयं शिरः ।
सिञ्चन्तं करयोर्युगेन दधतं स्वाङ्के सकुम्भौ करौ ॥
अक्षस्त्रग्मृगहस्तमम्बुजगतं मूर्धस्थ चन्द्रास्त्रवत् ।
पीयूषार्द्रतनुं भजे सगिरिजं मृत्युञ्जयं त्र्यम्बकम् ॥१॥
ॐ चन्द्रोद्भासित मूर्धजं सुरपतिं पीयूषपात्रंवहत् ।
हस्ताब्जे न दधत्सुदिव्यममलैर्हास्यास्यपङ्केरुहम् ॥
सूर्येन्द्वग्निविलोचनं करतले पाशाक्षसूत्राङ्कुशाम् ।
भोजं विभ्रतमक्षयं पशुपतिं मृत्युञ्जयं तंस्मरे ॥२॥

इस प्रकार भगवान् महामृत्युञ्जय का ध्यान करके यथोपचार पूजन अथवा नीचे लिखे मन्त्रों से मानसिक पूजन करे—

ॐ लं पृथिव्यात्मकं गंधं समर्पयामि ।
ॐ हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि ।
ॐ यं वायव्यात्मकं धूपं समर्पयामि ।
ॐ रं तैजसात्मकं दीपं समर्पयामि ।
ॐ वं अमृतात्मकं नैवेद्यं समर्पयामि ।
ॐ सं सर्वात्मकं पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि ।

पूजन के उपरान्त अच्छिन्न जलधारा की व्यवस्था भी करे तो अत्युत्तम है । यह धारा जप—पर्यन्त चलती रहे ।

इसके उपरान्त आरती एवं पुष्पाञ्जलि करके उत्तर पूजन करे । इसके उपरान्त पहले मंत्र का जप करे । जप के उपरांत आरती पुष्पाञ्जलि आदि करे । इसके बाद उत्तर—पूजन तथा जपार्पण करे । इसके लिये हाथ में पुष्पाक्षतजल लेकर देवता के दक्षिण कर की

र मंत्र बोलता हुआ छोड़ दे —

मृत्युञ्जयमहारुद्रो त्राहिमां शरणागतम् ॥
जन्ममृत्युजरारोगैः पीडितं कर्मबन्धनैः ॥
गुह्यातिगुह्य गोप्ता त्वं ग्रहाणास्मत्कृतं जपम् ॥
सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादान्महेश्वरः ॥

अनेन श्रीमहामृत्युञ्जयजपाख्येन कर्मणा महामृत्युञ्जयदेवता प्रीयतां न मम ।

इसकी सम्पूर्ण सिद्धि के लिये अपामार्ग की समिधा को दूध घृत और मधु से डुबो कर जप का दशांश हवन, हवन का दशांश तर्पण करे, तर्पण का दशांश मार्जन करे तथा मार्जन का दशांश ब्राह्मण भोजन कराये । इस प्रकार विधिवत अनुष्ठान करने से बड़ी बड़ी व्याधियों का भी निवारण हो जाता है ।

॥ ॐ नमः शिवाय ॥ शुभम् ॥

परिशिष्ट तृतीयः (३)

॥ ॐ नमः शिवाय ॥

पश्चिमवक्त्र पूजन ॥१॥

इस पूजन में विशेषरूप से मैनसिल का तिलक, श्वेत पुष्पाक्षत गुगुल की धूप, घृत का दीपक तथा खीर का नैवेद्य करें । प्रथम जल लेकर विनियोग छोड़े—

ॐ सद्योजातमित्यस्य सद्योजात ऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः सद्योजातो देवता श्वेतवर्णं हंसवाहनं पश्चिमवक्त्रं पृथिवी तत्त्वम् पश्चिमवक्त्र पूजने विनियोगः ॥

ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः ॥ भवे भवे नातिभवे भवस्व

मां भवोद्भवाय नमः ॥

पूजन करे उसके बाद हाथ में अक्षत लेकर कलाओं का आवाहन करें—

ॐ ऋद्ध्यै नमः । ॐ सिद्ध्यै नमः । ॐ धृत्यै नमः । ॐ लक्ष्म्यै नमः । ॐ मेधायै नमः । ॐ कान्त्यै नमः । ॐ स्वधायै नमः । ॐ प्रभायै नमः ।

ध्यानम्–प्रालेयामल विन्दु कुन्दधवलं गोक्षीर फेनप्रभम् ॥
भस्माभ्यङ्गमनंग देह दहन ज्वालावली लोचनम् ॥
ब्रह्मेन्द्राग्निमरुद्गणैः स्तुतिपरैरभ्यर्चितं योगिभिः ॥
वन्देऽहं सकलं कलंकरहितं स्थाणोर्मुखं पश्चिमम् ॥१॥
शुभ्रं त्रिलोचनं नाम्ना सद्योजातं शिवप्रदम् ॥
शुद्ध स्फटिक संकाशं वन्देऽहं पश्चिमं मुखम् ॥२॥

उत्तरवक्त्र पूजन ॥२॥

इनके पूजन में विशेषरूप से हरिचन्दन का तिलक, तुलसीपत्र कमल का पुष्प, पंचसौगन्धिक धूप तथा घृतपक्व गोधूम का नैवेद्य चढ़ावे तथा आदि में जल लेकर विनियोग छोड़े—

ॐ वामदेवायेत्यस्य वामदेवऋषिः जगतीछन्दः विष्णुर्देवता कृष्णवर्णंगरुडवाहनं उत्तरवक्त्रं आपस्तत्वं उत्तरवक्त्र पूजने विनियोगः ।

ॐ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय

नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नम ॆ सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः ॥

कला पूजन—ॐ रजसे नमः। ॐ रक्षायै नमः। ॐ रत्यै नमः। ॐ पाल्यायै नमः। ॐ कामायै नमः। ॐ संजीविन्यै नमः। ॐ सियायै नमः। ॐ बुध्यै नमः। ॐ क्रियायै नमः। ॐ धात्र्यै नमः। ॐ भ्रामर्यै नमः। ॐ ज्वरायै नमः।

ध्यानम्—गौरं कुंकुमपिङ्गलं सुतिलकं व्यापाण्डुगंडस्थलम् ॥
भ्रू विपेक्ष कटाक्ष वीक्षण लसत्संसक्त कर्णोत्पलम् ॥
स्निग्धं बिम्बकलाधरं प्रहसितं नीलालकालंकृतम् ॥
वन्दे पूर्ण शशांक मण्डलनिभं वक्त्रं हरस्योत्तरम् ॥१॥
वामदेवं सुवर्णाभं दिव्यास्त्रगणसेवितम् ॥
अजन्मानमुमाकान्तं वन्देऽहं ह्युत्तरं मुखम् ॥२॥

दक्षिणवक्त्र पूजन ॥३॥

इनके पूजन में विशेषरूप से कृष्णागरु का तिलक, नीलकमल एवं करबीर (कनेर) के पुष्प, सफेद अगर की धूप तथा उड़द की दाल का बना नैवेद्य का भोग लगावे। हाथ में लेकर विनियोग करे—

ॐ अघोरेभ्येत्यस्य अघोरऋषिः अनुष्टुप्छन्दः रुद्रोदेवता नीलवर्णं कूर्मवाहनं दक्षिणवक्त्रं तेजस्तत्त्वं दक्षिणवक्त्रपूजने विनियोगः।

ॐ अघोरेभ्योथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः ॥ सर्वेभ्य ॆ सर्वशर्वेभ्यो नमस्तेऽअस्तु रुद्ररूपेभ्य ॆ ॥

कलापूजन– ॐ तमसे नमः । ॐ मोहायै नमः । ॐ क्षयायै नमः । ॐ निद्रायै नमः । ॐ व्याधये नमः । ॐ मृत्यवे नमः । ॐ सुधायै नमः । ॐ तृषायै नमः ॥

ध्यानम्–ॐ कालाभ्रभ्रमरांजनाचलनिभं व्यादीप्तपिङ्गेक्षणम् ॥
खण्डेन्दुद्युतिमाश्रिग्रदशनं प्रोभिन्नदंष्ट्रांकुरम् ॥
सर्प प्रोत कपालशक्ति सुलभं व्याकीर्ण तच्छेश्वरम् ॥
वन्दे दक्षिणमीश्वरस्य जटिलं भ्रूभङ्ग रौद्रं मुखं ॥१॥
नीलाभ्रवर्णमोंकारमघोरं घोरदंष्ट्रकम् ॥
दंष्ट्राकरालमत्युग्रं वन्देऽहं दक्षिणं मुखम् ॥२॥

पूर्ववक्त्र पूजन ॥४॥

इनके पूजन में हरताल का तिलक, दूर्वाङ्कुर, अकोड़ा के पुष्प तथा अन्य नाना पुष्प कृष्णागरु की धूप तथा मोदक का नैवेद्य अर्पण करें । हाथ में जल लेकर विनियोग छोड़ें—

ॐ तत्पुरुषायेत्यस्य तत्पुरुषऋषिः गायत्रीछन्दः रुद्रोदेवता पीतवर्णं अश्ववाहनं पूर्ववक्त्रं वायुस्तत्त्वं पूर्ववक्त्र पूजने विनियोगः ।

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि ॥ तन्नोरुद्रः प्रचोदयात् ॥

कलापूजन– ॐ निवृत्यै नमः । ॐ प्रतिष्ठायै नमः । ॐ विद्यायै नमः । ॐ शान्त्यै नमः ।

ध्यानम्–ॐ संवर्ताग्नितडित्प्रदीप्तकनक प्रस्पर्धित:तेजोऽरुणम् ॥
गम्भीर स्मितनिःसृतोग्रदशनं प्रोद्भासिताम्राधरम् ॥
बलेन्दुद्युति लोलपिङ्गल जटाभारं प्रबद्धोरगम् ॥
वन्दे सिद्ध सुरासुरेन्द्र नमितं पूर्वमुखं शूलिनः ॥१॥
बालार्कमारक्तं पुरुषं च तडित्प्रभम् ॥
दिव्यं पिङ्गजटाधारं वन्देऽहं पूर्वदिङ्मुखम् ॥२॥

ऊर्ध्ववक्त्र पूजन ॥५॥

इनके पूजन में विशेषरूप से भस्म का तिलक, बिल्वपत्र, धतूरे का पुष्प तथा अन्य पुष्प भी, हरिचन्दन की धूप तथा दही भात शक्कर का नैवेद्य भोग लगावे। हाथ में जल लेकर विनियोग छोड़े।

ॐ ईशानेत्यस्य ईशान ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः रुद्रोदेवता गोक्षीर वर्ण वृषभवाहनम् ऊर्ध्ववक्त्रं आकाशतत्त्वम् ऊर्ध्ववक्त्र पूजने विनियोगः।

ॐ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानाम् ॥ ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणो-धिपतिर्ब्रह्मा शिवो मेऽअस्तु सदा शिवोम् ॥

कलापूजन– ॐ शशिन्यै नमः। ॐ अङ्गदायै नमः। ॐ इष्टायै नमः। ॐ मरिच्यै नमः। ॐ ज्वालिन्यै नमः।

ध्यानम्–ॐ व्यक्ताव्यक्त गुणोतरं सुवक्दनंषड्विंशतत्वाधिकम् ॥
वेदाद्यक्षर मंत्रशास्त्रनिलयं ध्येयं सदा योगिभिः ॥
वन्देतामस वर्जितेन मनसा सूक्ष्मातिसूक्ष्मं परम् ॥
शान्तं पंचमीश्वरस्य वदनं खव्याप्त तेजोमयम् ॥१॥
ईशानं सूक्ष्मव्यक्तं तेजपुंज परायणम् ॥
अमृतस्त्राविचिद्रूपं वन्देऽहं पंचमंमुखम् ॥२॥

इस प्रकार भगवान शंकर के पांचों–मुखों का पूजन करे तथा नीचे लिखे तीनों मंत्रों का पाठ करे। यह इनकी वैदिक स्तुति है।

ॐ नमोस्तु । रुद्रेभ्यो ये दिवि येषां वर्षमिषवः । तेभ्यो दशप्राचीर्दश दक्षिणादशप्रतीचीर्दशोदीचीर्द-शोर्ध्वाः । तेभ्यो नमोऽअस्तु ते नोवन्तुते नो मृडयन्तु ते यन्द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टितमेषाजंभे दध्मः ॥१॥

ॐ नमोस्तु रुद्रेभ्यो येन्तरिक्षे येषां व्वातऽइषवः । तेभ्यो दशप्राचीर्दश दक्षिणादशप्रतीचीर्दशोदीचीर्द-शोर्ध्वाः । तेभ्यो नमोऽअस्तु ते नोव्वन्तुते नो मृडयन्तु ते यन्द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टितमेषाजंभे दध्मः ॥२॥

ॐ नमोस्तु रुद्रेभ्यो ये पृथिव्यां य्येषामन्नमिषवः ॥ तेभ्यो दशप्राचीर्दश दक्षिणादशप्रती-

च्चीर्दिशोदीं च्चीर्दशोर्ध्वा ऽ । तेभ्यो नमोऽअस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यन्द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषां जंभे दध्म ऽ ॥३॥

परिशिष्ट चतुर्थ (४)

॥ ॐ नमः शिवाय ॥

श्रीशिवरात्रि एवं श्रीप्रदोष-उद्यापनविधिः

भगवान शंकर की उपासना करने वाले भक्तजन नाना प्रकार के विधि—विधानों से उनकी आराधना करते हैं तथा भोग और मोक्ष दोनों फल प्राप्त करते हैं। इन्हीं अनेक विधानों में शिवरात्रि, प्रदोष, श्रावण के सोमवार आदि पर्वों का व्रत—पूजन—उद्यापन आदि भी करते हैं। इन सबकी उद्यापन विधि प्रायः एकसी ही हे। थोड़ा बहुत अन्तर हो जाता है। यहाँ संक्षिप्तरूप से जनसाधारण के कर सकने योग्य विधि का उल्लेख कर रहे हैं। हमें आशा है कि इसके द्वारा भक्तजन लाभान्वित होंगे।

उद्यापन करने वाले व्यक्ति को चाहिये कि पहले दिन मनवाणी और इन्द्रियों का संयम करे तथा सात्विकवृत्ति धारण करता हुआ महादेव—पार्वती के गुणानुवादों का चिन्तन करे। सात्विक एवं स्वल्पाहार करे तथा उद्यापन में प्रयुक्त होने वाली सामग्री का संकलन करे। प्रातःकाल ब्राह्मबेला में उठे तथा शौच—स्नान—संध्यादि कार्यों को सम्पन्न करे। फूल—बिल्वपत्र—दूर्वा—आक के फूल—बिल्व फल—धतूर फल आदि विशेष रूप से सुधार कर रक्खे। योग्य आचार्य की अध्यक्षता में लिंगतोभद्रवेदी का निर्माण करावे। एक पट्टे (पीढ़े) पर

गौरी—गणेश, षोडशमातृका—नवग्रह—घृतमातृका की स्थापना हेतु स्थान एवं आकार की रचना कराये। दो कलश तांबे के तथा ५ कलश मृतिका के स्थापित करे। कदलीस्तंभ, बन्दनवार, ध्वजा आदि से मण्डप रचना करे तथा पूर्वोक्त वेदी आदि को तथा कलशों को मण्डप में स्थापित करे। मण्डप के ऊपर वितान (चन्दोवा) ताने।

इस प्रकार सम्पूर्ण व्यवस्था करने के उपरांत यजमान आचार्य तथा अन्य ब्राह्मणों के लिये उत्तम आसन की व्यवस्था करे। यजमान पूर्व की ओर मुख करके सपत्नीक बैठ जाये तथा आचमन प्राणायाम करे। ॐ अपवित्रः इत्यादि मंत्र से मार्जन करे। चांदी—सोने—कुशा—दूर्वा आदि की पवित्री धारण करे। इसके बाद शान्तिपाठ अथवा स्वस्तिवाचन के मंगलमंत्रों का पाठ करे। इसके बाद "ॐ तत्वायामि............" इत्यादि मंत्र से कर्मपात्र की स्थापना तथा सम्पूर्ण सामग्री का प्रोक्षण करे। फिर देशकालादि का उचारणपूर्वक प्रतिज्ञा संकल्प करे। पृथ्वी—दीपक—सूर्य या चन्द्रमा को अर्घ देकर गणेश—गौरी—कलशस्थापना, पुण्याहवाचन—षोडशमातृका, घृतमातृका, ग्रहपूजन आदि करे। इसके उपरांत आचार्य—ब्रह्मा—ऋत्विक—गाणपत्य आदि का वरण करे। फिर लिङ्गतोभद्र वेदी पर वेदमंत्रों से अथवा पौराणिकमंत्रों से अथवा नाममंत्रों से देवताओं की स्थापना करे। उनका आवाहन—प्रतिष्ठा—पूजन करके बेदी पर तांबे के कलश (ताम्र कलश) की स्थापना करे। शिव—पार्वती की चांदी—सोने की प्रतिमाओं को अग्न्युतारणपूर्वक पूजन के विधान से प्राण प्रतिष्ठा करे। ध्यान से पुष्पांजलि तक विधिवत् अर्चन करें। उसमें विशेषरूप से माता पार्वती के पूज़न में कज्जल, सिन्दूर आदि अनेक सौभाग्यद्रव्य, कौशेय वस्त्र, आभूषण एवं सौभाग्य मंजूषा अर्पण करे। सदाशिव के पूजन में पहनने के पाँचों वस्त्र, सोने—चाँदी के बिल्वपत्र, चांदी के नन्दीश्वर, त्रिशूल, डमरू, अर्धचन्द्र, मृगछाला, कुंडी—सोंटा, विजया (ठंडाई का सामान), यज्ञोपवीत,

खड़ाऊँ आदि चढ़ावे । विशेष पूजन करने के लिये "शिवसहस्रनामावली" से पुष्प—कमल—बिल्वपत्र या अन्य कोई वस्तु हजार की संख्या में अर्पण करे । इसके बाद रुद्री पाठ, कथाश्रवण या संकीर्तनपूर्वक रात्रिजागरण करे । प्रातःकाल या रात्रि में ही हवन करे । शाकल्य में चावल की खीर भी मिला लें ।

हवन के बाद उत्तरपूजन, स्विष्टकृद्होम, नवाहुति, क्षेत्रपाल एवं दिग्पालों की बलि दे । पूर्णाहुति, पूर्णपात्रदान, गोदान, वृषभदान, शैय्यादान, आचार्यादिकों को दक्षिणादान तथा ब्राह्मण भोजन का संकल्प करे । प्रदोष व्रत में २६ युग्म ब्राह्मणों को, शिवरात्रि में १४ युग्म तथा सोमवार में ७ को अथवा यथेच्छ ब्राह्मणों को भेजन करावे । वेदी का सारा सामान आचार्य को अर्पण कर दे । इसके बाद मां अन्नपूर्णा का ध्यान करते हुये उमामहेश्वर का प्रसाद ग्रहण करे ।

परिशिष्ट-५

शिवसहस्रनामावलिः

सङ्कल्पः

यजमानः, आचम्य, प्राणानायम्य, हस्ते—जलाऽक्षत—पुष्प—द्रव्याण्यादायाद्येत्याद्युच्चार्य, शुभपुण्यतिथौ अमुकनाम्नो मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य सकलपापक्षयनिवृत्तिपूर्वक—दीर्घायुः—पुत्र—पौत्राद्यनवच्छिन्न सन्ततिवृद्धिस्थिरलक्ष्म्यै-हिकाऽऽमुष्मिक-सकलकामनासिद्धिद्वारा धर्माऽर्थकाममोक्ष-चतुर्विधपुरुषार्थ-फलावाप्तये श्रीसदाशिवप्रीत्यर्थं शिवसहस्रनामभिः सदाशिवोपरि सहस्रबिल्वपत्रसमर्पणं करिष्ये ।

विनियोगः

ॐ अस्य श्रीसदाशिवसहस्रनामस्तोत्रमन्त्रस्य नारायण ऋषिः, श्रीसदाशिवो देवता, अनुष्टुप्छन्दः, सदाशिवो बीजम्, गौरीशक्तिः, श्रीसदाशिवप्रीत्यर्थं तद्दिव्यसहस्रनामभिः अमुकद्रव्य

(बिल्वपत्रमन्दारपुष्प—धतूर—नीलकमलादि) समर्पणे विनियोगः ।

करन्यासः

ॐ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । ॐ नं तर्जनीभ्यां नमः ।
ॐ मः मध्यमाभ्यां नमः । ॐ शिं अनामिकाभ्यां नमः ।
ॐ वां कनिष्ठिकाभ्यां नमः । ॐ यं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

अङ्गन्यासः

ॐ हृदयाय नमः । ॐ नं शिरसे स्वाहा ।
ॐ मः शिखायै वषट् । ॐ शिं कवचाय हुम् ।
ॐ वां नेत्रत्रयाय वौषट् । ॐ यं अस्त्राय फट् ।

ध्यानम्

(१)

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम् ।
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं,
विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम् ॥

(२)

कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम् ।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानी सहितं नमामि ॥

(३)

कर-चरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा
श्रवण-नयनजं वा मानसं वाऽपराधम् ।
विहितमविहितं वा सर्वमेतत् क्षमस्व
जय जय करुणाब्धे ! श्रीमहादेव ! शम्भो ! ॥

१ ॐ स्थिराय नमः
२ ॐ स्थाणवे नमः
३ ॐ प्रभवे नमः
४ ॐ भीमाय नमः
५ ॐ प्रवराय नमः
६ ॐ वरदाय नमः
७ ॐ वराय नमः
८ ॐ सर्वात्मने नमः
९ ॐ सर्वविख्याताय नमः
१० ॐ सर्वस्मै नमः
११ ॐ सर्वकराय नमः
१२ ॐ भवाय नमः
१३ ॐ जटिने नमः
१४ ॐ चर्मिणे नमः
१५ ॐ शिखण्डिने नमः
१६ ॐ सर्वाङ्गाय नमः
१७ ॐ सर्वभावनाय नमः
१८ ॐ हराय नमः
१९ ॐ हरिणाक्षाय नमः
२० ॐ सर्वभूतहराय नमः
२१ ॐ प्रभवे नमः
२२ ॐ प्रवृत्तये नमः
२३ ॐ निवृत्तये नमः
२४ ॐ नियताय नमः
२५ ॐ शाश्वताय नमः
२६ ॐ ध्रुवाय नमः
२७ ॐ श्मशानवासिने नमः
२८ ॐ भगवते नमः
२९ ॐ खेचराय नमः
३० ॐ गोचराय नमः
३१ ॐ अर्दनाय नमः
३२ ॐ अभिवाद्याय नमः
३३ ॐ महाकर्मणे नमः
३४ ॐ तपस्विने नमः
३५ ॐ भूतभावनाय नमः
३६ ॐ उन्मत्तवेषप्रच्छन्नाय नमः
३७ ॐ सर्वलोकप्रजापतये नमः
३८ ॐ महारूपाय नमः
३९ ॐ महाकायाय नमः
४० ॐ वृषरूपाय नमः
४१ ॐ महायशसे नमः
४२ ॐ महात्मने नमः
४३ ॐ सर्वभूतात्मने नमः
४४ ॐ विश्वरूपाय नमः
४५ ॐ महाहनवे नमः
४६ ॐ लोकपालाय नमः

४७ ॐ अन्तर्हितात्मने नमः
४८ ॐ प्रसादाय नमः
४९ ॐ हयगर्दभये नमः
५० ॐ पवित्राय नमः
५१ ॐ महते नमः
५२ ॐ नियमाय नमः
५३ ॐ नियमाश्रिताय नमः
५४ ॐ सर्वकर्मणे नमः
५५ ॐ स्वयम्भूताय नमः
५६ ॐ आदये नमः
५७ ॐ आदिकराय नमः
५८ ॐ निधये नमः
५९ ॐ सहस्राक्षाय नमः
६० ॐ विशालाक्षाय नमः
६१ ॐ सोमाय नमः
६२ ॐ नक्षत्रसाधकाय नमः
६३ ॐ चन्द्राय नमः
६४ ॐ सूर्याय नमः
६५ ॐ शनये नमः
६६ ॐ केतवे नमः
६७ ॐ ग्रहाय नमः
६८ ॐ ग्रहपतये नमः
६९ ॐ वराय नमः
७० ॐ अत्रये नमः
७१ ॐ अत्र्यानमस्कर्त्रे नमः

७२ ॐ मृगबाणार्पणाय नमः
७३ ॐ अनघाय नमः
७४ ॐ महातपसे नमः
७५ ॐ घोरतपसे नमः
७६ ॐ अदीनाय नमः
७७ ॐ दीनसाधकाय नमः
७८ ॐ संवत्सराय नमः
७९ ॐ मन्त्राय नमः
८० ॐ प्रमाणाय नमः
८१ ॐ परमन्तपाय नमः
८२ ॐ योगिने नमः
८३ ॐ योज्याय नमः
८४ ॐ महाबीजाय नमः
८५ ॐ महारेतसे नमः
८६ ॐ महाबलाय नमः
८७ ॐ सुवर्णरेतसे नमः
८८ ॐ सर्वज्ञाय नमः
८९ ॐ सुबीजाय नमः
९० ॐ बीजवाहनाय नमः
९१ ॐ दशबाहवे नमः
९२ ॐ अनिमिषाय नमः
९३ ॐ नीलकण्ठाय नमः
९४ ॐ उमापतये नमः
९५ ॐ विश्वरूपाय नमः
९६ ॐ स्वयंश्रेष्ठाय नमः

ॐ बलवीराय नमः

ॐ अबलाय नमः

ॐ गणाय नमः

० ॐ गणकर्त्रे नमः

१ ॐ गणपतये नमः

२ ॐ दिग्वाससे नमः

३ ॐ कामाय नमः

४ ॐ मन्त्रविदे नमः

५ ॐ परमाय नमः

६ ॐ मन्त्राय नमः

०७ ॐ सर्वभावकराय नमः

०८ ॐ हराय नमः

०९ ॐ कमण्डलुधराय नमः

१० ॐ धन्विने नमः

११ ॐ बाणहस्ताय नमः

१२ ॐ कपालवते नमः

११३ ॐ अशनिने नमः

११४ ॐ शतघ्निने नमः

११५ ॐ खड्गिने नमः

११६ ॐ पट्टिशिने नमः

११७ ॐ आयुधिने नमः

११८ ॐ महते नमः

११९ ॐ स्रुवहस्ताय नमः

१२० ॐ सुरूपाय नमः

१२१ ॐ तेजसे नमः

१२२ ॐ तेजस्करनिधये नमः

१२३ ॐ उष्णीषिणे नमः

१२४ ॐ सुवक्त्राय नमः

१२५ ॐ उदग्राय नमः

१२६ ॐ विनताय नमः

१२७ ॐ दीर्घाय नमः

१२८ ॐ हरिकेशाय नमः

१२९ ॐ सुतीर्थाय नमः

१३० ॐ कृष्णाय नमः

१३१ ॐ शृगालरूपाय नमः

१३२ ॐ सिद्धार्थाय नमः

१३३ ॐ मुण्डाय नमः

१३४ ॐ सर्वशुभंकराय नमः

१३५ ॐ अजाय नमः

१३६ ॐ बहुरूपाय नमः

१३७ ॐ गन्धधारिणे नमः

१३८ ॐ कपर्दिने नमः

१३९ ॐ ऊर्ध्वरेतसे नमः

१४० ॐ ऊर्ध्वलिङ्गाय नमः

१४१ ॐ ऊर्ध्वशायिने नमः

१४२ ॐ नभस्थलाय नमः

१४३ ॐ त्रिजटाय नमः

१४४ ॐ चीरवाससे नमः

१४५ ॐ रुद्राय नमः

१४६ ॐ सेनापतये नमः

१४७ ॐ विभवे नमः
१४८ ॐ अहश्चराय नमः
१४९ ॐ नक्तञ्चराय नमः
१५० ॐ तिग्ममन्यवे नमः
१५१ ॐ सुवर्चसाय नमः
१५२ ॐ गजघ्ने नमः
१५३ ॐ दैत्यघ्ने नमः
१५४ ॐ कालाय नमः
१५५ ॐ लोकधात्रे नमः
१५६ ॐ गुणाकराय नमः
१५७ ॐ सिंहशार्दूलरूपाय नमः
१५८ ॐ आर्द्रचर्माम्बरावृताय नमः
१५९ ॐ कालयोगिने नमः
१६० ॐ महानादाय नमः
१६१ ॐ सर्वकामाय नमः
१६२ ॐ चतुष्पथाय नमः
१६३ ॐ निशाचराय नमः
१६४ ॐ प्रेतचारिणे नमः
१६५ ॐ भूतचारिणे नमः
१६६ ॐ महेश्वराय नमः
१६७ ॐ बहुभूताय नमः
१६८ ॐ बहुधरायं नमः
१६९ ॐ स्वर्भानवे नमः
१७० ॐ अमिताय नमः
१७१ ॐ गतये नमः
१७२ ॐ नृत्यप्रियाय नमः
१७३ ॐ नित्यनर्ताय नमः
१७४ ॐ नर्तकाय नमः
१७५ ॐ सर्वलालसाय नमः
१७६ ॐ घोराय नमः
१७७ ॐ महातपसे नमः
१७८ ॐ पाषाय नमः
१७९ ॐ नित्याय नमः
१८० ॐ गिरिरुहाय नमः
१८१ ॐ नभसे नमः
१८२ ॐ सहस्त्रहस्ताय नमः
१८३ ॐ विजयाय नमः
१८४ ॐ व्यवसायाय नमः
१८५ ॐ अतीन्द्रियाय नमः
१८६ ॐ अघर्षणाय नमः
१८७ ॐ घर्षणात्मने नमः
१८८ ॐ यज्ञघ्ने नमः
१८९ ॐ कामनाशकाय नमः
१९० ॐ दक्षयागापहारिणे नमः
१९१ ॐ सुसहाय नमः
१९२ ॐ मध्यमाय नमः
१९३ ॐ तेजोपहारिणे नमः
१९४ ॐ बलघ्ने नमः
१९५ ॐ मुदिताय नमः
१९६ ॐ अर्थाय नमः

१९७ ॐ अजिताय नमः
१९८ ॐ अवराय नमः
१९९ ॐ गम्भीराय नमः
२०० ॐ गभीराय नमः
२०१ ॐ गम्भीरबलवाहनाय नमः
२०२ ॐ न्यग्रोधरूपाय नमः
२०३ ॐ न्यग्रोधाय नमः
२०४ ॐ वृक्षकर्णस्थितये नमः
२०५ ॐ विभवे नमः
२०६ ॐ सुतीक्ष्णदशनाय नमः
२०७ ॐ महाकायाय नमः
२०८ ॐ महाननाय नमः
२०९ ॐ विष्वक्सेनाय नमः
२१० ॐ हरये नमः
२११ ॐ यज्ञाय नमः
२१२ ॐ संयुगापीडवाहनाय नमः
२१३ ॐ तीक्ष्णतापाय नमः
२१४ ॐ हर्यश्वाय नमः
२१५ ॐ सहाय नमः
२१६ ॐ कर्मकालविदे नमः
२१७ ॐ विष्णुप्रसादिताय नमः
२१८ ॐ यज्ञाय नमः
२१९ ॐ समुद्राय नमः
२२० ॐ वडवामुखाय नमः
२२१ ॐ हुताशनसहाय नमः
२२२ ॐ प्रशान्तात्मने नमः
२२३ ॐ हुताशनाय नमः
२२४ ॐ उग्रतेजसे नमः
२२५ ॐ महातेजसे नमः
२२६ ॐ जन्याय नमः
२२७ ॐ विजयकालविदे नमः
२२८ ॐ ज्योतिषामयनाय नमः
२२९ ॐ सिद्धये नमः
२३० ॐ सर्वविग्रहाय नमः
२३१ ॐ शिखिने नमः
२३२ ॐ मुण्डिने नमः
२३३ ॐ जटिने नमः
२३४ ॐ ज्वालिने नमः
२३५ ॐ मूर्तिजाय नमः
२३६ ॐ मूर्धगाय नमः
२३७ ॐ बलिने नमः
२३८ ॐ वेणविने नमः
२३९ ॐ पणविने नमः
२४० ॐ तालिने नमः
२४१ ॐ खलिने नमः
२४२ ॐ कालकण्टकाय नमः
२४३ ॐ नक्षत्रविग्रहमतये नमः
२४४ ॐ गुणबुद्धये नमः
२४५ ॐ लयाय नमः
२४६ ॐ अगमाय नमः

२४७ ॐ प्रजापतये नमः
२४८ ॐ विश्वबाहवे नमः
२४९ ॐ विभागाय नमः
२५० ॐ सर्वगाय नमः
२५१ ॐ अमुखाय नमः
२५२ ॐ विमोचनाय नमः
२५३ ॐ सुसरणाय नमः
२५४ ॐ हिरण्यकवचोद्भवाय नमः
२५५ ॐ मेढ्रजाय नमः
२५६ ॐ बलचारिणे नमः
२५७ ॐ महीचारिणे नमः
२५८ ॐ स्रुताय नमः
२५९ ॐ सर्वतूर्यनिनादिने नमः
२६० ॐ सर्वतोद्यपरिग्रहाय नमः
२६१ ॐ व्यालरूपाय नमः
२६२ ॐ गुहावासिने नमः
२६३ ॐ गुहाय नमः
२६४ ॐ मालिने नमः
२६५ ॐ तरङ्गविदे नमः
२६६ ॐ त्रिदशाननाय नमः
२६७ ॐ त्रिकालधृगे नमः
२६८ ॐ कर्मसर्वबन्धविमोचनाय नमः
२६९ ॐ असुरेन्द्राणांबन्धनाय नमः
२७० ॐ युधिशत्रुविनाशनाय नमः
२७१ ॐ सांख्यप्रसादाय नमः
२७२ ॐ दुर्वाससे नमः
२७३ ॐ सर्वसाधुनिषेविताय नमः
२७४ ॐ प्रस्कन्दनाय नमः
२७५ ॐ विभागज्ञाय नमः
२७६ ॐ अतुल्याय नमः
२७७ ॐ यज्ञभागविदे नमः
२७८ ॐ सर्वचारिणे नमः
२७९ ॐ सर्ववासाय नमः
२८० ॐ दुर्वाससे नमः
२८१ ॐ वासवाय नमः
२८२ ॐ अमराय नमः
२८३ ॐ हैमाय नमः
२८४ ॐ हेमकराय नमः
२८५ ॐ अयज्ञसर्वधारिणे नमः
२८६ ॐ धरोत्तमाय नमः
२८७ ॐ लोहिताक्षाय नमः
२८८ ॐ महाक्षाय नमः
२८९ ॐ विजयाक्षाय नमः
२९० ॐ विशारदाय नमः
२९१ ॐ सर्वकामदाय नमः
२९२ ॐ सर्वकालप्रसादाय नमः
२९३ ॐ सुबलाय नमः
२९४ ॐ बलरूपधृगे नमः
२९५ ॐ संग्रहाय नमः

२९६ ॐ निग्रहाय नमः
२९७ ॐ कर्त्रे नमः
२९८ ॐ सर्पचीरनिवासाय नमः
२९९ ॐ मुख्याय नमः
३०० ॐ अमुख्याय नमः
३०१ ॐ देहाय नमः
३०२ ॐ काहलये नमः
३०३ ॐ सर्वकामवराय नमः
३०४ ॐ सर्वदाय नमः
३०५ ॐ सर्वतोमुखाय नमः
३०६ ॐ आकाशनिर्विरूपाय नमः
३०७ ॐ निपातिने नमः
३०८ ॐ अवशाय नमः
३०९ ॐ खगाय नमः
३१० ॐ रौद्ररूपाय नमः
३११ ॐ अंशवे नमः
३१२ ॐ आदित्याय नमः
३१३ ॐ बहुरश्मये नमः
३१४ ॐ सुवर्चसिने नमः
३१५ ॐ वसुवेगाय नमः
३१६ ॐ महावेगाय नमः
३१७ ॐ मनोवेगाय नमः
३१८ ॐ निशाचराय नमः
३१९ ॐ सर्ववासिने नमः
३२० ॐ श्रियावासिने नमः
३२१ ॐ उपदेशकराय नमः
३२२ ॐ अकराय नमः
३२३ ॐ मुनये नमः
३२४ ॐ आत्मनिरालोकाय नमः
३२५ ॐ संभग्नाय नमः
३२६ ॐ सहस्त्रदाय नमः
३२७ ॐ पक्षिणे नमः
३२८ ॐ पक्षरूपाय नमः
३२९ ॐ अतिदीप्ताय नमः
३३० ॐ विशाम्पतये नमः
३३१ ॐ उन्मादाय नमः
३३२ ॐ मदनाय नमः
३३३ ॐ कामाय नमः
३३४ ॐ अश्वत्थाय नमः
३३५ ॐ अर्थकाराय नमः
३३६ ॐ यशसे नमः
३३७ ॐ वामदेवाय नमः
३३८ ॐ वामाय नमः
३३९ ॐ प्राचे नमः
३४० ॐ दक्षिणाय नमः
३४१ ॐ वामनाय नमः
३४२ ॐ सिद्धयोगिने नमः
३४३ ॐ महर्षये नमः
३४४ ॐ सिद्धार्थाय नमः
३४५ ॐ सिद्धसाधकाय नमः

३४६ ॐ भिक्षवे नमः
३४७ ॐ भिक्षुरूपाय नमः
३४८ ॐ विपणाय नमः
३४९ ॐ मृदवे नमः
३५० ॐ अव्ययाय नमः
३५१ ॐ महासेनाय नमः
३५२ ॐ विशाखाय नमः
३५३ ॐ षष्टिभागाय नमः
३५४ ॐ गवाम्पतये नमः
३५५ ॐ वज्रहस्ताय नमः
३५६ ॐ विष्कम्भिने नमः
३५७ ॐ चमूस्तम्भनाय नमः
३५८ ॐ वृत्तावृत्तकराय नमः
३५९ ॐ तालाय नमः
३६० ॐ मधवे नमः
३६१ ॐ मधुकलोचनाय नमः
३६२ ॐ वाचस्पत्याय नमः
३६३ ॐ वाचसनाय नमः
३६४ ॐ आश्रमपूजिताय नमः
३६५ ॐ ब्रह्मचारिणे नमः
३६६ ॐ लोकचारिणे नमः
३६७ ॐ सर्वचारिणे नमः
३६८ ॐ विचारविदे नमः
३६९ ॐ ईशानाय नमः
३७० ॐ ईश्वराय नमः
३७१ ॐ कालाय नमः
३७२ ॐ निशाचारिणे नमः
३७३ ॐ पिनाकधृगे नमः
३७४ ॐ निमित्तस्थाय नमः
३७५ ॐ निमित्ताय नमः
३७६ ॐ नन्दये नमः
३७७ ॐ नन्दिकराय नमः
३७८ ॐ हरये नमः
३७९ ॐ नन्दीश्वराय नमः
३८० ॐ नन्दिने नमः
३८१ ॐ नन्दनाय नमः
३८२ ॐ नन्दिवर्धनाय नमः
३८३ ॐ भगहारिणे नमः
३८४ ॐ निहन्त्रे नमः
३८५ ॐ कालाय नमः
३८६ ॐ ब्रह्मणे नमः
३८७ ॐ पितामहाय नमः
३८८ ॐ चतुर्मुखाय नमः
३८९ ॐ महालिङ्गाय नमः
३९० ॐ चारुलिङ्गाय नमः
३९१ ॐ लिङ्गाध्यक्षाय नमः
३९२ ॐ सुराध्यक्षाय नमः
३९३ ॐ योगाध्यक्षाय नमः
३९४ ॐ युगावहाय नमः
३९५ ॐ बीजाध्यक्षाय नमः

३९६ ॐ बीजकर्त्रे नमः
३९७ ॐ अध्यात्मानुगताय नमः
३९८ ॐ बलाय नमः
३९९ ॐ इतिहासाय नमः
४०० ॐ सङ्कल्पाय नमः
४०१ ॐ गौतमाय नमः
४०२ ॐ निशाकराय नमः
४०३ ॐ दम्भाय नमः
४०४ ॐ अदम्भाय नमः
४०५ ॐ वैदम्भाय नमः
४०६ ॐ वश्याय नमः
४०७ ॐ वशकराय नमः
४०८ ॐ कलये नमः
४०९ ॐ लोककर्त्रे नमः
४१० ॐ पशुपतये नमः
४११ ॐ महाकर्त्रे नमः
४१२ ॐ अनौषधाय नमः
४१३ ॐ अक्षराय नमः
४१४ ॐ परब्रह्मणे नमः
४१५ ॐ बलवते नमः
४१६ ॐ शक्राय नमः
४१७ ॐ नीतये नमः
४१८ ॐ अनीतये नमः
४१९ ॐ शुद्धात्मने नमः
४२० ॐ मान्याय नमः
४२१ ॐ शुद्धाय नमः
४२२ ॐ गतागताय नमः
४२३ ॐ बहुप्रसादाय नमः
४२४ ॐ सुस्वप्नाय नमः
४२५ ॐ दर्पणाय नमः
४२६ ॐ अमित्रजिते नमः
४२७ ॐ वेदकराय नमः
४२८ ॐ मन्त्रकाराय नमः
४२९ ॐ विदुषे नमः
४३० ॐ समरमर्दनाय नमः
४३१ ॐ महामेघनिवासिने नमः
४३२ ॐ महाघोराय नमः
४३३ ॐ वशिने नमः
४३४ ॐ कराय नमः
४३५ ॐ अग्निज्वालाय नमः
४३६ ॐ महाज्वालाय नमः
४३७ ॐ अतिधूम्राय नमः
४३८ ॐ हुताय नमः
४३९ ॐ हविशे नमः
४४० ॐ वृषणाय नमः
४४१ ॐ शङ्कराय नमः
४४२ ॐ वर्चस्विने नमः
४४३ ॐ धूमकेतनाय नमः
४४४ ॐ नीलाय नमः
४४५ ॐ अङ्गलुब्धाय नमः

४४६ ॐ शोभनाय नमः
४४७ ॐ निरवग्रहाय नमः
४४८ ॐ स्वस्तिदाय नमः
४४९ ॐ स्वस्तिभावाय नमः
४५० ॐ भागिने नमः
४५१ ॐ भागकराय नमः
४५२ ॐ लघवे नमः
४५३ ॐ उत्सङ्गाय नमः
४५४ ॐ महाङ्गाय नमः
४५५ ॐ महागर्भपरायणाय नमः
४५६ ॐ कृष्णवर्णाय नमः
४५७ ॐ सुवर्णाय नमः
४५८ ॐ सर्वदेहिनामिन्द्रियाय नमः
४५९ ॐ महापादाय नमः
४६० ॐ महाहस्ताय नमः
४६१ ॐ महाकायाय नमः
४६२ ॐ महायशसे नमः
४६३ ॐ महामूर्ध्ने नमः
४६४ ॐ महामात्राय नमः
४६५ ॐ महानेत्राय नमः
४६६ ॐ निशालयाय नमः
४६७ ॐ महान्तकाय नमः
४६८ ॐ महाकर्णाय नमः
४६९ ॐ महोष्ठाय नमः
४७० ॐ महानवे नमः

४७१ ॐ महानासाय नमः
४७२ ॐ महाकम्बवे नमः
४७३ ॐ महाग्रीवाय नमः
४७४ ॐ श्मशानभाजे नमः
४७५ ॐ महावक्षसे नमः
४७६ ॐ महोरस्काय नमः
४७७ ॐ अन्तरात्मने नमः
४७८ ॐ मृगालयाय नमः
४७९ ॐ लम्बनाय नमः
४८० ॐ लम्बितोष्ठाय नमः
४८१ ॐ महामायाय नमः
४८२ ॐ पयोनिधये नमः
४८३ ॐ महादन्ताय नमः
४८४ ॐ महादंष्ट्राय नमः
४८५ ॐ महाजिह्वाय नमः
४८६ ॐ महामुखाय नमः
४८७ ॐ महानखाय नमः
४८८ ॐ महारोम्णे नमः
४८९ ॐ महाकेशाय नमः
४९० ॐ महाजटाय नमः
४९१ ॐ प्रसन्नाय नमः
४९२ ॐ प्रसादाय नमः
४९३ ॐ प्रत्ययाय नमः
४९४ ॐ गिरिसाधनाय नमः
४९५ ॐ स्नेहनाय नमः

५९५ ॐ सकामारये नमः
५९६ ॐ महादंष्ट्राय नमः
५९७ ॐ महायुधाय नमः
५९८ ॐ बहुधानिन्दिताय नमः
५९९ ॐ शर्वाय नमः
६०० ॐ शङ्कराय नमः
६०१ ॐ शङ्कराय नमः
६०२ ॐ अधनाय नमः
६०३ ॐ अमरेशाय नमः
६०४ ॐ महादेवाय नमः
६०५ ॐ विश्वदेवाय नमः
६०६ ॐ सुरारिघ्ने नमः
६०७ ॐ अहिर्बुध्न्याय नमः
६०८ ॐ अनिलाभाय नमः
६०९ ॐ चेकिताय नमः
६१० ॐ हविषे नमः
६११ ॐ अजैकपादे नमः
६१२ ॐ कपालिने नमः
६१३ ॐ त्रिशङ्कवे नमः
६१४ ॐ अजिताय नमः
६१५ ॐ शिवाय नमः
६१६ ॐ धन्वन्तरये नमः
६१७ ॐ धूमकेतवे नमः
६१८ ॐ स्कन्दाय नमः
६१९ ॐ वैश्रवणाय नमः
६२० ॐ धात्रे नमः
६२१ ॐ शक्राय नमः
६२२ ॐ विष्णवे नमः
६२३ ॐ भिन्नाय नमः
६२४ ॐ त्वष्ट्रे नमः
६२५ ॐ ध्रुवाय नमः
६२६ ॐ धराय नमः
६२७ ॐ प्रभवाय नमः
६२८ ॐ सर्वगवे नमः
६२९ ॐ अर्यम्णे नमः
६३० ॐ सवित्रे नमः
६३१ ॐ रवये नमः
६३२ ॐ उषङ्गवे नमः
६३३ ॐ विधात्रे नमः
६३४ ॐ मान्धात्रे नमः
६३५ ॐ भूतभावनाय नमः
६३६ ॐ विभवे नमः
६३७ ॐ वर्णविभाविने नमः
६३८ ॐ सर्वकामगुणावहाय नमः
६३९ ॐ पद्मनाभाय नमः
६४० ॐ महागर्भाय नमः
६४१ ॐ चन्द्रवक्त्राय नमः
६४२ ॐ अनिलाय नमः
६४३ ॐ अनलाय नमः
६४४ ॐ बलवते नमः

६९४ ॐ सर्वभूतवाहिने नमः

६९५ ॐ सर्वभूतनिलयाय नमः

६९६ ॐ विभवे नमः

६९७ ॐ भवाय नमः

६९८ ॐ अमोघाय नमः

६९९ ॐ संयताय नमः

७०० ॐ अश्वाय नमः

७०१ ॐ भोजनाय नमः

७०२ ॐ प्राणधारणाय नमः

७०३ ॐ धृतिमते नमः

७०४ ॐ मतिमते नमः

७०५ ॐ दक्षाय नमः

७०६ ॐ सत्कृताय नमः

७०७ ॐ युगाधिपाय नमः

७०८ ॐ गोपालाय नमः

७०९ ॐ गोपतये नमः

७१० ॐ ग्रामाय नमः

७११ ॐ गोचर्मवसनाय नमः

७१२ ॐ हरये नमः

७१३ ॐ हिरण्यबाहवे नमः

७१४ ॐ प्रवेशिनां गुहापालाय नमः

७१५ ॐ प्रकृष्टारये नमः

७१६ ॐ महाहर्षाय नमः

७१७ ॐ जितकामाय नमः

७१८ ॐ जितेन्द्रियाय नमः

७१९ ॐ गान्धाराय नमः

७२० ॐ सुवासाय नमः

७२१ ॐ तपःसक्ताय नमः

७२२ ॐ रतये नमः

७२३ ॐ नराय नमः

७२४ ॐ महागीताय नमः

७२५ ॐ महानृत्याय नमः

७२६ ॐ अप्सरोगणसेविताय नमः

७२७ ॐ महाकेतवे नमः

७२८ ॐ महाधातवे नमः

७२९ ॐ नैकसानुचराय नमः

७३० ॐ चलाय नमः

७३१ ॐ आवेदनीयाय नमः

७३२ ॐ आदेशाय नमः

७३३ ॐ सर्वगन्धसुखावहाय नमः

७३४ ॐ तोरणाय नमः

७३५ ॐ तारणाय नमः

७३६ ॐ वाताय नमः

७३७ ॐ परिधिने नमः

७३८ ॐ पतिखेचराय नमः

७३९ ॐ संयोगवर्धनाय नमः

७४० ॐ गुणाधिकवृद्धाय नमः

७४१ ॐ अधिवृद्धाय नमः

७४२ ॐ नित्यात्मसहाय नमः

७४३ ॐ देवासुरपतये नमः

७९४ ॐ अचलोपमाय नमः
७९५ ॐ बहुमालाय नमः
७९६ ॐ महामालाय नमः
७९७ ॐ शशिहरसुलोचनाय नमः
७९८ ॐ विस्तारलवणकूपाय नमः
७९९ ॐ त्रियुगाय नमः
८०० ॐ सफलोदयाय नमः
८०१ ॐ त्रिनेत्राय नमः
८०२ ॐ विषाणाङ्गाय नमः
८०३ ॐ मणिविद्धाय नमः
८०४ ॐ जटाधराय नमः
८०५ ॐ बिन्दवे नमः
८०६ ॐ विसर्गाय नमः
८०७ ॐ सुमुखाय नमः
८०८ ॐ शराय नमः
८०९ ॐ सर्वायुधाय नमः
८१० ॐ सहाय नमः
८११ ॐ निवेदनाय नमः
८१२ ॐ सुखाजाताय नमः
८१३ ॐ सुगन्धाराय नमः
८१४ ॐ महाधनुषे नमः
८१५ ॐ गन्धपालिभगवते नमः
८१६ ॐ सर्वकर्मोत्थानाय नमः
८१७ ॐ मन्थानबहुलबाहवे नमः
८१८ ॐ सकलाय नमः
८१९ ॐ सर्वलोचनाय नमः
८२० ॐ तलस्तालाय नमः
८२१ ॐ करस्थालिये नमः
८२२ ॐ ऊर्ध्वसंहननाय नमः
८२३ ॐ महते नमः
८२४ ॐ छत्राय नमः
८२५ ॐ सुच्छत्राय नमः
८२६ ॐ विख्यातलोकाय नमः
८२७ ॐ सर्वाश्रयक्रमाय नमः
८२८ ॐ मुण्डाय नमः
८२९ ॐ विरूपाय नमः
८३० ॐ विकृताय नमः
८३१ ॐ दण्डिने नमः
८३२ ॐ कुण्डिने नमः
८३३ ॐ विकुर्वाणाय नमः
८३४ ॐ हर्यक्षाय नमः
८३५ ॐ ककुभाय नमः
८३६ ॐ वज्रिणे नमः
८३७ ॐ शतजिह्वाय नमः
८३८ ॐ सहस्रपदे नमः
८३९ ॐ सहस्रमूर्ध्ने नमः
८४० ॐ देवेन्द्राय नमः
८४१ ॐ सर्वदेवमयाय नमः
८४२ ॐ गुरवे नमः
८४३ ॐ सहस्रबाहवे नमः

९९४ ॐ नियमेन्द्रियवर्धनाय नमः

९९५ ॐ सिद्धार्थाय नमः

९९६ ॐ सिद्धभूतार्थाय नमः

९९७ ॐ अचिन्त्याय नमः

९९८ ॐ सत्यव्रताय नमः

९९९ ॐ शुचये नमः

१००० ॐ व्रताधिषाय नमः

१ ॐ पराय नमः

२ ॐ ब्रह्मणे नमः

३ ॐ भक्तानां परमागतये नमः

४ ॐ विमुक्ताय नमः

५ ॐ मुक्ततेजसे नमः

६ ॐ श्रीमते नमः

७ ॐ श्रीवर्धनाय नमः

८ ॐ जगते नमः

॥ इति श्री शिव सहस्रनामावलिः समाप्तम् ॥

परिशिष्ट-६

अथ शतरुद्रिय पाठविधानः

प्रथम रुद्री के पंचम अध्याय के ६६ मन्त्रों का पाठ करे। इसके उपरांत पुनः नमस्ते आदि सोलह मन्त्रों का पाठ करे तो यहाँ तक ८२ मन्त्र होंगे फिर आगे लिखे मन्त्रों का पाठ करने से शतरुद्रीय हो जाती है।

ॐ एषते। रुद्रभाग ऽ सह स्वस्राम्बिकया तञ्जुषस्व ऽ स्वाहैषते रुद्रभाग ऽ आखुस्ते पशु ऽ ॥८३॥ अवरुद्रमदीमह्यव देवन्त्र्यम्बकम्॥ यथानो व्वस्य सस्करद्यथानः श्श्रेय सस्करद्यथा नो व्व्यवसाययात्॥८४॥ नमस्तेरुद्रमन्यव ऽ उतोत ऽ इषवेनमः बाहुब्भ्यामुतते नमः॥८५॥ या ते रुद्रशिवातनूरघोरा पापकाशिनी तया नस्तन्वा शन्तमयागिरि शन्ताभिचाकशी हि॥८६॥ न तं व्विदाथय

इमा जजानान्यद्युष्मा कमन्तरं बभूव ।
नीहारेण प्रावृता जल्प्या चासुतृपऽ
उक्थशासश्चरन्ति ॥८७॥ विश्वकर्मा
ह्यजनिष्ट देव आदिद्गन्धर्वोऽ अभवद्
द्वितीयः तृतीयः पिताजनितौषधी
नामपाङ्गर्भं व्यदधात् पुरुत्रा ॥८८॥
मीढुष्टम शिवतम । शिवोनः सुमना भव
परमेव्वृक्षऽआयुधन्निधाय कृत्तिंव्वसान
ऽ आचरपिनाकम्बिऽभ्रदा गहि ॥८९॥
विकिरिदद्र व्विलोहित ॥ नमस्तेऽ
ऽ अस्तुभगव ॥ यास्ते सहस्र ७ हेतयो
न्यमस्मन्निवपन्तुताः ॥९०॥ सहस्राणि
सहस्रशोबाह्वोस्तव हेतयः ॥
तासामीशानो भगवः पराचीनामुखा
कृधि ॥९१॥ असङ्ख्याता सहस्राणि ये

रुद्द्राअधिभूम्म्याम् ॥ तेषा ऌ सहस्त्र-
योजने वधन्न्वानितन्नमसि ॥९२॥व्वय ऌ
सोमव्व्रते तवमनस्तनूषु बिब्भ्रत ँ ॥
प्रजावन्त ँ सचेमहि ॥९३॥ एषते ।
रुद्रभाग ँ सहस्व स्त्राम्बिकया
तञ्जुषस्वस्वाहैषते रुद्द्रभागऽ आखु-
स्तेपशु ँ ॥९४॥ अवरुद्द्रमदीमह्य-
वदेवन्त्र्यम्बकम् ॥ यथा नो व्वस्य
सस्क्करद्द्यथान ँ श्श्रेय सस्क्कर
द्यथानो व्व्यवसाय यात् ॥९५॥
भेषजमसि भेषजङ्गवे श्श्वाय पुरुषाय
भेषजम् ॥ सुखम्मेषाय मेष्ष्यै ॥९६॥
त्र्यम्बकं य्यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्धनम् ।
उर्व्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्म्मुक्षीय
मामृतात् ॥ त्र्यम्बकं य्यजामहे

सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम् ॥ उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥९७॥

एतत्ते । रुद्रावसं तेन परो मूजवतोऽतीहि ॥ अवततधन्वा पिनाकावसः कृत्तिवासा अहिंसन्नः शिवोऽतीहि ॥९८॥ त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम् ॥ यद्देवेषु त्र्यायुषन्तन्नोऽअस्तु त्र्यायुषम् ॥९९॥ शिवो नामासि स्वधितिस्ते पिता नमस्तेऽअस्तु मा मा हिंसीः ॥ निवर्त्तयाम्यायुषेऽन्नाद्याय प्रजननाय रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्य्याय ॥१००॥

परिशिष्ट-७

अथ रुद्राक्ष माहात्म्य एवं धारण मंत्र

(श्रीयुत् पं० रमाशंकर जी त्रिपाठी के सौजन्य से)

भगवान् शंकर सृष्टि में आदि देव हैं। सभी देवता इन्हें नमन करते हैं। जिस समय सारे देवता त्रिपुरासुर से परास्त हो गये तो वे शिवजी की शरण में गये। वहाँ उन्होंने भगवान् शंकर से त्रिपुरासुर के भय निवारण के लिये प्रार्थना की और वे भगवान् आशुतोष त्रिपुरासुर को मारने के लिये तैय्यार होने लगे। उन्होंने अपने हाथ में कालबज्र के समान अघोरास्त्र उठा लिया। उस दिव्यास्त्र के तेज से शिव के नेत्रों से जल-बिन्दु गिरे और वे पृथ्वी में विलीन हो गये उन्हीं से रुद्राक्ष के वृक्ष की उत्पत्ति हुयी। उन वृक्षों में जो फल लगे वे रुद्राक्ष कहलाये। वे साक्षात् शिवस्वरूप होते हैं। उन्हें धारण करने वाला भी शिवस्वरूप होता है। ये रुद्राक्ष अनेक मुखों वाले होते हैं। उनके पृथक्—पृथक् गुण तथा प्रभाव होते हैं। यहाँ कुछ रुद्राक्षों की महिमा एवं धारणीय मंत्रों का संकलन दे रहे हैं।

जो व्यक्ति रुद्राक्ष धारण करता है वह साक्षात् रुद्रतुल्य हो जाता है। इसके स्पर्शमात्र से पूजन अनुष्ठान आदि कार्यों का फल लाख गुना बढ़ जाता है। इसकी माला धारण करने से वह फल कोटि गुना होता है। हाथ—कान—मस्तक—कंठ आदि सभी अंगों में विधानपूर्वक धारण करने से वे अनन्त फलदायक होते हैं। ऐसा व्यक्ति संसार में शिव के समान पूजनीय होता है। उसके दर्शन करने से शिवदर्शन के समान फल की प्राप्ति होती है। जिन्होंने सारे जीवन पाप कर्म किये हैं, जो सर्वदा अशुद्ध हैं, घोरातिघोर पातकों से युक्त हैं, ब्रह्महत्या—गोहत्या जैसे महापातकी लोग भी रुद्राक्ष धारण करने से पापमुक्त हो जाते हैं। रुद्राक्ष के अभाव

में मिट्टी का बना रुद्राक्ष भी मनुष्य के २१ पीढ़ियों को रुद्रलोक का वास देने वाला होता है जैसा कहा है कि—

मृन्मयं वापि रुद्राक्षं कृत्वा चैवावधारयेत् ॥

रुद्राक्ष यदि अधम पशु—पक्षी के भी शरीर में पड़ा हो और उसके साथ उसकी मृत्यु हो जाय तो वह भी रुद्रलोक का अधिकारी होता है। इसकी आकृति कई प्रकार की छोटी, बड़ी, बीच की और भी कई प्रकार की होती है। इसके सम्बन्ध में कहा है कि—

''रुद्राक्षं शिवलिंगं च स्थूलं स्थूलं प्रशस्यते ॥''

अस्तु, यह प्रायः एक से चौदह मुखों का देखा गया है। शरीर पर धारण में रुद्राक्षों का विशेष महत्व है। इसके बारे में लिखा है कि ३२ दाने कंठ में, ४० दाने शिर में, ६—६ दाने कानों में, १२—१२ दाने हाथ के पहुँचों में, १६—१६ दाने भुजाओं में, १ शिखा में, १०८ दाने वक्ष पर जो धारण करता है वह साक्षात् नीलकण्ठ के समान हो जाता है।

रुद्राक्षों का धारण करने के लिये भगवान् शिव का पूजन तथा उसी प्रकार रुद्राक्ष का पूजन उनके मंत्रों द्वारा करें। इसके बाद वेदपाठी ब्राह्मण या शैव—सम्प्रदाय के साधक से स्वस्तिवाचन पूर्वक धारण करे। इसके बाद उसे शिवस्वरूप मान कर द्रव्य दक्षिणा फल नैवेद्य आदि से सम्मानित करे। इससे रुद्राक्ष धारण करने के उत्तम फल की प्राप्ति होती है। एक हजार रुद्राक्ष के मंत्र को जप करे।

१. एकमुखी रुद्राक्ष–

एकमुखी रुद्राक्ष साक्षात् शिवस्वरूप होता है। इसको धारण करने से ब्रह्महत्या जैसे महापातक दूर होते हैं। यह कठिनता से प्राप्त होता है।

धारण मंत्र—ॐ ऐं हं औं ऐं ॐ।

२. दोमुखी रुद्राक्ष–

दो मुख का रुद्राक्ष शिव पार्वती का स्वरूप होता है । इसके धारण करने से गोहत्या, अंगच्छेद जैसे बड़े पातक निर्मल हो जाते हैं ।

धारण मंत्र— ॐ क्षीं ह्रीं क्षौं व्रीं ॐ ।

३. तीनमुखी रुद्राक्ष–

तीन मुखों का रुद्राक्ष अग्निस्वरूप होता है । इसके धारण करने से स्त्री–हत्या का पातक दूर होता है । रक्तचाप के उच्चमान को समान करता है ।

धारण मंत्र— ॐ रं इं ह्रीं हूं ॐ ।

४. चारमुखी रुद्राक्ष–

यह साक्षात् प्रजापति ब्रह्मा का स्वरूप होता है । इसे धारण करने से नरहत्या का पाप दूर होता है । वंशवृद्धि के लिये इसको धारण करना चाहिये ।

धारण मंत्र— ॐ वां क्रां तां हां ईं ॐ ।

५. पंचमुखी रुद्राक्ष–

पंचमुखी साक्षात् शिव का स्वरूप होता है । इसके धारण करने से अगम्यागमन, भक्ष्याभक्ष्य जैसे पातक दूर होते हैं ।

धारण मंत्र— ॐ ह्रां आं क्ष्म्यौं स्वाहा ।

६. षड्मुखी रुद्राक्ष–

यह स्वामी कुमार का स्वरूप होता है । इसको दाहिनी भुजा पर धारण करने से गर्भपात, बालहत्या जैसे निन्दनीय पातकों से मुक्ति होती है । कचहरी आदि राजदरबार में इसे धारण करने से विजय होती है ।

धारण मंत्र— ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सौं ऐं ॐ ।

७. सप्तमुखी रुद्राक्ष–

यह अनन्त नाम का होता है। इसके धारण करने से स्वर्ण की चोरी, गोहत्या जैसे सैकड़ों पाप छूट जाते हैं।

धारण मंत्र— ॐ हं क्रीं ह्रीं सौं ॐ।

८. अष्टमुखी रुद्राक्ष–

यह साक्षात् गणेशजी का स्वरूप होता है। इसके धारण करने से कम तौलना, परस्त्री–गमन जैसे पातकों से मुक्ति होती है। सर्वत्र यश कीर्ति प्राप्त होती है।

धारण मंत्र— ॐ ह्रां ग्रीं लं आं श्रीं ॐ।

९. नवमुखी रुद्राक्ष–

यह साक्षात् भैरव का स्वरूप होता है। यह कपिलवर्ण का होता है। इसके बायीं भुजा में धारण करने वाला साक्षात् रुद्रतुल्य हो जाता है तथा सर्वत्र विजयी होता है।

धारण मंत्र— ॐ ह्रीं वं यं रं लं ॐ।

१०. दशमुखी रुद्राक्ष–

यह साक्षात् भगवान् विष्णु का स्वरूप है। इसके धारण करने से नवग्रहजन्य पीड़ा, भूत–प्रेत–बेताल–ब्रह्मराक्षस आदि शान्त होते हैं। इसके धारण करने वाले को सर्पदंश का भय नहीं होता है। धर्म की ओर प्रवृत्ति होती है।

धारण मंत्र— ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं व्रीं ॐ।

११. एकादशमुखी रुद्राक्ष–

यह एकादश रुद्रों का एक स्वरूप है। जो व्यक्ति इसको शिखा में धारण करता है उसे हजारों अश्वमेधों का, सैकड़ों बाजपेय यज्ञों का फल प्राप्त होता है। चन्द्रग्रहण में दान करने का फल सदैव प्राप्त होता रहता है।

धारण मंत्र— ॐ रूं मूं यूं औं ॐ ।

१२. द्वादशमुखी रुद्राक्ष-

यह साक्षात् भगवान् सूर्य का स्वरूप होता है। इसके धारण करने वाला गोहत्या, नरहत्या, रत्नों की चोरी जैसे महापातकों से मुक्त होता है। इससे दारिद्र्य का नाश, ग्रह—पीड़ा की शान्ति होती है। चोर—अग्नि—व्याधिभय का निवारण होता है। दैहिक—दैविक—आधिभौतिक—सांसर्गिक सभी प्रकार के उपद्रव शान्त होकर धर्म—अर्थ—काम—मोक्ष की प्राप्ति होती है।

धारण मंत्र— ॐ ह्रीं क्षौं घृणिः श्रीं ॐ ।

१३. त्रयोदशमुखी रुद्राक्ष-

यह देवराज इन्द्र का स्वरूप होता है। इसको धारण करने वाला सभी पातकों उपपातकों से मुक्त होता है। उसे सभी धातु—रसायन—रत्न आदि अतुल ऐश्वर्यों की प्राप्ति होती है।

धारण मंत्र— ॐ ईं यां आपः औं ॐ ।

१४. चतुर्दशमुखी रुद्राक्ष-

यह साक्षात् हनुमानजी का स्वरूप होता है। जो कोई इसको मस्तक पर धारण करता है उसे परम पद की प्राप्ति होती है।

धारण मंत्र— ॐ औं हस्फ्रें खस्फ्रैं हस्त्रौं हसल्फैंः ॐ।

॥ अस्तु ॥

परिशिष्ट-८

॥ ॐ नमः शिवाय ॥

श्री अष्टोत्तरशत बिल्वपत्रार्पण विधानम्

ॐ साम्ब सदाशिवाय नमः

शिवतत्वं न जानामि कीदृशोऽसि महेश्वरः ।

यादृशोऽसि महादेव तादृशाय नमो नमः ॥
नमः सर्वहितार्थाय जगदाधार हेतवे ।
साष्टाङ्गोयं प्रणामोऽहं प्रयत्नेन मयाकृतः ॥

शिवार्चन की यथासाध्य विधि से शिवजी का पूजन करके सुन्दर कोमल अछिद्र बिल्वपत्र ठीक करें । यदि सम्भव हो तो उन पर अष्टगंध या लाल चन्दन से "ॐ नमः शिवाय" अथवा "श्रीराम" का लेखन कर लें । स्ववित्तानुसार सोने या चाँदी का बिल्वपत्र चढ़ाना अति उत्तम होता है । इसके करने से समस्त दैहिक, दैविक, भौतिक तापों का शमन, ग्रहोपग्रहजन्य पीड़ा शान्त होती है तथा धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, आयु, आरोग्य, ऐश्वर्य आदि की प्राप्ति के साथ–साथ मनोकामनाएँ पूरी होती हैं । इस अनुष्ठान को आगे लिखी विधि से करें ।

॥ संकल्पः ॥

ॐ विष्णुः ३ अद्येत्यादि देशकालौ संकीर्त्य गोत्रः ....शर्माऽहं मम जन्मराशेः नामराशेः वर्तमान नवग्रहजन्य पीड़ा परिहारार्थं दैहिक दैविक भौतिक त्रिविध तापोपशमनार्थं नानाविध्यागतभयनिरसनपूर्वकं उत्तमायुरारोग्य ऐश्वर्याभिवृद्धयर्थं पुरुषार्थचतुष्टयसिद्धयर्थं स्थिर धनलक्ष्मी पुत्र पौत्र प्रपौत्र सुखावाप्तये अस्थिर लक्ष्मी चिरकाल पर्यंतं संरक्षणार्थं पूर्वजन्म पुण्योदय फलस्वरूपेण प्राप्ते पुण्यावसरे जन्म जन्मान्तर कृत समस्त पातकोपपातकक्षयार्थं साम्बसदाशिव प्रीत्यर्थं अष्टोत्तरशत स्तोत्र मंत्रैः बिल्वपत्रार्चनमहं करिष्ये ।

॥ विनियोगः ॥

ॐ अस्य श्री बिल्वपत्रार्पण स्तोत्र मन्त्रस्य ऋषभ शिव योगीश्वर ऋषिः साम्बसदाशिवोदेवता अनुष्टुप्छन्दः ॐ बीजं नमः शक्तिः शिवायेति कीलकम् अष्टोत्तरशत स्तोत्र मंत्रैः बिल्वपत्र समर्पणे विनियोगः ।

॥ अथ न्यास विधानम् ॥

ॐ सदाशिवाय — अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥

ॐ नं गंगाधराय — तर्जनीभ्यां नमः ॥

ॐ मं मृत्युञ्जयाय — मध्यमाभ्यां नमः ॥

ॐ शिं शूलपाणये — अनामिकाभ्यां नमः ॥

ॐ वां पिनाकिने — कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥

ॐ यं उमापतये — करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥

॥ अथ षडङ्गन्यासः ॥

ॐ सदाशिवाय — हृदयाय नमः ॥

ॐ नं गंगाधराय — शिरसे स्वाहा ॥

ॐ मं मृत्युञ्जयाय — शिखायै वषट् ॥

ॐ शिं शूलपाणये — कवचाय हुं ॥

ॐ वां पिनाकिने — नेत्रत्रयाय वौषट् ॥

ॐ यं उमापतये — अस्त्राय फट् ॥

॥ अथध्यानम् ॥

शान्तं पद्मासनस्थं शशिधरमुकुटं दिव्य कर्पूर गौरं।
शूलं वज्रं च खड्गं परशुमभयदं दक्षभागे वहन्तं॥
नागं पाशं च घण्टां प्रलयहुतवहं सांकुशं वामभागे।
नानालंकारयुक्तं स्फटिकमणिनिभं पार्वतीशं नमामि॥

बिल्वपत्रसमर्पणश्लोका:

त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रिधायुधम्॥
त्रिजन्मपापसंहारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम्॥१॥
त्रिशाखैः बिल्वपत्रैश्च अच्छिद्रैः कोमलैः शुभम्॥
तव पूजां करिष्यामि बिल्वपत्रं शिवार्पणम्॥२॥

सर्वत्रैलोक्यकर्तारं सर्वत्रैलोक्यपालकम् ॥
सर्वत्रैलोक्य हर्तारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥३॥

नागाधिराज वलयं नागहारेण भूषितम् ॥
नागकुण्डलसंयुक्तं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥४॥

अक्षमालाधरं रुद्रं पार्वती प्रिय बल्लभम् ॥
चन्द्रशेखरमीशानं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥५॥

त्रिलोचनं दशभुजं दुर्गादेहार्ध धारिणाम् ॥
विभूत्याभ्यर्चितो देवं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥६॥

त्रिशूलधारिणं देवं नानाभरण सुन्दरम् ॥
चन्द्रशेखरमीशानं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥७॥

गंगाधरं अम्बिकानाथं फणिकुण्डल मण्डितम् ॥
कालकालं गिरीशं च बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥८॥

शुद्धस्फटिकसंकाशं शितिकण्ठं कृपानिधिम् ॥
सर्वेश्वरं सदाशान्तं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥९॥

सच्चिदानन्दरूपं च परानन्दमयं शिवम् ॥
वागीश्वरं चिदाकाशं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥१०॥

शिपिविष्टं सहस्त्राक्षं दुंदुभ्यश्च निषंगिणम् ॥
हिरण्यबाहुं सेवान्यं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥११॥

अरुणं वामनंतारं वास्तव्यं चैववास्तवम् ॥
ज्येष्ठं कनिष्ठं घैशन्तं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥१२॥

हरिकेशं सनंदीशं उच्चैघोषं सनातनम् ॥
अघोररूपकं कर्मं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥१३॥

पूर्वजाऽपरजंयाम्यं सूक्ष्मतस्कर नायकम् ॥
नीलकण्ठं जघन्यं च बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥१४॥

सुराश्रयं विषहरं कर्मिणं च बरूथिनम् ॥
महासेनं महावीरं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥१५॥
कुमारं कुशलं कूप्यं वदान्यं च महारथम् ॥
तौर्यातौयं च देव्यं च बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥१६॥
दशकर्णं ललाटाक्षं पञ्चवक्त्रं सदाशिवम् ॥
अशेषपापसंहारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥१७॥
नीलकण्ठं जगद्वंद्यं दीनानाथ महेश्वरम् ॥
महापापहरं शंभुं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥१८॥
चूड़ामणि कृत विधुं बलयीकृत वासुकिम् ॥
कैलाशनिलयं भीमं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥१९॥
कर्पूर कुन्दधवलं नरकार्णव तारकम् ॥
करुणामृत सिन्धुं च बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥२०॥
महादेवं महात्मानं भुजंगाधिपकंकणम् ॥
महापापहरंदेवं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥२१॥
भूतेशं खण्डपरशुं वामदेवं पिनाकिनम् ॥
वामेशक्तिधरं श्रेष्ठं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥२२॥
कालेक्षणं विरूपाक्षं श्रीकण्ठं भक्तवत्सलम् ॥
नीललोहित खट्वाङ्गं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥२३॥
कैलाशवासिनं भीमं कठोरं त्रिपुरान्तकम् ॥
वृषाङ्कं बृषभारूढं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥२४॥
सामप्रियं सर्वमयं भस्मोद्धूलितविग्रहम् ॥
मृत्युञ्जयं लोकनाथं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥२५॥
दारिद्र्यदुखहरणं रविचन्द्रानलेक्षणम् ॥
मृगपाणिं चन्द्रमौलिं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥२६॥

सर्वलोकमयाकारं सर्वलोकैक साक्षिणम् ॥
निर्मलं निर्गुणाकारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥२७॥
सर्व तत्वात्मकं साम्बं सर्वतत्वविदूरकम् ॥
सर्व तत्वस्वरूपं च बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥२८॥
सर्वलोकगुरुं स्थाणुं सर्वलोक वरप्रदम् ॥
सर्वलोकैकनेत्रं च बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥२९॥
मन्मथोद्धरणं शैवं भवभर्ग परात्परम् ॥
कमला प्रियपूज्यं च बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥३०॥
तेजोमयं महाभीमं उमेशं भस्मलेपनम् ॥
भवरोगविनाशं च बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥३१॥
स्वर्गापवर्ग फलदं रघुनाथवरप्रदम् ॥
नागराज सुताकान्तं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥३२॥
मञ्जीरपाद युगलं शुभलक्षण लक्षितम् ॥
फणिराज विराजं च बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥३३॥
निरामयं निराधारं नि:सर्गं निष्प्रपञ्चकम् ॥
तेजोरूपं महारौद्रं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥३४॥
सर्वलोकैक पितरं सर्वलोकैक मातरम् ॥
सर्वलोकैक नाथं च बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥३५॥
चित्राम्बरं निराभासं वृषभेश्वरवाहनम् ॥
नीलग्रीवं चतुर्वक्त्रं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥३६॥
रत्नकंचुक रत्नेशं रत्नकुण्डल मण्डितम् ॥
नवरत्न किरीटं च बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥३७॥
दिव्य रत्नाङ्गुली स्वर्णं कण्ठाभरणभूषितम् ॥
नानारत्न मणिमयं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥३८॥

रत्नांगुलीयविलसत् करशाखा नखप्रभम् ॥
भक्तमानसगेहं च बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥३९॥

वामाङ्गभागे विलसद् अम्बिकावीक्षणं प्रियम् ॥
पुण्डरीकमिवाक्षं च बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥४०॥

सम्पूर्ण कामदं सौख्यं भक्तेष्टं फलकारकम् ॥
सौभाग्यदं हितकारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥४१॥

नानाशास्त्रगुणोपेतं स्फुरन्मङ्गल विग्रहम् ॥
विद्या त्रिभेदरहितं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥४२॥

अप्रमेयं गुणाधारं वेदकृद्रूप विग्रहम् ॥
धर्माधर्म प्रवृत्तं च बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥४३॥

गौरी विलास सदनं जीवजीव पितामहम् ॥
कल्पान्त भैरवं शुभ्रं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥४४॥

सुखदं सुखनाशं च दुःखदं दुःखनाशनम् ॥
दुःखावतारं भद्रं च बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥४५॥

सुखरूपं रूपनाशं सर्वधर्म फलप्रदम् ॥
अतीन्द्रियं महामायं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥४६॥

सर्वपक्षि मृगाकारं सर्वपक्षि मृगाधिपम् ॥
सर्वपक्षि मृगाधारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥४७॥

जीवाध्यक्षं जीववन्द्यं जीव जीवन रक्षकम् ॥
जीवकृज्जीवहरणं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥४८॥

विश्वात्मानं विश्ववन्द्यं जज्ञात्मावज्रहस्तकम् ॥
बज्रेशं बज्रभूषं च बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥४९॥

गणाधिपं गणाध्यक्षं प्रलयानल नाशनम् ॥
जितेन्द्रियं वीरभद्रं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥५०॥

त्रियम्बकं मतं शूरं अरिषड्वर्ग नाशनम् ॥
दिगम्बरं क्षोभनाशं च बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥५१॥
कुन्देन्दुशङ्खधवलं भगनेत्रमिदुज्वलम् ॥
कालाग्निरुद्र सदृशं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥५२॥
कम्बुग्रीवं कम्बुकण्ठं धैर्यदं धैर्यवर्धकम् ॥
शार्दूलं चर्मवसनं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥५३॥
जगदुत्पत्ति हेतुं च जगत्प्रलय कारकम् ॥
पूर्णानन्दस्वरूपं च बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥५४॥
स्वर्णकेशं महत्तेजं पुण्यश्रवण कीर्तनम् ॥
ब्रह्माण्ड नायकं तारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥५५॥
मन्दारमूलनिलयं मन्दारकुसुमप्रियम् ॥
वृन्दारकप्रियतरं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥५६॥
महेन्द्रियं महाबाहुं विश्वास परिपूरकम् ॥
सुलभासुलभं लभ्यं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥५७॥
बीजाधारं बीजरूपं निर्बीजंबीजवृद्धिदम् ॥
परेशं बीजनाशं च बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥५८॥
युगाकारं युगाधीशं युगकृत्युगनाशनम् ॥
परेशं बीजनाशं च बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥५९॥
धूर्जटिंपिङ्गलजटा जय मण्डल मण्डितम् ॥
कर्पूरगौरं गिरीशं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥६०॥
सुरावासं जनावासं योगीशं योगपुङ्गवम् ॥
योगदं योगिनांसिंहं च बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥६१॥
उत्तमानुत्तमं तत्वं अन्धकासुरसूदनम् ॥
भक्तकल्पद्रुमस्तोमं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥६२॥

विचित्रमाल्यवसनं दिव्यचन्दन चर्चितम् ॥
विष्णुब्रह्मादिवंद्यं च बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥६३॥

कुमारं पितरं देवं स्थितचन्द्रकलानिधिम् ॥
ब्रह्मसत्यं जगन्भिन्नं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥६४॥

लावण्यमधुराकारं करुणारसवारिधिम् ॥
भ्रुवोर्मध्ये सहस्रार्चि बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥६५॥

जटाधरं पाषकाक्षं ऋक्षेशं भूमिनायकम् ॥
कामदं सर्वदागम्यं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥६६॥

शिवं शान्तं उमानाथं महाध्यान परायणम् ॥
ज्ञानप्रदं कृत्तिवासं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥६७॥

वासुक्युरुग्रहारं च लोकानुग्रहकारणम् ॥
कोटिकन्यां महादानं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥६८॥

शशाङ्कधारिणं गर्भं सर्वलोकैक शङ्करम् ॥
शुद्धं च शाश्वतं नित्यं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥६९॥

शरणागतदीनार्त परित्राण परायणम् ॥
गम्भीरं वषटाकारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥७०॥

भोक्तारं भोजनं भोज्यं जेतारं जितमानसम् ॥
करणं कारणं विष्णुं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥७१॥

क्षेत्रज्ञं क्षेत्रपालं च परार्थैक प्रयोजनम् ॥
व्योमकेशं भीमवेशं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥७२॥

भवघ्नं करुणोपेतं क्षोदिष्टं यमनाशकम् ॥
हिरण्यगर्भं हेमाङ्गं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥७३॥

दक्षं चामुण्डजनकं मोक्षदं मोक्षनायकम् ॥
हिरण्यदं हेमरूपं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥७४॥

महाश्मशाननिलयं प्रच्छन्नं स्फटिकप्रभम् ॥
वेदाश्वं वेदरूपं च बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥७५॥
स्थिरं स्वधर्मनाथं ब्रह्मण्यं चाश्रय विभुम् ॥
जगन्निवासं प्रमथं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥७६॥
रुद्राक्षमालाभरणं रुद्राक्षं प्रियदर्शनम् ॥
रुद्राक्षभक्त संस्तोभं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥७७॥
फणीन्द्रविलसद्कण्ठं भुजंगाभरण प्रियम् ॥
दक्षाध्वर विनाशं च बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥७८॥
नागेन्द्र विलसद्कर्णं महेन्द्रवलावृतम् ॥
मुनिवंद्यं मुनिश्रेष्ठं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥७९॥
मृगेन्द्रचर्मवसनं मुनीनामेक जीवनम् ॥
सर्वदेवादि पूज्यं च बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥८०॥
निधनेशं धनाधीशं अपमृत्यु विनाशनम् ॥
लिङ्गमूर्तिं अलिङ्गात्मं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥८१॥
भक्तकल्याणदं व्यस्तं वेदवेदान्त संस्तुतम् ॥
कल्पकृत् कल्पनाशं च बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥८२॥
घोरपातक दावाग्निं जन्मकर्म विवर्जितम् ॥
कपालमालाभरणं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥८३॥
मातङ्गचर्मवसनं विरदं पवित्रधारकम् ॥
विष्णुक्रान्तं अनन्तं च बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥८४॥
यज्ञकर्म फलाध्यक्षं यज्ञविघ्नविनाशकम् ॥
यज्ञेशं यज्ञभोक्तारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥८५॥
कालाधीशं त्रिकालज्ञं दुष्टनिग्रहकारकम् ॥
योगीमानसपूज्यं च बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥८६॥

महोन्नतं महाकायं महोदर महाभुजम् ॥
महावक्रं महावृद्धं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥८७॥
सुनेत्रं सुललाटं च सर्वभीमपराक्रमम् ॥
महेश्वरं शिवतरं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥८८॥
समस्त जगदाधारं समस्त गुणसागरम् ॥
सत्यं सत्यगुणोपेतं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥८९॥
माघकृष्णचतुर्दश्यां पूजार्थं च जगद्गुरुम् ॥
दुर्लभं सर्वदेवानां बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥९०॥
तत्रापिदुर्लभंमन्ये नभोमासेन्दुवासरे ॥
प्रदोषकाले पूजां च बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥९१॥
शालग्रामेषु विप्राणां तटाकेशतकूपयोः ॥
कोटिकन्या महादानं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥९२॥
दर्शनं बिल्वबृक्षस्य स्पर्शनं पापनाशनम् ॥
अघोरपापसंहारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥९३॥
तुलसीबिल्वनिर्गुंडी जम्बीरमलकंतथा ॥
पञ्चबिल्वमितिख्यातं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥९४॥
अखण्डैः बिल्वपत्रैश्च पूजयेच्छिवशंकरम् ॥
मुच्यते सर्वपापेभ्यो बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥९५॥
सालंकृताशतावृत्या कन्याकोटि सहस्त्रकम् ॥
साम्राज्यं पृथिवीदानं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥९६॥
दशकोटि तुरंगानां अश्वमेध सहस्त्रकम् ॥
सवत्स धेनुकोटीनां बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥९७॥
चतुर्वेद सहस्त्राणि भारतादि पुराणकम् ॥
साम्राज्यं पृथ्वीदानं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥९८॥

सर्वरत्नमयंमेरुं कांचनं दिब्यवस्त्रकम् ॥
तुलाभागं शतावृत्तं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥९९॥
अष्टोत्तरशतं विल्वं योऽर्चयेत् लिङ्गमस्तके ॥
अथर्वोक्तं वदेद्यस्तु बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥१००॥
काशीक्षेत्र निवासीच कालभैरव दर्शनम् ॥
अघोरपापसंहारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥१०१॥
अष्टोत्तरशतैः श्लोकैः स्तोत्राद्यैः पूजयेतथा ॥
त्रिसन्ध्यं मोक्षमवाप्नोति बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥१०२॥
दन्ति कोटि सहस्त्राणां भूहिरण्यं सहस्त्रकम् ॥
सर्वं क्रतुमयं पुण्यं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥१०३॥
पुत्र पौत्रादि भोगं च शुक्त्वाचात्र यथेप्सितम् ॥
अन्तं च शिवसायुज्यं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥१०४॥
विप्रकोटि सहस्त्रानां वित्तदानाच्चयत्फलम् ॥
तत्फले प्राप्नुयात्सत्यं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥१०५॥
त्वन्नामकीर्तनं तदवत् तवपाम्बुपसेवनम् ॥
जीवनन्मुक्तो भवेनित्यं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥१०६॥
अनेकदानफलदं अनन्तसुकृतादिकम् ॥
तीर्थयात्रादिकं पुण्यं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥१०७॥
त्वंमाम्पालय सर्वत्र पदध्यानं कृतं तव ॥
भवनं शांकरं नित्यं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥१०८॥

फलश्रुतिः

एककाले पठेन्नित्यं सर्वशत्रु विदारणम् ॥
द्विकाले च पठेन्नित्यं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥१०९॥
एकैक बिल्वपत्रेण कोटि यज्ञफलं लभेत् ॥

महादेवस्य पूजार्थं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥११०॥
अमृतोद्भववृक्षस्य महादेवप्रियस्य च ॥
कण्ठकाघाताद्कण्टकेभ्यो बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥१११॥
त्रिकालेयः पठेन्नित्यं मनोवांछा फलप्रदम् ॥
अचिरात् कार्य सिद्धिं च लभतेनात्र संशयः ॥११२॥
एककालं द्विकालं च त्रिकाले यः पठेन्नरः ॥
लक्ष्मी प्राप्तिः शिवावासं शिवेन सहमोदते ॥११३॥
कोटिजन्मकृतं पापं स च तेन विनश्यति ॥
सप्तजन्मकृतं पापं श्रवणेन विनश्यति ॥११४॥
जन्मान्तरकृतं पापं पठनेन विनश्यति ॥
दिवारात्रिकृतं पापं दर्शनेन विनश्यति ॥११५॥
क्षणे क्षणे कृतं पापं स्मरणेन विनश्यति ॥
पुस्तकं धारयेद् देही आरोग्यं दुःख नाशनम् ॥११६॥

॥ शिवार्पणमस्तु ॥

इसके बाद हाथ में जलाक्षतादि लेकर बोलें—

अनेन अष्टोतरशत बिल्वपत्रार्पण कर्मणा साम्बसदा-शिवदेवता प्रीयताम् न मम ।

भूयसी दक्षिणादानं—

ॐ विष्णुः ३ अद्येत्यादि देशकालौ सङ्कीर्त्य.......गोत्र........शर्माऽहं अष्टोतरशत बिल्वपत्रार्चने साङ्गोपाङ्गफलावाप्तये मनसोपकल्पित द्रव्यदक्षिणां नानानाम् गोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो पृथक् पृथक् दातुं अहं उत्सृजे ।

॥ ॐ साम्बसदाशिवाय नमः ॥